बलिया में क्रांति और दमन

[अगस्त १९४२ में बलिया की अल्पकालीन स्वाधीनता
तथा नौकरशाही की दमनलीला का इतिहास]

लेखक
देवनाथ उपाध्याय
एम० ए०, बी० एस-सी०, साहित्य-रत्न

किताब महल
इलाहाबाद

प्रकाशक
डी० एन० उपाध्याय

प्रथम संस्करण १९४६
मूल्य, सजिल्द ३॥)

मुद्रक
शारदा प्रसाद जायसवाल
देश सेवा प्रेस,
५४ हेवेट रोड, इलाहाबाद
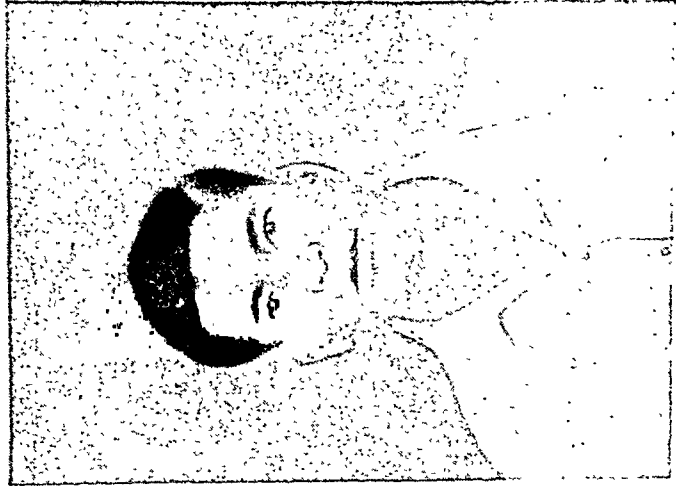
अमर शहीद श्री चन्द्रदी सिंह [आरीपुर सरयाँ] पृ० ६५
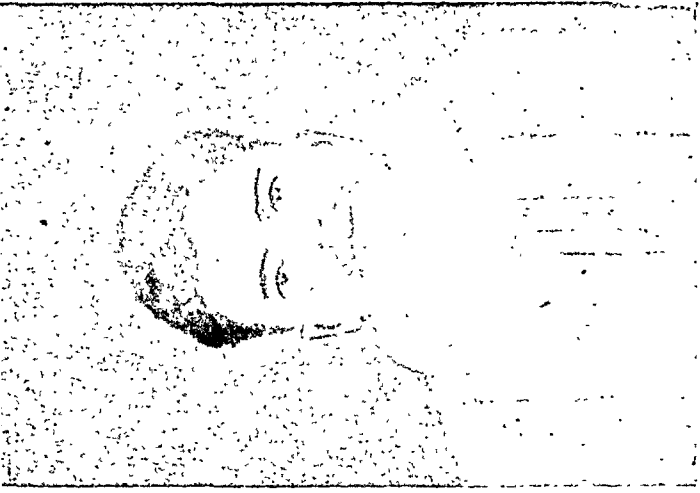
अमर शहीद श्री चन्डी प्रसाद [सुखपुरा] पृ० १७०

श्रद्धाञ्जलि

आज़ादी के लिये मर मिटने वाले
बलिया के सैकड़ों अमर
शहीदों की पुण्य स्मृति
में
सादर समर्पित

—लेखक

विषय-सूची

जनसमूह, भीड़, उपद्रवकारी और आन्दोलनकारी आदि शब्द प्रायः एक ही अर्थ में लिये गये हैं।

यदि किसी सज्जन के देखने में कोई उल्लेखनीय विवरण छूट गया हो, तो वे कृपा कर मेरे पास लिखें। अगले संस्करण में आवश्यक सुधार करने का प्रयास किया जायेगा।

उर्दू और अंगरेजी पाठकों के लाभार्थ उर्दू और अंगरेज संस्करण यथासंभव शीघ्र प्रकाशित करने का आयोजन किया गया है।

मलेजी, पो० नवानगर
जि० बलिया।
९ अगस्त, १९४६ ई०

देवनाथ उपाध्याय

अपनी बात

'बलिया में क्रान्ति और दमन' बलिया के बहादुर किसानों और वीर युवकों की अमर कीर्ति तथा सरकार की नादिरशाही की गाथा है। विवरण का विशेषांश मुझ पर आप बीती और मेरी आंख देखी घटनाओं पर अवलंबित है। सही और विश्व-नीय विवरण प्राप्त करने के लिये मुझे बलिया ज़िले के हज़ारों गांवों, यहां की कचहरियों तथा अन्य सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं की महीनों तक खाक छाननी पड़ी है।

प्रस्तुत पुस्तक को मैंने सन् १९४४ में, जब कि मैं बलिया जेल में था, लिखना शुरू कर दिया था। भांति भांति की कठिनाइयों के उपस्थित होने के कारण इसके प्रकाशन में देर हो गई, इसका हमें दुःख है।

बलिया में क्रान्ति का इतना व्यापक प्रभाव पड़ा कि यदि किसी को धीरज हो तो वह एक एक गांव का अलग अलग इति-हास लिख सकता है। जितनी सामग्री मुझे मिल सकी, उसे काफी काट छांट के बाद, मैं पाठकों के सामने रखता हूँ। प्रस्तुत पुस्तक में जितनी भी घटनाओं का विवरण है, मैं प्रायः उन सबका प्रणाम देता गया हूँ।

'क्रान्तिकारी' और उसके पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग में मैंने विशेष संयम से काम नहीं लिया है। सरकारी कागजों में उनके लिये बागी, बलवाई और मजमा कांग्रेसी इत्यादि शब्द आये हैं। प्रस्तुत पुस्तक में क्रान्तिकारी, बागी, बलवाई, मजमा, कांग्रेसवादी,

संगठन, चीट बड़ा गांव स्टेशन, नरही थाने पर आक्रमण, नरही का डाकखाना जला, वर्दी जलाई गई, कोरंटा डीह का पोस्ट-आफिस, उजियार का ताड़ी खाना, कोटवा नरायन पुर का डाकखाना, स्टीमर घाट पर धावा, यातायात के साधन विनष्ट, बलिया का तहसीलदार पकड़ा गया, चिल्कहर स्टेशन, ओंदी का पोस्ट आफिस, चिल्हकर बीज गोदाम, रसड़ा स्टेशन की फूंक, धोखा और गोली कांड, रतनपुरा स्टेशन, रतनपुरा का पोस्ट आफिस, बीज गोदाम, हलधर पुर थाना, पोस्ट आफिस में आग लगी, बच्चों पर घोड़ा दौड़ाया, खेजुरी मंडल में गिरफ्तारियां, सिकन्दर पुर के थाने पर आक्रमण, कुतुब गंज घाट. थाने पर दूसरा आक्रमण, डाक बँगले पर आक्रमण. गड़वार थाना, हल्दी पोस्ट आफिस, स्टीमर स्टेशन जला. भड़सर का पोस्ट आफिस, बसरिका का पोस्ट आफिस, नौरंगा घाट, सहतवार में बैठक, सहतवार थाना, डाकखाना रेलवे स्टेशन, टाउन एरिया दफ्तर, थाने पर दूसरा धावा, रेवती की पुलिस चौकी, बीजगोदाम, सुरेमनपुर स्टेशन, बकुलहा स्टेशन, बांसडीह में संगठन, बांसडीह थाने पर आक्रमण, तहसील और खजाना, बीजगोदाम और पोस्ट आफिस, कांग्रेस का स्थानीय शासन, बांसडीह रोड रेलवे स्टेशन, बैरिया कांड, थानेदार का समर्पण, थाने पर तैयारी, इधर खुली छाती उधर बंदूक, थाना चूर चूर कर दिया गया, हताहतों की संख्या, बैरिया का बीजगोदाम]

अध्याय २–क्रान्ति का उग्र रूप

[बंदूकें छीनी गईं—फेफना में, भरखरा में, छाता में, भरसौता में सिहाकुंड में, बलिया शहर—अंतिम मोर्चा, जहाजघाट, सिटी पोस्ट आफिस, मालगोदाम, कांग्रेस दफ्तर, पहली बार गोली,

---

श्री वच्चा तिवारी [चौबे छपरा] का जलाया हुआ मकान
बीच में बैठे हुए चंगा वावा जिनके वाल
उखाड़ लिए गये हैं
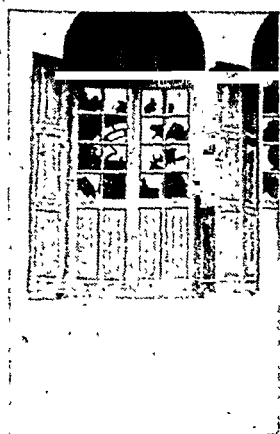
श्री शिवप्रसाद जी के वैठक के
शीशे तोड़े गये हैं
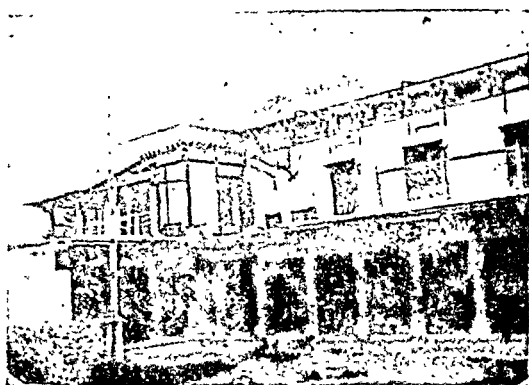
सुखपुरा के महंथ का जलाया हुआ
मकान

क्रांति की पृष्ठ भूमि

१९४२ का पूर्वार्द्ध

१९४२ के प्रारंभ में द्वितीय महासमर बड़े ज़ोरों पर चल रहा था। रूस में जर्मनी की सेनायें बढ़ी चली जाती थीं। अफ़रीकन मोर्चों पर मित्र सेनाओं को प्रति दिन नीचा देखना पड़ता था। प्रशान्त महासागर में जापान का बोलबाला था। वर्ष के प्रारम्भ से ही भारत पर जापानी आक्रमण की आशङ्का होने लगी थी। वर्ष के प्रथम दिवस के अवसर पर भारत के प्रधान सेनापति ने संदेश देते हुये कहा—भारत में सन् १९४१ ने महायुद्ध को हमारे निकट ला दिया है जिससे हमारे ऊपर नयें ख़तरे और नई जिम्दारियां आ गईं हैं*।

युद्ध की विभीपिका से भारत त्रस्त हो उठा था। जापानी आक्रमण से अपने धन-जन की रक्षा करने की लालसा सब के दिल में थी किन्तु ब्रिटिश सरकार भारत को आत्मरक्षा के लिये न तो जिम्मेदारी देने को तैयार थी और न भारतीयों के पास निजी शस्त्रास्त्र थे जिनसे सैन्य बल का मुकाबला किया जाता। ब्रिटिश सरकार दृढ़ थी। वह भारत की रक्षा तथा शासन सम्बन्धी मामलों में कोई व्यापक परिवर्तन करने को तैयार न थी।

---

* Here in India, 1941 has brought the war nearer to us and has brought fresh dangers and responsibilities.

कांग्रेस युद्ध से पूर्ण रूपेण असहयोग करने का प्रस्ताव पास कर चुकी थी। देश की बागडोर महात्मा गांधी को दी जा चुकी थी। महात्मा गांधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन को उठा लिया था और सत्याग्रह आन्दोलन में जेल जाने वाले बंदियों में से कुछ को छोड़ कर सब लोग वापस आ चुके थे। कांग्रेस बिना शर्त भारत की स्वाधीनता की मांग पर दृढ़ थी और भारतीय विधान के निर्माण के लिये बालिग मताधिकार के आधार पर निर्वाचित विधान सभा की स्थापना चाहती थी।

परिस्थिति कुछ असाधारण सी थी। वक्तिगत सत्याग्रह अथवा अविनय अवज्ञा आन्दोलन के लिये समय उपयुक्त नहीं था। महात्मा गांधी ने ७ जनवरी को बारडोली से एक वक्तव्य निकाला जिसमें कहा गया कि :—जहां तक मैं देखता हूं जिस प्रकार का सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया गया था वैसा संभवतः अब कांग्रेस की ओर से जब तक महायुद्ध समाप्त न हो. न चलाया जायेगा। कांग्रेस की ओर से नहीं किन्तु युद्ध का विरोध करने वाली जनता की ओर से शुद्ध अहिंसा के आधार पर आदर्श रूप में यह आन्दोलन चला करेगा। यह आन्दोलन युद्ध विरोधियों के इस अधिकार की पुष्टि करेगा कि उन्हें हर प्रकार के युद्ध के विरुद्ध प्रचार करने का अधिकार है। महात्मा गांधी का यह कथन केवल बृटिश साम्राज्य के प्रति ही नहीं लागू था बल्कि धुरी राष्ट्रों के प्रति भी लागू था। १८ फरवरी, १९४२ के "हरिजन" में उन्होंने एक लेख में लिखा—"अगर नाज़ी हिन्दुस्तान में आये तो कांग्रेस उनसे भी उसी तरह लड़ेगी जिस तरह आज अंग्रेजों से लड़ रही है।"

स्थिति उत्तरोत्तर खराब होती गई। जापान ने मलाया पर धावा बोल दिया। मित्र सेना की ओर से कभी भी पर्याप्त प्रतिरोध

न हुआ। शत्रु आगे बढ़ते आये। भारतीय राजनीतिक परिस्थिति में परिवर्तन की आशा नहीं थी। क्रिप्स योजना की चर्चा चल रही थी किन्तु यह बात सब के दिलों में बैठ गई थी कि इस योजना से कुछ होने जाने का नहीं। राष्ट्रपति मौलाना अज़ाद ने ३ फरवरी को प्रयाग में सार्वजनिक भाषण देते हुये कहा—सरकार की ओर देखना और समझौते की आशा करना केवल समय नष्ट करना है। जापान ने जब से मलाया पर हमला किया तब से बड़ी नाजुक परिस्थिति उत्पन्न हो गई है और भारत के लिये खतरा बढ़ गया है।

आखिर १३ फरवरी, १९४२ को सिंगापुर का पतन हो गया। फिर भी सम्राट की सरकार की नीति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। सख्ती और बढ़ गई। फौज में भर्ती और युद्ध कार्य के लिये चन्दे का आन्दोलन जोरों पर चला। भारत की रक्षा के नाम पर भारत रक्षा कानून की धाराओं में आवश्यकतानुसार समय समय पर नई धारायें जुड़ती गईं। आर्डिनेन्सों का जमाना था। युद्ध के विषय में टीका टिप्पणी करना भारी अपराध था।

क्रिप्स प्रस्ताव

बड़ी उत्कंठा से लोग क्रिप्स योजना की प्रतीक्षा कर रहे थे। २८ मार्च, १९४२ को सरकारी तौर पर क्रिप्स प्रस्तावों की घोषणा हुई। उसमें कहा गया कि (१) युद्ध के समाप्त होने के बाद फौरन ही भारत में एक निर्वाचित संस्था स्थापित करने के लिये कार्रवाई की जायगी। यह संस्था भारत के लिये विधान बनायेगी, (२) विधान निर्माण करने वाली सभा में देशी राज्यों के भाग लेने के लिये व्यवस्था की जायगी; (३) प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभायें निर्वाचक के रूप में सानुपातिक प्रतिनिधित्व के अनुसार विधान निर्मात्री संस्था के चुनाव का कार्य आरंभ

करेंगी। चुने जाने वाले प्रतिनिधियों की संख्या सदस्यों की संख्या का दसवां भाग होगी।

क्रिप्स ने अपने प्रस्तावों की व्याख्या करते हुये कहा:—
"भारत के सामने इन दिनों जो नाजुक समय उपस्थित है, और तब तक के लिये जब तक नया विधान बन न जाय. सम्राट की सरकार को भारत की रक्षा की जिम्मेदारी और तत्संबंधी कार्यों का नियंत्रण विश्व युद्ध प्रयत्नों के एक हिस्से के रूप में अपने हाथमें रखना होगा। मगर भारत के सैनिक, नौतिक और भौतिक साधनों के पूर्ण रूप से संघटन के कार्य की जिम्मेदारी भारतीय जनता के सहयोग के साथ भारत सरकार पर रहेगी।

"भारतीय नेता ऐसे कार्य में अपनी क्रियात्मक और रचनात्मक सहायता दे सकेंगे, जो भारत की स्वतंत्रता के भविष्य के लिये महत्व-पूर्ण और आवश्यक है।

"हमारा उद्देश्य यह है कि भारतीय जनता को पूर्ण स्वशासन का अधिकार दिया जाय और उसे यह पूरी स्वतंत्रता रहे कि वह अपना विधान जिस प्रकार चाहे बनावे और उसे संगठित करे। यह निश्चय करने का काम भारतीय जनता का है, किसी बाहरी अधिकारी का नहीं कि भारत भविष्य मेंअपना शासन किस प्रकार करेगा।

"भारत का शासन विधान सब लोग एक साथ मिल कर बनाने के लिये आइये और यदि आप उस विधान बनाने वाली संस्था में आकर सब बातों पर विचार कर तथा आदान प्रदान की नीति पर चल कर यह देखें कि मतभेदों को दूर नहीं कर सकते हैं और यदि कुछ प्रान्त तब भी विधान से संतुष्ट न हों तो वे उसमें से निकल सकते हैं और बाहर रह सकते हैं और उन्हें आत्म शासन का उतना ही अधिकार तथा स्वतंत्रता रहेगी, जो संघ को

होगी । यह हम अंगरेजों का काम नहीं है कि आप भारतीय जनता को कोई अपनी आज्ञा दें । उस समस्या का हल और निश्चय स्वयं आप करेंगे । अब हम वह नेतृत्व दे रहे हैं जिसे देने के लिये हमसे कहा जाता था और अब यह भारतीयों के ही हाथ में है कि वे उस नेतृत्व को स्वीकार करें और अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करें । यदि वे इस अवसर को खो बैठते हैं तो असफलता की जिम्मेदारी उन्हीं पर होगी । भूत काल में हम इस बात की प्रतीक्षा करते थे कि विभिन्न भारतीय संप्रदाय इस सर्व सम्मत निर्णय पर पहुँचेंगे कि भारत के स्वशासन का नया विधान किस प्रकार का बनाया जाय और चूंकि भारतीय नेताओं में कोई समझौता नहीं हुआ इस लिये ब्रिटिश सरकार पर कुछ लोगों ने यह दोष लगाया कि वह भारत को स्वतंत्रता देने में विलंब लगा रही है ।

"इस प्रस्ताव में एक आवश्यक बात बचा रखी गई है और वह है रक्षा की ज़िम्मेदारी । इस दीर्घ व्यापी युद्ध में रक्षा का काम किसी एक देश में केन्द्रित नहीं रह सकता और इसकी तैयारियां सरकार के समस्त विभागों द्वारा होनी चाहिये । मेरा आपसे कहना यह है कि पीछे की बातों को भुला दीजिये । मेरा हाथ, हम लोगों की मित्रता का हाथ स्वीकार कीजिये । विश्वास कीजिये और हमें यह अवसर दीजिये कि आप की स्वतंत्रता और स्वशासन स्थापित करने का कार्य कार्यान्वित करने में हम आप का साथ दें ।"

कांग्रेस ने प्रस्ताव ठुकरा दिया

कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने १ अप्रैल, १९४२ को क्रिप्स प्रस्तावों को ठुकरा दिया । वर्किंगकमेटी ने कहा कि रक्षा का कार्य इस समय भारतीयों से ले लेना उनकी जिम्मेदारी का मज़ाक करना है । इस समय यह आवश्यक है कि यह स्वीकार कर लिया जाय कि

भारतीय जनता स्वतंत्र है और अपनी रक्षा की जिम्मेदारी उस पर है।

रक्षा का प्रश्न अब ऐसा नहीं था जिसकी उपेक्षा की जाती। देखते देखते भारत की भूमि पर शत्रु के विमानों के आक्रमण होने लगे। अप्रैल, १९४२ में बंगाल की खाड़ी में जापानी नौसेना की कार्रवाई बढ़ी और ६ अप्रैल को कोकोनाडा और विजगापट्टम के बंदरगाहों पर बम गिरे। कलकत्ता और ढाका आदि नगरों में इतना आतंक फैला कि लोग अपनी संपत्ति छोड़ छोड़ कर भागने लगे। भारतीयों की इच्छा के विरुद्ध भारत युद्धकेन्द्र बना हुआ था और इसकी रक्षा का कोई उपाय सामने नहीं दिखाई देता था। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने उपर्युक्त घटनाओं का हवाला देते हुए ७ अप्रैल को अपने भाषण में कहा—"भारत के तटवर्ती नगरों पर जापानियों द्वारा बम गिराये जाने से भारतीयों के हृदय अवश्य आन्दोलित हो उठे होंगे। जापानियों का यह कथन बिलकुल झूठा और वाहियात है कि वे भारत को स्वतंत्र करने के लिये आ रहे हैं।"

'भारत छोड़ो' योजना

२६ अप्रैल १९४२ के "हरिजन" में महात्मा गांधी का एक लेख प्रकाशित हुआ जिसमें 'भारत छोड़ो' आन्दोलन की भावी योजना पर प्रकाश डाला गया था। भारत की रक्षा के लिए विदेशी सेनाओं की उपस्थिति पर दुःख प्रकट किया गया था। महात्मा जी ने यह विचार प्रकट किया था कि यदि अंग्रेज़ भारत को उसके नाम पर छोड़ दें, तो अहिंसक भारत को इससे कुछ हानि न होगी और संभवतः जापान उससे कुछ न बोलेगा।

लेख में यह भी कहा गया था कि "भारतवर्ष के लिये चाहे इसका कुछ भी फल हो, उसकी और ब्रिटेन क

भी वास्तविक सुरक्षा इसी में है कि अंग्रेज व्यवस्था पूर्वक और समय रहते भारत से चले जाँय।" फिर ३ मई, १९४२ के "हरिजन" में गांधी ने लिखा—"मेरा विश्वास है कि भारत में अंगरेज़ों की उपस्थिति जापानी आक्रमण के लिए प्रेरणा है।"

१० मई के "हरिजन" में गाँधी जी ने अपने विचारों की व्याख्या करते हुये फिर लिखा कि "भारत वर्ष में अंगरेज़ों की उपस्थिति जापान को भारत पर आक्रमण करने का निमंत्रण है। उनके चले जाने से यह प्रलोभन हट जायेगा। फिर ३१ मई १९४२ के "हरिजन" में आपने लिखा—"निस्सन्देह लोगों को किसी भी दशा में अंगरेज़ी शासन सत्ता से छुटकारा पाने के लिए जापानियों पर आस नहीं बाँधनी चाहिये। वह तो बीमारी से भी बुरा इलाज होगा। किन्तु जैसा मैं पहले कह चुका हूँ इस संग्राम में हमें तरह तरह का खतरा उठाना पड़ेगा ताकि हम अपने आपको उस महाव्याधि से मुक्त करा सकें जिसने हमारे पौरुष को जर्जरित और हमें शक्तिहीन बना दिया है। हमें सदा गुलाम ही बने रहने का विश्वास करने को वाध्य किया है। यह विचार असह्य है। इस इलाज की कीमत महँगी होगी, पर दासता से मुक्ति के लिये कोई भी कीमत महँगी नहीं।"

वर्किंग कमेटी की बैठक

अप्रैल १९४२ के अंत में कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। महात्मा गांधी इस बैठक में उपस्थित नहीं थे। उन्होंने वर्किंग कमेटी में विचारार्थ कतिपय योजनायें कुमारी मीरा वेन द्वारा भेज दी थीं। सरकार वर्किंग कमेटी से बहुत संशंक रहा करती। उसे डर था कि इस वार कमेटी कोई ऐसी योजना न पास कर दे जिससे भारत में व्यापक आन्दोलन छिड़े,और 'भारत छोड़ो, योजना सफल हो जाय।

२८ अप्रैल १९४२ को भारत सरकार ने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी और कांग्रेस वर्किंग कमेटी की कार्यवाहियों के छपने पर रोक लगा दी।

समाचार पत्रों पर रोक

केन्द्रीय सरकार तथा प्रान्तीय सरकारों ने आज्ञाओं के द्वारा कांग्रेस के कार्यक्रम एवं कांग्रेस जनों की गतिविधि की जानकारी प्राप्त करने से जनता को वंचित रखना चाहा। समाचार पत्रों पर कड़ी नजर रखी जाने लगी और जैसे जैसे समय बीतता गया प्रेस संबंधी नई नई आज्ञायें जारी की जाने लगी।

ऐसी आज्ञाओं के जारी होने से जनता को सही समाचारों का मिलना बन्द हो गया और समाचार पत्रों के लिये ईमानदारी के काम करना असंभव होगया। कई पत्र संपादकों को धमकियां दी गईं। कई पत्रों की जमानतें ज़ब्त हुईं, कइयों से जमानत मांगी गई और कइयों का प्रकाशन बंद कर देना पड़ा। लखनऊ के राष्ट्रीय पत्र "नेशनल हेराल्ड" ने १५ अगस्त, १९४२ से अपना प्रकाशन बंद कर दिया और लिखा कि अब समय आ गया है कि अपमानपूर्ण नियंत्रण को स्वीकार करने की अपेक्षा काम बंद कर देना अच्छा है। "हिन्दुस्तान टाइम्स" के संपादक श्री देवदास गांधी, "हिन्दुस्तान" के संपादक श्रीमुकुट विहारीलाल तथा दोनों के प्रिंटर श्री देवीप्रसाद शर्मा को गिरफतार कर लिये; उन पर मुकदमा चला किन्तु वे छोड़ दिये गये। फैसले में मजिस्ट्रेट ने लिखा— मेरे सामने ऐसी कोई शहादत पेश नहीं की गई है जिससे यह साबित हो कि दंगों का संबंध उस आन्दोलन से है जिसके लिये अ० भा० कांग्रेस कमेटी ने मंजूरी दी है।

'नेशनल हेराल्ड" के संपादक श्री रामराव पर मुकदमा चला। उन्हें ६ महीने की सज़ा दी गई। प्रेस बंद होने पर भी युक्त प्रान्त के गवर्नर ने घोषित किया कि उक्त पत्र की इमारत

गैरकानूनी बैठकों के लिये इस्तेमाल होती है। इमारत जब्त कर ली गई। एक एक करके भारत के प्रायः सारे राष्ट्रीय पत्रों का प्रकाशन बंद हो गया।

२७ अप्रैल से २ मई तक कांग्रेस कमेटी की जो बैठकें हुईं, उनमें जापान के प्रति कांग्रेस के रुख के विषय में कड़ी बहस हुई। भारत पर जापान के आक्रमण की आशंका थी और यद्यपि ब्रिटिश सरकार ने भारत को उसकी इच्छा के विरुद्ध युद्ध में झोंक दिया था फिर भी आक्रमण की दशा में भारत ने अहिंसात्मक रूप से पूर्णतया जापान से असहयोग करने का निश्चय किया और कहा गया कि ऐसे अवसर पर केवल ब्रिटिश सेनाओं के मार्ग में कोई बाधा न डालने के ही द्वारा हम आक्रमणकारी के प्रति अपने असहयोग को प्रकट करेंगे।

अ० भा० कांग्रेस कमेटी का प्रस्ताव

इलाहाबाद में २ मई को अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में पंत जी ने वर्किङ्ग कमेटी का नियमित प्रस्ताव पेश किया, उसमें कहा गया है कि भारत आक्रमणकारी सेनाओं के साथ पूर्ण अहिंसात्मक असहयोग करेगा। प्रस्ताव यों है—

"भारत पर आक्रमण होने का जो तात्कालिक खतरा उत्पन्न हो गया है उसे तथा बृटिश सरकार के रुख को जो कि सर स्टैफ़र्ड क्रिप्स द्वारा लाये गये प्रस्तावों में पुनः प्रकट किया गया था, ध्यान में रखते हुये अ० भा० कांग्रेस कमेटी को भारत की नई नीति की घोषणा करनी है और निकट भविष्य में उत्पन्न होने वाली संभावित परिस्थिति में किये जाने वाले कार्यों के संबन्ध में देश की जनता को सलाह देनी है।

"बृटिश सरकार के प्रस्तावों और सर स्टैफ़र्ड क्रिप्स द्वारा की गई उनकी व्याख्या के फलस्वरूप पहले से अधिक कटुता और

संकट उत्पन्न हुआ है और ब्रिटेन के साथ असहयोग करने की भावना की वृद्धि हुई है। उन प्रस्तावों से प्रकट हो गया है कि इस खतरे के समय में जो न केवल भारत के लिये बल्कि संयुक्तराष्ट्रों के लिये भी है, वृटिश सरकार साम्राज्यवादी सरकार की भाँति कार्य करती है और भारत की स्वाधीनता स्वीकार करने से अथवा उसे कोई वास्तविक अधिकार देने से इनकार करती है।

युद्ध में भारत का भाग लेना सर्वथा बृटिश कार्य है जिसे भारतीयों पर बिना उनके प्रतिनिधियों की मंजूरी लिये ही लादा गया है। एक ओर जब कि भारत का किसी देश से कोई झगड़ा नहीं है. तो दूसरी ओर भारत बारम्बार नाजीवाद, फासिस्टवाद और साम्राज्यवाद के प्रति अपनी घृणा की भावना प्रकट करता है। यदि भारत स्वतन्त्र होता तो वह अपनी नीति स्वयं निर्धारित करता और संभव है कि वह अपने को युद्ध से अलग बनाये रखता। हालांकि स्वभावतः उसकी सहानुभूति उन देशों के प्रति होगी जिनपर आक्रमण किये गये हैं। लेकिन अगर परिस्थितियों के अनुसार उसे युद्ध में प्रवेश करना पड़ता तो वह ऐसा स्वतंत्रता के लिये लड़ने वाले एक स्वतंत्र देश की हैसियत से करता और भारत की रक्षा का संगठन. राष्ट्रीय सेना का नियंत्रण तथा नेतृत्व लोकप्रिय आधार पर किया जाता और जनता के साथ निकट सम्बन्ध रखा जाता। केवल स्वतंत्र भारत ही यह जानता कि उसपर हमला करने वाले किसी आक्रमणकारी से अपनी किस प्रकार रक्षा करनी चाहिये। वर्तमान भारतीय सेना वस्तुतः बृटिश सेना की ही एक शाखा है और इसे अब तक मुख्यतः भारत को पराधीन बनाये रखने के लिये प्रयोग में लया गया है।

"रक्षा के सम्बन्ध में साम्राज्यवादी और लोकप्रिय धारणाओं में क्या अन्तर होता है यह इस बात से प्रकट हो जाता है

कि एक ओर जब रक्षा के लिए भारत में विदेशी सेनायें निमन्त्रित की जाती हैं तो दूसरी ओर भारत की महान जनशक्ति का उसके लिये उपयोग नहीं किया जाता है। अतीत के अनुभवों से भारत को यह शिक्षा मिलती है कि भारत में विदेशी सेनाओं का आगमन भारत के हितों के लिये हानिकारक और उसकी स्वतंत्रता के उद्देश्य के लिये खतरनाक है। यह एक उल्लेखनीय और असाधारण बात है कि भारत की अक्षुण्ण जनशक्ति का उपयोग न किया जाय जब कि दूसरी ओर भारत विदेशी सेनाओं के बीच रणक्षेत्र के रूप में परिणत हो जाय और उसकी रक्षा को लोकप्रिय नियंत्रण के लिये उपयुक्त न समझा जाय। भारत इस बात पर असन्तोष प्रकट करता है कि यहां की जनता को नगण्य समझा जाय और विदेशी अधिकारियों के द्वारा मनमाने-पन का वर्ताव किया जाय।

"अखिल भारत वर्षीय कांग्रेस कमेटी को यह यक़ीन है कि भारत स्वयं अपनी शक्ति से अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करेगा और इसी प्रकार उसे कायम रखेगा। वर्तमान संकट से तथा सर स्टैफ़र्ड क्रिप्स के साथ वार्ता के समय प्राप्त हुये अनुभवों से कांग्रेस के लिये यह असंभव हो जाता है कि वह किन्हीं ऐसी योजनाओं और प्रस्तावों पर विचार करे जिनके द्वारा आंशिक रूप में ही सही ब्रिटिश नियंत्रण और अधिकार भारत पर क़ायम रक्खा जाता है। न केवल भारत के हित का वल्कि ब्रिटेन की सुरक्षा और विश्व शान्ति और स्वतंत्रता का यह तकाजा है कि ब्रिटेन को अनिवार्यतः भारत पर से शिकंजा हटा लेना होगा। भारत केवल स्वतंत्रता के ही आधार पर ब्रिटेन अथवा किसी अन्य राष्ट्र से बात कर सकता है।"

उक्त प्रस्ताव में आगे चलकर इस धारणा का खण्डन किया

गया है कि किसी विदेशी राष्ट्र के हस्तक्षेप अथवा आक्रमण करने से भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हो सकती है। अगर भारत पर हमला हो तो उसका अवश्यमेव विरोध करना होगा। इस तरह विरोध केवल अहिंसात्मक असहयोग का ही रूप धारण कर सकता है।

"इसलिये आ० भा० कांग्रेस कमेटी देश की जनता से यह आशा करेगी कि वह आक्रमणकारी सेनाओं से पूर्ण अहिंसात्मक असहयोग करेगी और उनको किसी प्रकार की सहायता न पहुँचायेगी। हम आक्रमणकारी के सामने घुटने नहीं टेक सकते और न उसके किसी आदेश का ही पालन कर सकते हैं। हम उसकी कृपा नहीं चाह सकते और न उसके द्वारा दिये जाने वाले घूस को ही ले सकते हैं। अगर वह हमारे घरों और खेतों पर अधिकार करना चाहता है तो हम उसे देने से इनकार करेंगे और हमें चाहे मरना ही क्यों न पड़े, हम उसका विरोध करेंगे। जिन स्थानों में ब्रिटिश और आक्रमणकारी सेनाओं में लड़ाई हो रही है वहां पर हमारा असहयोग निष्फल और अनावश्यक होगा। केवल ब्रिटिश सेनाओं के मार्ग में कोई बाधा न डालने के ही द्वारा हम आक्रमणकारी के प्रति अपने असहयोग को प्रकट करेंगे।

"आक्रमणकारी के साथ असहयोग और उसका अहिंसात्मक विरोध किया जाना बहुत अधिक अंशों में कांग्रेस के रचनात्मक कार्य को विस्तृत रूप से कार्यान्वित किये जाने पर और ख़ास करके आत्म निर्भरता तथा आत्म रक्षा पर निर्भर करेगा।"

वर्किंग कमेटी का प्रस्ताव बहुमत से पास हुआ।

युक्त प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने ३१ मई १९४४ का अपना लखनऊ की बैठक में एक प्रस्ताव पास करके अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के उन प्रस्तावों को मंजूर किया जो हाल में इलाहाबाद में पास किये गये थे और जिनमें कांग्रेस की वर्तमान नीति समझाई गई थी।

यु०प्रा० कांग्रेस कमेटी को नाराज़ी

एक प्रस्ताव द्वारा कमेटी ने इस पर नाराज़ी प्रकट थी कि इस प्रान्त के कुछ नागरिक और ग्रामीण क्षेत्रों से जनता निकाल दी गई। ऐसा करते समय न तो कोई सूचना दी गई, न मुआवज़ा दिया गया, और न लोगों को हटाने का कोइ प्रबन्ध किया गया, और न उनके लिये ज़मीनों और घरों का प्रबन्ध किया गया।

जुलाई १९४२ को गोरखपुर में युक्त प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की कौंसिल में भी कुछ ऐसा ही प्रस्ताव पास हुआ जो इस प्रकार है:—

"युक्त प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की कौंसिल सरकार के स्कूल की इमारतों को अपने कब्जे में करने और स्कूल अधिकारियों को बहुत थोड़े समय की सूचना पर हटने के लिये वाध्य करने की नीति को नापसंद करती है। कौंसिल यह स्वीकार करती है आवश्यकता के समय फौजी आवश्यकताओं को जीवन के अनेक साधारण कार्यों से पहले स्थान देना चाहिये किन्तु एक विदेशी शासक का निर्णय जो लोकमत के प्रति जिम्मेदार नहीं है और उसकी ओर ध्यान नहीं देता, इस प्रकार के कार्यों के लिये उचित नहीं कहा जा सकता।

स्पष्ट है कि कांग्रेस ज्यों ज्यों लोकमत की आवाज़ उठा रही थी सरकार लोकमत को कुचलने पर तुली हुई थी। युद्धोद्योग के सामने लोकमत की यह अवहेलना किसी भी आत्माभिमानी देश

अथवा संस्था को मान्य न होगी। ब्रिटिश सरकार की कार्रवाइयों पर कांग्रेस का रुख और भी कड़ा होता गया।

महात्मा गांधी के अन्दोलन की रूपरेखा यद्यपि स्पष्ट नहीं थी, फिर भी इतना प्रकट हो चुका था कि कांग्रेस अधिक दिनों तक रुकने को तैयार नहीं थी। यह भी विदित हो चुका था कि कांग्रेस का अगला कदम महत्वपूर्ण तथा निर्णायक होगा।

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने २ जुलाई को महात्मा गांधी के नये अन्दोलन की ओर संकेत करते हुये कहा कि महात्मा जी स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये सत्याग्रह या कोई अन्य कार्य प्रारम्भ करने ही वाले हैं। जनता को उसके लिये तय्यार रखना चहिये। जब तक हम बंधन में पड़े हैं, तब तक हम देश की रक्षा नहीं कर सकते। इसी लिये महात्मा गांधी यह चाहते हैं कि अंगरेज चले जांय और देश की रक्षा का भार हिन्दुस्तानियों के हाथों में सौंप दे।

पंडित जी ने आगे कहा कि हमने दीर्घ काल तक इंतजार किया. हम एक या दो वर्ष और ठहरते, पर युद्ध के कारण हम अब नहीं ठहर सकते। इस लिये हमारे लिये जरूरी है कि हम भारत को स्वतंत्र करें और तब उसके बाद जापानी या किसी भी अन्य आक्रमणकारी से शस्त्रों से या बिना शस्त्रों के लड़े। यदि हम स्वतंत्र होते तो हम किसी भी शत्रु का मुकाबला कर सकते थे।

उधर सरदार बल्लभ भाई पटेलने २जुलाई को ही रात में भाषण देते हुये कहा कि मैं यह नहीं जानता कि गांधी जी किस समय आदेश निकालेंगे लेकिन उन्होंने हाल ही में जो कुछ लिखा है उससे प्रकट होता है कि वे कल आदेश निकाल सकते हैं। यह सभाओं जुलूसों और भाषण का समय नहीं है। अगर भीषण विनाश का आप पर प्रभाव नहीं पड़ा और आने वाले प्रस्ताव को आप न समझ सके तो यह हमारा

दुर्भाग्य ही होगा। संभव है मैं फिर आपसे न मिल सकूँ। मैं आशा करता हूँ आप प्रत्येक अपील का हृदय से समर्थन करेंगे।

'भारत छोड़ो' प्रस्ताव का स्पष्टीकरण

महात्मा गांधी के भारत छोड़ो प्रस्ताव पर देश विदेश में बड़ी गलत फहमी फैली। ऐसे संकट काल में जब कि भारत के चारों ओर शत्रु मड़रा रहे हैं, 'भारत छोड़ो' आन्दोलन का क्या अर्थ हो सकता है! महात्मा गांधी के कतिपय निकटवर्ती सहयोगियों तक को उक्त आन्दोलन में सन्निहित परिणामों के विषय में बड़ी चिन्ता हो रही थी। महात्मा गांधी ने ५ जुलाई के 'हरिजन' में 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव का स्पष्टीकरण करते हुए लिखा:—

"एक भी अंगरेज सिपाही के बिना स्वतंत्र भारत का मैंने जो अकर्षक चित्र खींचा है, उसके लिये मुझे भारी मूल्य चुकाना पड़ रहा है। हमारे मित्र यह जान कर चक्कर में पड़ गये हैं कि मैंने जो प्रस्ताव किया है उसमें ब्रिटिश और अमेरिकन फौजों के भी उपस्थित रहने की गुँजाइश है। मेरी यह बहस बेकार है कि यदि मित्रराष्ट्रों की फौजें रह गईं तो वे जनता के ऊपर या भारत के खर्चे से अधिकार जमाने के लिये नहीं होंगी, बल्कि स्वतंत्र भारत के साथ की गई संधि के अनुसार और संयुक्त राष्ट्रों के खर्चे पर यहां रहेंगी और उनका एक मात्र उद्देश्य जापानी आक्रमण विफल करने और चीन को सहायता पहुँचाने का होगा।

"यह संकेत किया गया है कि युद्ध काल तक मित्रराष्ट्रों की फौजों को भारत में रहने देने पर न राजी होने का अर्थ भारत और चीन को जापान को दे डालने का होगा और उसके फलस्वरूप मित्रराष्ट्रों की पराजय निश्चित हो जायेगी। मैं यह कभी

नहीं सोच सकता था। इसका एक मात्र उत्तर दिया जा सकता है, वह यह है कि फौजों के मौजूद रहने को बरदाश्त किया जाय। वे स्वतंत्र भारत की इजाजत से रहेंगी; स्वामी के रूप में न रहेंगी।

"मैं कह सकता हूँ कि एक बड़ी ही कठिन योजना की सबसे कमजोर बातों पर ही दृष्टि रखना भारी गलती है। संभव है कि भारत में फौजों को रहने देने पर भी वह योजना स्वीकार न की जाय। यदि ब्रिटेन ईमानदारी के साथ भारत का परित्याग परित्याग करने के वास्तविक अर्थ में कर दे तो निश्चित रूप से इस शताब्दी की यही मुख्य घटना होगी और संभव है कि युद्ध की प्रगति में परिवर्तन हो जाय। मेरी राय में परित्याग के मूल्य का उसके गुण पर तनिक भी प्रभाव न पड़ेगा। क्योंकि मित्रराष्ट्रों की फौजें भारत में जापानी आक्रमण रोकने के एक मात्र उद्देश्य से काम करेंगी। कुछ भी हो आक्रमण बचाने में भारत की भी उतनी ही दिलचस्पी है जितनी कि मित्र राष्ट्रों की, फिर भी मेरे प्रस्ताव के अनुसार फौजों के लिये भारत को एक पाई भी खर्च न करना पड़ेगा।

"जहां तक मैं देख सकता हूँ इन फौजों की उपस्थिति से स्वतंत्र भारत को कोई खतरा न होगा। उनकी वजह से भारत की स्वतंत्रता छोटी न हो जायेगी। प्रस्तावों का अर्थ महात्मा जी ने सूत्र रूप में इस प्रकार समझाया है :—

(१) भारत ब्रिटेन का किसी भी रूप में आर्थिक कर्जदार नहीं रहेगा।

(२) ब्रिटेन को जो रकम वार्षिक दी जाती है वह आप से आप बन्द हो जायेगी।

(३) ब्रटिश सरकार के स्थान पर कायम होने वाली सरकार जो टैक्स लगायेगी अथवा जिन टैक्सों को जारी रखेगी उन्हें छोड़कर बाकी सभी टैक्स बन्द हो जायेंगे।

(४) इस देश में सब को परतन्त्रता में रखने वाली सर्वशक्ति सम्पन्न सरकार का सारा भार शीघ्र हट जायेगा।

(५) संक्षेप में भारत में अपने राष्ट्रीय जीवन में एक नये अध्याय का प्रादुर्भाव होगा। मुझे आशा है कि अहिंसा द्वारा युद्ध की प्रगति पर प्रभाव डालने का भाव असहयोग या उसकी तरह की किसी चीज का रूप न ग्रहण करेगा। वह अपने को इस रूप में प्रकट करेगा कि हमारा राजदूत धुरी राष्ट्रों के पास जायेगा—शान्ति की भीख मांगने के लिये नहीं बल्कि उन्हें यह दिखाने के लिये किसी सम्मान पूर्ण उद्देश्य की प्राप्ति के लिये युद्ध निरर्थक है। यह तभी हो सकता है जब कि बृटेन अपने संगठित तथा सफल हिंसा, जिससे बढ़कर संगठित और सफल हिंसा शायद संसार को देखने को न मिली होगी,—के लाभों छोड़ दे।

कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी की बैठक ६ जुलाई १९४२ से १४ जुलाई तक होती रही। यों तो वाद विवाद के लिये समय की गंभीरता के कारण अनेकानेक महत्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित थे किन्तु विशेष रूप से विचार महात्मा गांधी के 'भारत छोड़ो' विषयक प्रस्ताव पर ही हुआ।

जर्मन सेनायें मिश्र में ऊधम मचा रही थीं, जापानियों ने सिंगापुर और बर्मा पर अधिकार कर लेने के बाद भारत का दर्वाजा खटखटाना शुरू किया था। इधर भारत सरकार भारत की सुरक्षा के प्रति उतनी ही उदासीन दिखाई देती थी जितनी बर्मा और सिंगापुर की सुरक्षा के प्रति। नगरों में जहां तहां खाइयां खोदी जाती थीं, बालू के बोरे रखे जाते थे, दीवारें उठाई जा रही थीं तथा हवाई हमले से हिफाजत के केन्द्र स्थापित हो रहे थे, किन्तु यह सब कोरा मजाक मालूम होता था। भारतीय जनता को भुलावे में डालने के लिये

यह सारी कार्रवाई धोखे की टट्टी थी। हां, इन कार्रवाइयों का इतना प्रभाव अवश्य पड़ा कि भारतीय जनता समझ गई कि जापानी अक्रमण अति निकट है और हमारी रक्षा का भार सरकार अच्छी तरह नहीं निवाह सकती।

लंबी वहस के वाद वर्किङ्ग कमेटी ने १४ जुलाई को निम्न लिखित प्रस्ताव पास किया :—

"जो घटनायें नित्य प्रति हो रही हैं और भारतीय जनता जो कुछ अनुभव कर रही है उससे कांग्रेस वादियों के इस विचार की पुष्टि होती है कि भारत में व्रिटिश शासन का तुरंत ही अंत हो जाना चाहिये। केवल इस लिये नहीं कि विदेशी प्रभुत्व चाहे कितना भी अच्छा हो. वुरा है और परतंत्र जनता के लिये हानिकर है, वल्कि इसलिये कि भारत परतंत्रता में रह कर अपनी रक्षा के लिये कोई प्रभाव शाली कार्य नहीं कर सकता और इस युद्ध की स्थिति पर कुछ भी असर नहीं डाल सकता, जो मानव जाति को छिन्न भिन्न किये हुये है। इस तरह भारत की स्वतंत्रता केवल भारत के ही हक में आवश्यक नहीं है वल्कि वह संसार की रक्षा तथा नार्जी वाद, फासिस्टवाद, सैनिक वाद और सम्राज्यवाद, का अंत करने और एक राष्ट्र पर दूसरे राष्ट्र का आक्रमण रोकने के लिये भी आवश्यक है। जव से विश्वव्यापी महायुद्ध आरंभ हुआ तव से कांग्रेस की नीति परेशान न करने की रही है।

"कांग्रेस को आशा थी कि वास्तविक शासन शक्ति का अधिकार जनता के प्रतिनिधियों को सौंपा जायगा ताकि संसार भर में मानव स्वतंत्रता स्थापित करने में राष्ट्र (भारत) पूर्ण सहयोग दे सके, क्यों कि वह स्वतंत्रता इस समय नष्ट होने के खतरे में है। यह भी आशा की गई थी कि नकारात्मक रूप से ऐसा कुछ भी न किया जायेगा जिससे व्रिटेन का फंदा भारत पर मजबूत हो सके।

"पर कांग्रेस की ये सब आशायें नष्ट कर दी गईं। क्रिप्स के निरर्थक प्रस्तावों से यह स्पष्ट हो गया कि भारत के प्रति अंगरेज सरकार के रुख में किसी तरह का कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और भारत पर ब्रिटिश प्रभुत्व किसी तरह भी ढीला करने का इरादा नहीं है। सर स्ट्रैफर्ड क्रिप्स से वार्ता के समय कांग्रेसी प्रतिनिधियों ने इसका यथा शक्ति प्रयत्न किया कि राष्ट्रीय मांग के अनुसार कम से कम कुछ प्राप्त हो जाय, पर इसका कुछ फल न हुआ। इस प्रकार निष्फल होने के कारण ब्रिटेन के विरुद्ध व्यापक रूप से देश में दुर्भाव फैल गया है, और जापानियों की सफलता पर संतोष बढ़ रहा है। वर्किंग कमेटी इस स्थिति को बहुत ही चिंता के साथ देखती है और यदि वह न रोकी गई तो इसका फल आक्रमकारी के प्रति आत्म समर्पण करना होगा। कमेटी का यह विचार है कि सब तरह के आक्रमण का अवश्य मुकाबला किया जाय। क्योंकि उसके प्रति आत्म समर्पण करने का मतलब भारतीय जनता का पतन और उसकी परतंत्रता जारी रहने का है। कांग्रेस चाहती है कि मलाया सिंगापुर और बर्मा के अनुभव यहां न हों और जापनी या किसी भी विदेशी शक्ति के द्वारा आक्रमण होने पर उसका मुकाबला करने की तैयारी की जाय। इस समय ब्रिटेन के विरुद्ध जो दुर्भाव है, उसे कांग्रेस सद्भाव में बदल देगी और संसार को राष्ट्रों के लिये स्वतंत्रता प्राप्ति के संयुक्त प्रयत्न में भारत खुशी से भाग लेगा। पर यह तभी संभव है जब भारत स्वतंत्रता के प्रकाश को महसूस करे।

"कांग्रेस प्रतिनिधियों ने साम्प्रदायिक समस्या हल करने का यथाशक्ति प्रयत्न किया पर विदेशी शक्ति की उपस्थिति के कारण उसे हल करना असंभव हो गया। विदेशी प्रभुत्व और हस्तक्षेप का अंत होने ही पर वर्तमान अवास्तविक स्थिति वास्तविकता में परिणत होगी और समस्त दलों की भारतीय जनता भारतीय

समस्याओं को पारस्परिक समझौते के आधार पर हल करेगी।

"देश के वर्तमान राजनीतिक दलों के संगठन मुख्यतः अंगरेजों का ध्यान आकृष्ट करने के लिये बनाये गये हैं, और तब उन लोगों का कार्य भी बंद हो जायगा। भारत के इतिहास में पहली बार देशी नरेश, जागीरदार, जमीन्दार, और धनी लोग यह समझेंगे कि खेतों और कारखानों में काम करने वाले मजदूरों से ही वे धन प्राप्त करते हैं और शासन शक्ति और अधिकार वास्तव में उन्हें ही मिलना चाहिये।

"भारत से ब्रिटिश शासन के हट जाने पर देश के जिम्मेदार नर नारी मिल कर एक अस्थायी सरकार कायम करेंगे और भारतीय जनता के प्रमुख भागों के प्रतिनिधि भावी संबंध बनाने के लिये तथा दोनों देश मित्रराष्ट्रों की तरह सहयोग और आक्रमण का सामना करने के लिये आपस में परामर्श करेंगे। कांग्रेस की यह हार्दिक इच्छा है कि वह जनता की संयुक्त इच्छा और शक्ति से आक्रमण का मुकाबला करे।

"भारत से ब्रिटिश शासन के हटाये जाने के प्रस्ताव पर कांग्रेस की यह इच्छा नहीं है कि वह ब्रिटेन या मित्रराष्ट्रों के युद्ध के प्रयत्नों में किसी तरह की परेशानी पैदा करे या भारत अथवा चीन पर वह धुरी राष्ट्रों के आक्रमण को प्रोत्साहन दे, और न कांग्रेस मित्र राष्ट्रों की रक्षा की क्षमता को आघात पहुँचाना चाहती है।

'कांग्रेस यह मानती है कि भारत में मित्रराष्ट्रों की फौजें यदि चाहें तो रहें ताकि जापानी या अन्य किसी शक्ति के आक्रमणों को रोका जा सके और चीन की रक्षा तथा सहायता की जाय। भारत से ब्रिटिश के हटने का यह मतलब नहीं है कि सब अंगरेज भारत से चले जांय और निश्चय ही यह उनके लिये नहीं है जो भारत को अपना घर बना कर नागरिक के रूप में यहां समान भाव से रहना

चाहें। यदि अंगरेज सद्भाव के साथ हटें तो इससे भारत में मजबूत अस्थायी सरकार बनाने में सहायता मिलेगी और इस सरकार और मित्रराष्ट्रों में चोन को सहायता के लिये सहयोग हो सकेगा।

"कांग्रेस यह समझती है कि ऐसा करने में संभव है जोखिम हो। पर स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये किसी भी देश को ऐसे जोखिम सहन करने होंगे। कांग्रेस राष्ट्रीय उद्देश्य की प्राप्ति के लिये अधीर है पर वह जल्दबाजी के साथ कुछ करना नहीं चाहती और यथा संभव वह संयुक्त राष्ट्रों को परेशान करना भी नहीं चाहती।

"यदि यह अपील निष्फल हो जाय तो कांग्रेस मौजूदा हालतों को बड़ी शङ्का की दृष्टि से देखेगी और भारत के मुकाबला करने की शक्ति घटती जायेगी। तब कांग्रेस इसके लिये मजबूर होगी कि वह उस समस्त अहिंसात्मक शक्ति से काम ले जो उसने सन् १९२० से संग्रह की है ताकि वह अपने राजनीतिक हकों के लिये आन्दोलन करे और यह आन्दोलन निश्चय ही महात्मा गांधी के नेतृत्तव में होगा। चूंकि यह विषय भारत और संयुक्त राष्ट्रों की जनता के लिये बहुत आवश्यक है इसलिये वर्किंग कमेटी अंतिम निर्णय लेने के लिये उसे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में भेजती है। इसके लिये आ० भा० कांग्रेस कमेटी की वैठक ७ अगस्त को बंबई में बुलाई जायेगी।

सत्याग्रह शीघ्र छेड़ने के संबंध में स्वयं महात्मा गांधी ने १९ जुलाई के हरिजन में लिखा:—

डाक्टरों ने मुझे बीमार नहीं घोषित किया है। मैं थका हुआ हूँ और उन्होंने मुझे सलाह दी है कि मैं विश्राम करूँ और करीब १५ दिन तक किसी ठंडे स्थान पर चला जाऊँ। मैं अपने को विश्राम देने के लिये प्रयत्त करता हूँ किन्तु कर्तव्य का ध्यान ऐसा करने से मुझे रोकता है।

वाजिव वात यह है कि जब तक वुद्धि में कोई दोप न हो तव तक राजनीतिक वीमारी सत्याग्रह आन्दोलन चलाने में वाधा नहीं वन सकती।

साम्प्रदायिकता की आड़ में क्रिप्स

महात्मा गांधी के प्रस्तावित आन्दोलन से इङ्गलैंड और अमेरिका में गहरी चिंता हुई। प्रायः सारे पत्रों ने महात्मा जी के प्रस्तावों को असामयिक और अनुचित वताया। सर स्ट्रैफर्ड क्रिप्स ने रेडियो भाषण के दौरान में कहा :—

"गांधी जी यह मांग की है कि हम लोग भारत छोड़कर चले जांय। जहां पर धार्मिक मतभेद गहरे हैं और कोई भी सुसंगठित शासन नहीं है, वहां कोई भी जिम्मेदार सरकार ऐसा नहीं कर सकती, विशेष कर इस युद्धकाल में।

"आठ करोड़ मुसलमान हिन्दुस्तान के प्रभुत्व के विरुद्ध हैं। इसी तरह अछूत भी हिन्दुओं के विरोधी हैं। कांग्रेस दल या महात्मा गांधी की वातें स्वीकार करने से देश में गड़वड़ और उपद्रव जयोहोगा। महात्मा गांधी को एक महान राष्ट्रीय और धार्मिक नेता समझ कर मैंने उनका आदर किया है, पर इस समय वे व्यावहारिक और वास्तविक समझदारी नहीं दिखा रहे हैं। इस समय वे महान आम सत्याग्रह की धमकी दे रहे हैं जिससे युद्ध सम्बंधी प्रयत्नों को हानि पहुँचेगी और शत्रु खुश होंगे। मुझे इसका वड़ा दुख है कि गांधी ने यह रुख ग्रहण किया है। मैं जानता हूँ कि समस्त भारतीय जनता उनके इस रुख का समर्थन नहीं करती। आम सत्याग्रह के लिये संभव है कि कुछ लोग उनके साथ हो जांय, पर भारत और मित्र-राष्ट्रों के उद्देश्य के लिये हमारा यह कर्तव्य है कि जापानियों के विरुद्ध संयुक्त कार्रवाई करने के लिये भारत को हम सुव्यवस्थित जङ्गी अड्डा वनावें। इसके लिये

चाहे जो भी उपाय करने पड़ेंगे हम उन्हें अवश्य निर्भीकता पूर्वक करेंगे।"

इस प्रकार सर स्ट्रैफर्ड क्रिप्स ने मुसलमानों और दलित जातियों के पक्ष का समर्थन कर भारतीय दलों के प्रति अंगरेज़ शासकों की नीति का प्रतिपादन किया। मुसलमानों और दलित वर्गों को कांग्रेस से पृथक रखने का प्रयत्न बार बार होता है, फिर ऐसे संकटपूर्ण अवसर पर साम्प्रदायिक भावनाओं को प्रज्वलित करने की तो महान आवश्यकता थी।

पं० नेहरू की चुनौती

पं० जवाहरलाल नेहरू ने क्रिप्स के भाषण पर वक्तव्य देते हुये कहा कि एक होशियार वकील की भांति सर स्ट्रैफर्ड क्रिप्स ने महात्मा गान्धी के वक्तव्योंमें से कुछ शब्द चुन लिये हैं और उनके द्वारा ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के पक्ष का औचित्य प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है। इङ्गलैण्ड और भारत के बीच स्थिति काफी खराब है। फिर भी सर स्ट्रैफर्ड उसे खराब बनाना चाहते हैं। वे मुसलमानों तथा दलित जातियों आदि के नये समर्थक बने हैं। मैं अपने देश के मुसलमानों को सर स्ट्रैफर्ड से कुछ ज्यादा जानता हूँ और मैं जानता हूँ कि उनके बारे में सर स्ट्रैफर्ड ने जो कहा है वह उनमें से बहु-संख्यकों के लिये निन्दा के रूप में है।

प्रस्ताव पर मि० एमरी के कुत्सित विचार

तत्कालीन भारत सचिव मि० एमरी ने वर्किङ्ग कमेटी के प्रस्ताव को धमकी समझा। ३० जुलाई १९४२ को कामन सभा में भाषण देते हुए उन्होंने अपनी प्रतिक्रिया वादी नीति का परिचय इस प्रकार दिया :—

"यदि मांग स्वीकार कर ली जाय तो भारत सरकार का शासन संघ पूर्ण रूप से स्वप्न हो जायगा और ऐसे

समय में जब कि रूस, चीन और मिश्र तथा अन्य रणक्षेत्रों में स्थिति ऐसी है कि सभी मित्र राष्ट्रों की सारी शक्ति, सहयोग और साधनों को एक साथ लड़ाई में लगा देने की आवश्यकता है, मांग पेश करने से बढ़कर और कोई हानि नहीं पहुँचाई जा सकती।

"ब्रिटिश सरकार भारत को पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये पूरा अवसर देने के अपने संकल्प को दुहराती है किन्तु वह उन सभी लोगों को, जो कांग्रेस वर्किंग कमेटी द्वारा निर्धारित की गई नीति का समर्थन करते हैं, चेतावनी देती है कि भारत सरकार स्थिति का मुकाबला करने के निमित्त प्रत्येक संभव उपाय करने के अपने कर्तव्य में तनिक भी नहीं हटेगी।"

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक अभी बंबई में होने ही वाली थी कि एकाएक भारत सरकार ने तथाकथित गांधी जी के उस प्रस्ताव के मसविदे को, जिसके प्रकाशन पर २८ अप्रैल १९४२ को भारत सरकार ने रोक लगाई थी और जिस पर वर्किङ्ग कमेटी में बहस हुई थी, प्रकाशित किया। सरकारी विज्ञप्ति का कहना है कि इस मसविदे में निम्नलिखित मुख्य प्रसंग थे :—

१. ब्रिटिश सरकार के भारत से चले जाने की मांग की जाय।

२. भारत ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति के कारण ही युद्धक्षेत्र के अंतर्गत आ गया है।

३. इस देश की स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिये किसी भी विदेशी ताकत को सहायता की आवश्यकता नहीं है।

४. भारत का किसी भी दूसरे देश से कोई झगड़ा नहीं है।

५. यदि जापान ने भारत पर हमला किया तो उसका मुकाबला अहिंसात्मक विरोध से किया जायगा।

६. असहयोग का स्वरूप क्या होगा?

७. देश में विदेशी सैनिकों की उपस्थिति भारत की स्वतंत्रता के लिये बहुत बड़ा खतरा है।

सरकारी विज्ञप्ति में कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी की बैठक में होने वाली बहस का जो विवरण दिया गया, इसके अतिरिक्त कई अनर्गल बातें पं० जवाहरलाल नेहरू डा० राजेन्द्र प्रसाद, श्री अच्युत पटवर्धन तथा मौ० अबुल कलाम आज़ाद आदि के नाम पर कही गई थीं।

महात्मा गाँधी की धारणा

सरकार ने उपर्युक्त मसविदा प्रकाशित करा कर समझा कि ऐसा करने से गांधी जी के प्रति जनता की अश्रद्धा होगी। महात्मा जी ने प्रेस प्रतिनिधियों द्वारा पूछे जाने पर तद्विषयक कई प्रश्नों का स्पष्टी करण किया। उन्होंने कहा—"जिस ढंग से सरकार ने कागजात को प्राप्त किया है, उसके संबंध में मैं दो एक बात कह देना चाहता हूँ। मेरा खयाल है कि आ० भा० कांग्रेस कमेटी के दफ्तर की तलाशी करने तथा कागजात को कब्जा में रखने के लिये जो कार्य प्रणाली अख्तियार की गई वह आपत्ति जनक थी। कांग्रेस कोई गैर कानूनी संस्था नहीं है। उसके प्रतिनिधि भारतीय शासन विधान द्वारा दी गई आंशिक स्वधीनता के अन्दर भारत के सात बड़े प्रान्तों पर शासन कर चुके हैं और जहां तक मुझे ज्ञात है उन प्रान्तों के गवर्नरों ने उनके शासन की प्रशंसा की है। ऐसी संस्था के साथ सरकार को अच्छा वर्ताव करना चाहिये था। उन कागजों का अनुचित या अवैध उपयोग करने के पूर्व यदि सरकार आ० भा० कांग्रेस कमेटी को उसका हवाला देकर उसे कुछ कहने का अवसर देती तो कहीं बेहतर होता। गृह विभाग ने कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी के सदस्यों को कलंकित करने का जो प्रयत्न किया है उसके होते हुये भी उन कागजों को पढ़ने से जो अप्रामाणिक हैं, कांग्रेस की प्रतिष्ठा में

कम से कम भारत के अन्दर, कोई अन्तर नहीं पड़ सकता। उसमें कोई ऐसी कोई बात नहीं है जिससे सदस्य लज्जित हों।"

प्रतिनिधियों द्वारा यह पूछे जाने पर कि जैसा आपके कथित प्रस्ताव से प्रकट होता है, क्या आप का विश्वास है कि जापान और जर्मनी युद्ध में विजयी होंगे? महात्मा जी ने कहा कि मैंने कभी की, वहुत लापरवाही के समय भी, यह मत नहीं व्यक्त किया कि जापान और जर्मनी युद्ध में विजयी होंगे. यही नहीं मैंने अकसर यह राय प्रकट भी है कि अगर ब्रिटेन सदा के लिये साम्राज्यवाद छोड़ दे तो वह युद्ध में जीत सकता है।

२६ जुलाई को महात्मा गांधी ने 'हरिजन' में जापानियों को संबोधित करते हुये लिखा था कि—"मैं आप से यह कहूँगा कि यदि आपका यह विश्वास है कि भारत में आप का खुशी से स्वागत होगा तो आप का यह वहुत वड़ा भ्रम है। आप को वहुत गलत सूचनायें मिली हैं, कि हमने इस अवसर पर जब कि आप का अक्रमण भारत पर होने वाला है, मित्र राष्ट्रों को परेशान करने का निश्चय किया है। यदि हम ब्रिटेन की कठिनाई को अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये सुअवसर समझते तो हमने तीन वर्ष पूर्व ही ऐसा किया होता, जब कि युद्ध आरंभ हुआ था।"

सरकारी विज्ञप्ति के प्रकाशन की निन्दा करते हुये पं० जवाहरलाल नेहरू ने निम्नलिखित वक्तव्य दिया—

कथित प्रस्ताव के प्रकाशन पर पं० नेहरू

मैंने पहली वार सरकार की विज्ञति देखी है जिसमें वे कागजात प्रकाशित किये गये हैं जिन्हें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के दफ़्तर पर धावा करने में पुलिस ने पकड़े थे। इस वात से आश्चर्य होता है कि सरकार ऐसी स्थिति पर पहुँच गई है कि उसे इस प्रकार की अश्रेयस्कर तथा अपमानजनक नीति अख्तियार करनी पड़ी है। साधारणतः इस तरह की चालों के लिये कोई

उत्तर देने की आवश्यकता नहीं होती किन्तु चूँकि कुछ गलत-फहमी पैदा होने की आशङ्का है। इस लिये मैं कुछ बातों को स्पष्ट कर देना चाहता हूं।

यह हमारी प्रथा नहीं है कि वर्किंग कमेटी की बैठक की कार्यवाही की हम विस्तृत रिपोर्ट रखें, केवल अन्तिम निर्णय दर्ज किये जाते हैं इस अवसर पर असिस्टेंट सेक्रेटरी ने बैठक के बारे में संक्षिप्त नोट लिये थे जो कांग्रेस की ओर से नहीं लिये गये थे। नोट प्रत्यक्षतः उन्होंने अपने लिये ले लिये थे। ये नोट बहुत ही संक्षिप्त हैं और इनमें एक बात का दूसरी बात से कोई सम्बन्ध नहीं है। ये नोट कई दिन की लम्बी बहस के बारे में है जिस बीच मैं कई बार दो या तीन घंटे तक बोला हूँगा। केवल कुछ वाक्य ले लिये गये हैं जिनके ऊपर पहले और बाद में कही गई बातों का कोई जिक्र नहीं किया गया है। ये वाक्य प्रायः गलत विचार पैदा करते हैं। हममें से किसी को ये नोट देखने को नहीं मिले थे और न उन्हें दुहराने का ही हममें से किसी को कोई अवसर मिला था। जो नोट किये गये थे वे बड़े ही असंतोष-जनक थे। वे अपूर्ण थे इसलिये प्रायः गलत भी।

भारत से अंगरेजों के वापस चले जाने के प्रश्न पर जिस समय विचार किया गया तब मैंने संकेत किया कि यदि सशस्त्र फौजें सहसा हटा ली जायेंगी तो संभव है जापानी आगे बढ़ें और बिना किसी रुकावट के हमारे देश पर आक्रमण करें। यह प्रत्यक्ष कठिनाई उस समय दूर हो गई जब गांधीजी ने यह बताया कि आक्रमण रोकने के लिये ब्रिटिश तथा अन्य सशस्त्र फौजें भारत में रह सकती हैं। यह कहने में कि गांधीजी को धुरी राष्ट्रों की विजय की आशा है महात्मा गाँधी द्वारा इस कथन के साथ लगाई गई एक महत्व पूर्ण शर्त को नहीं बताया गया है। महात्माजी ने जो बात बार बार कही है और जिसका मैंने जिक्र किया है वह यह है

कि उनका यह विश्वास है कि यदि अंगरेज भारत तथा उपनिवेशों के संबन्ध में अपनी सारी नीति को नहीं बदल देंगे तो वे काफी विपत्ति में पड़ेंगे। गांधी जी ने यह भी कहा है कि यदि इस नीति में उपयुक्त परिवर्तन कर दिया जाय और लड़ाई वास्तव में सभी राष्ट्रों की स्वतन्त्रता की लड़ाई का रूप धारण करले तो विजय निश्चित रूप से संयुक्त राष्ट्रों की होगी।

२८ अप्रैल को भारत सरकार ने प्रस्ताव के मसविदे पर रोक लगाकर जनता का कौतूहल तो बढ़ाया ही था साथ ही जनता को इस कार्रवाई पर बड़ा क्रोध आया। थोड़े ही दिनों बाद सरकार ने अकारण अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी के दफ़्तर पर आक्रमण करके कांग्रेस के आत्म सम्मान को बड़ी ठेस पहुँचाई थी। सरकार ने ५ अगस्त को कांग्रेस के कागजात का प्रकाशन करके वास्तव में कांग्रेस के अग्रगण्य नेताओं को बदनाम करना चाहा और महात्मा गांधी तथा कांग्रेस के कतिपय अन्य नेताओं को धुरी राष्ट्रों का समर्थक प्रमाणित करना चाहा। महात्मा गांधी के 'हरिजन' के लेखों तथा समय समय पर दिये गये वक्तव्यों से यह बात स्पष्ट थी कि उन्होंने कभी भी धुरी राष्ट्रों के समर्थन का विचार तक नहीं किया, बल्कि धुरी राष्ट्रों द्वारा भारत पर आक्रमण होने की दशा में उनका अहिंसात्मक विरोध करने के लिये बार बार कहा था।

सरकार की पक्की धारणा हो चुकी थी कि महात्मा गांधी तथा काँग्रेस वर्किङ्ग कमेटी के अधिकांश सदस्य धुरी समर्थक हो चुके हैं—इस धारणा से प्रेरित होकर उसने उपर्युक्त विज्ञप्ति प्रकाशित कराई थी ताकि काँग्रेस जनों पर भावी कार्रवाई करने के लिये सरकार का पक्ष मजबूत रहे। कांग्रेस पर से सरकार का विश्वास उठ चुका था। वह धीरे धीरे कांग्रेस को दबाना चाहती थी। भारत रक्षा कानूनों की धूम थी। प्रति दिन कांग्रेस जन किसी न

किसी बहाने से जहां तहां पकड़े जाते थे। इनमें सर्व श्री श्रीकृष्ण दत्त पालीवाल (युक्त प्रान्त), पं० गंगा सहाय चौबे (युक्तप्रांत), जी ठक्कर) बंबई, विश्वनाथ दास (उड़ीसा) के नाम उल्लेखनीय हैं। कोई भी जिला ऐसा नहीं का जहां १०, २० कांग्रेस कार्यकता जेलों में न भरे गये हों।

वलिया में गिफ्तारियां

बलिया के अग्रगण्य कार्यकर्ताओं में सर्व श्री जगन्नाथसिंह, चीतू पांडेय, शिवपूजनसिंह, राजेश्वर तिवारी, रामलक्षण तिवारी, बालेश्वरलेसिंह और यूसुफ़ कुरेसी आदि को अपत्ति जनक भाषण देने तथा अन्य छोटे मोटे गढ़े गढ़ाये अपराधों में फँसा कर जेल में डाल दिया गया। शेप कांग्रेस जनों पर सरकार की कड़ी नजर थी। कांग्रेसजन भी अपनी ओर से चूकने वाले न थे। उनका संगठन कार्य जोरों पर चल रहा था। गांव-गांव में घूम घूम कर प्रचार कर कहे थे।

जहां तहां चर्चा चल रही थी कि महात्मा जी शीघ्र नजर वन्द किये जायंगे। ऐसे कश्मकश के जमाने में वम्बई में कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की वैठक हुई।

अ० भा० कांग्रेस कमेटी की बैठक

७ अगस्त १९४२ को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की वैठक ६॥ वजे ग्वालियर तालाव के मैदान में हुई। २५० सदस्य तथा १० हजार दर्शक उपस्थिति थे। वर्किङ्ग कमेटी द्वारा पास किये गये प्रस्ताव को समझाते हुये मौ० अवुल कलाम आजाद ने लगभग १॥ घंटे तक भापण दिया। आप ने कहा कि हमें वादों का भरोसा नहीं करना चाहिये। हमारे लिये भारत की स्वतन्त्रता की घोपणा शीघ्र हो जानी जाहिये। हम संयुक्त राष्ट्रों से यही करने के लिये

कह रहे हैं। मैं इस मञ्च से घोषित करता हूं कि स्वतन्त्र भारत सभी आक्रमण के विरुद्ध होने वाली लड़ाई में जी खोलकर संयुक्त राष्ट्रों के साथ लड़ेगा।

मैं अङ्गरेज़ों का मित्र हूँ—महात्मा गांधी

महात्मा गांधी ने अपने ३ घंटे के लम्बे भाषण में अहिंसा का महत्व समझाते हुये कहा कि मैं अब भी अहिंसा के सिद्धान्त पर अटल हूँ। यदि आप उनसे थक गये हों तो आप को मेरे साथ आने की आवश्यता नहीं है।

महात्मा गांधी ने आगे कहा कि हम अपनी वास्तविक शक्ति और वीरता तभी दिखा सकते हैं जब यह हमारी लड़ाई हो जाय। उस हालत में एक बच्चा भी वीर बन जायेगा। हम अपनी स्वतन्त्रता लड़कर प्राप्त करेंगे। वह आकाश से टूट कर हमारे सामने नहीं आ सकती।

वास्तविक बात यह है कि अंगरेजों का जितना बड़ा मित्र मैं इस समय हूँ उतना बड़ा मित्र मैं अंगरेजों का कभी नहीं था। इसका कारण यह है कि इस समय अंगरेज कठिनाई में हैं। मेरी मित्रता का तकाजा है कि मैं उनकी त्रुटियों से उन्हें परिचित कराऊँ।

यह सम्भव है कि अंगरेजों को समझ आ जाय तथा वे यह गलती महसूस करें कि उन्हीं लोगों को जेल में डालना गलती है जो उनके लिये सदा लड़ना चाहते हैं।

महात्मा गांधीजी ने आगे कहा कि हमारा उद्देश्य विश्व संघ है। यह केवल अहिंसा के द्वारा स्थापित हो सकता है। निरस्त्रीकरण केवल उसी समय सम्भव है जब आप अहिंसा के बेजोड़ अस्त्र का उपयोग करें। कुछ लोग मुझे खयाली पुलाव पकाने वाला कह सकते हैं लेकिन मैं आप को बताता हूँ कि मैं पक्का बनिया हूँ और मेरा सौदा स्वराज्य प्राप्त करना है। अगर आप

मेरे प्रस्ताव को स्वीकार न करेंगे तो मुझे अफसोस न होगा। इसके विपरीत मैं खुशी से नाच उठूंगा क्योंकि मैं उस अत्यंत भारी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाऊँगा जो आप मुझे सुपुर्द करने वाले हैं।

प्रस्ताव पर पं० नेहरू

पं० जवाहरलाल नेहरू ने कहा प्रस्ताव किसी प्रकार किसी के लिये चुनौती नहीं है। अगर ब्रिटिश सरकार किसी प्रकार प्रस्ताव स्वीकार कर ले तो उससे परिस्थिति राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय ढंग पर सँभल जायेगी। पं० नेहरू ने आगे कहा कि पिछले चन्द महीनों में हमने भारत सरकार की बेमिसाल नालायकी देखी है। उस प्रणाली में घुन लग गया है। भारत सरकार का वर्तमान ढाँचा जर्जरित है और मैं उसके साथ अपना संबंध स्थापित नहीं कर सकता। राष्ट्रीय मोर्चों की पुकार की आलोचना करते हुये आपने कहा कि इसमें न तो राष्ट्रीय और न मोर्चे की ही भावना है। इस समय इस सरकार का केवल एक ही तात्पर्य रह गया है कि कांग्रेस का विरोध किया जाय। मैं इसकी शिकायत नहीं करता। भारत सरकार का समूचा संगठन ही ऐसा है। वह तत्परता केवल बहुत से लोगों के गिरफ्तार करने में दिखाती है। एक बार फिर सरकार कांग्रेस के बिरुद्ध अपनी इस तत्परता का परिचय देगी। अब हम ऐसा कदम उठा रहे हैं जिसमें पीछे हटने का सवाल ही नहीं है। यदि ब्रिटेन की ओर से सद्भाव दिखाया जाय तो सब ठीक हो सकता है। तब युद्ध का समस्त रुख बदल जायेगा और संसार का भविष्य परिवर्तित होगा। मेरा यह विश्वास है कि चीन और रूस को सहायता देने का यही (प्रस्ताव) एक तरीका है।

कांग्रेस तूफानी सागर में उतर रही है। वह या तो भारत की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी अथवा डूब जायेगी। पहले आन्दोलनों की तरह यह आन्दोलन चंद दिन का न होगा, यह आखिरी दम तक की लड़ाई है। कांग्रेस को एक भीषण आन्दोलन शुरू करना

है। मैं अपने आपको कभी ऐसी सरकार के साथ काम करने के लिये राजी नहीं कर सकता जिसमें न सूझ है, न समझ।

सरदार पटेल द्वारा समर्थन

प्रस्ताव का समर्थन करते हुये सरदार पटेल ने कहा कि यदि अमेरिका और इङ्गलैंड अब भी यह समझ रहे हैं कि वे अपने शत्रुओं से भारतीयों द्वारा बिना ४० करोड़ भारतीयों के सहयोग के लड़ सकते हैं, तो वे मूर्ख हैं। जनता पर यह बात प्रकट करनी होगी कि यह लड़ाई जनता की लड़ाई है और उसे अपने देश तथा आजादी के लिये लड़ना चाहिये। भारत की रक्षा करने में ब्रिटेन की दिलचस्पी केवल इतनी ही है कि भारत अंगरेजों की आगामी पीढ़ी के लिये सुरक्षित रहे। पर यदि भारत भारतीयों के लिये नहीं है तो यह लड़ाई जनता की लड़ाई कैसे कही जायेगी ?

अंत में आपने लोगों को इस बात से सावधान किया कि इस बार का आन्दोलन बहुत ही कड़ा होगा। केवल जेल जाने की बात न होगी। हमारा ध्येय जापान द्वारा हमारे ऊपर आक्रमण करने के पहले ही स्वतंत्रता प्राप्त कर लेना है ताकि यदि जापान आक्रमण करे तो उससे लड़ा जाय। आन्दोलन केवल कांग्रेसी लोगों तक ही सीमित न रहेगा वह अपने को भारतीय कहने वाले सभी लोगों को अपने दायरे में खींच लेगा। आन्दोलन में अहिंसात्मक विरोध के सभी पहलू रहेंगे।

आ० भा० कांग्रेस कमेटी में प्रस्ताव पास

८ अगस्त को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव को भारी बहुमत के पास किया। केवल १३ सदस्यों ने विरोध में वोट दिया। प्रस्ताव पर बड़ी गरमागरम बहस चली, कई संशोधन आये किन्तु वे बहुधा गिर गये। प्रस्ताव इस प्रकार है—

"अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने कार्यसमिति के १४ जुलाई १९४२ के प्रस्ताव और बाद की घटनाओं पर, जिनमें युद्ध की घटनावाली, बृटिश सरकार के जिम्मेदार वक्ताओं के भाषण और भारत तथा विदेशों में की गई अलोचनाएं सम्मिलित हैं, अत्यन्त सावधानी के साथ विचार किया है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी उस प्रस्ताव को स्वीकार करती है और उसकी राय है कि बाद की घटनाओं ने इसे और भी औचित्य प्रदान कर दिया है और इस बात को स्पष्ट कर दिखाया है कि भारत में बृटिश शासन का तात्कालिक अन्त, भारत के लिए और मित्रराष्ट्रों के आदर्श की पूर्ति के लिए, अत्यन्त आवश्यक है। इस शासन का स्थायित्व भारत की प्रतिष्ठा को घटाता और उसे दुर्बल बनाता है और अपनी रक्षा करने तथा विश्व स्वातंत्र्य के आदर्श की पूर्ति में सहयोग देने की उसकी शक्ति में क्रमिक ह्रास उत्पन्न करता है।

"अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने रूसी और चीनी मोर्चों पर स्थिति के बिगड़ने को निराशा के साथ देखा है और यह रूसियों और चीनियों की उस वीरता की भूरि भूरि प्रशंसा करती है, जो उन्होंने अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करने में प्रदर्शित की है। जो लोग स्वतन्त्रता के लिये प्रयत्न कर रहे हैं और आक्रमण के शिकार हुए व्यक्तियों से सहानुभूति रखते हैं उन सबको नित्य बढ़ता जाने वाला ख़तरा उस नीति की परीक्षा करने के लिए बाध्य करता है जिसका मित्रराष्ट्रों ने अभी तक अवलम्बन किया है और जिसके कारण बारम्बार भीषण असफलताएं हुई हैं। ऐसे उद्देश्यों, नीतियों और प्रणालियों पर आरूढ़ बने रहने से असफलता सफलता में परिणत नहीं की जा सकती, क्योंकि पिछले अनुभव से प्रकट हो चुका है कि असफलता इन नीतियों में निहित है। ये नीतियाँ स्वतन्त्रता पर आधारित नहीं की गई हैं बल्कि परा-

धीन और औपनिवेशिक देशों पर प्रभुत्व रखने और साम्राज्यवादी परम्परा और तरीकों को क़ायम करवाने के लिये हैं। साम्राज्य का कायम करवाना शासन शक्ति की ताकत को वढ़ाने के वजाय एक अभिशाप शिद्ध हुआ है। हिन्दुस्तान जो कि आधुनिक साम्राज्य-वाद का जीता जागता नमूना है इस समस्या का मुख्य बिन्दु वन गया हैं क्योंकि भारत की आज़ादी के आधार पर ही ब्रिटेन और मित्र राष्ट्रों की परीक्षा होगी और एशिया और अफरीका के लोगों में आशा और उत्साह का संचार होगा।

"इस प्रकार इस देश में अंगरेजी राज को खत्म करने का सवाल एक महत्वपूर्ण और जरूरी सवाल है जिस पर युद्ध का भविष्य और आजादी तथा लोकतंत्र की सफलता निर्भर करती है। आजाद भारत अपने महान साधनों को नाजीवाद फासिस्टवाद और साम्राज्यवाद विरोधी लड़ाई में झोंक कर विजय को निश्चित कर देगा। इसका न केवल भौतिक रूप से युद्ध के भविष्य पर असर पड़ेगा वल्कि वह तमाम पराधीन और जीवित मानवता को मित्रराष्ट्रों के पक्ष में खड़ा कर देगा और उन राष्ट्रों को जिनका भारत साथी होगा दुनिया का नैतिक और आध्य-त्मिक नेतृत्व प्रदान कर देगा। पराधीन भारत बृटिश साम्राज्यवाद का चिह्न बना रहेगा और साम्राज्यवाद का कलंक तमाम मित्रराष्ट्रों के भविष्य पर असर डालेगा।

"अतः आज जो खतरा है वह भारत की आजादी और अंग्रेजी प्रभुत्व के अंत को जरूरी बना देता है। भविष्य के वादों तथा गारं-टियों से मौजूदा स्थिति पर असर नहीं पड़ सकता था। उस ख़तरे का मुकाबिला नहीं किया जा सकता। उनसे जनता के दिलों पर जरूरी मनोवैज्ञानिक असर नहीं पड़ सकता। सिर्फ आजादी की लहर ही लाखों आदमियों की उस शक्ति और उत्साह को जागृत कर सकती है जो फौरन युद्ध के स्वरूप को बदल देगी।

"अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी अंगरेज की सत्ता के हिन्दुस्तान से हट जाने की मांग को अपने पूरे जोर के साथ दुहराती है। भारत की स्वतंत्रता की घोषणा होने के बाद एक अस्थायी सरकार बनाई जायेगी और आजाद भारत मित्र राष्ट्रों का मित्र बन जायेगा और आजादी की लड़ाई के संयुक्त उद्योग में उनकी मुसीबतों और कष्टों में हिस्सा बटायेगा। अस्थायी सरकार देश की मुख्य पार्टियों और दलों के सहयोग से ही बनाई जा सकती है। इस तरह वह संयुक्त सरकार होगी और भारत के सभी महत्वपूर्ण दलों की प्रतिनिधि होगी। उसका मुख्य काम होगा भारत की रक्षा करना और आक्रमण का मुकाबला करना। वह मित्रराष्ट्रों के साथ सहयोग करती हुई अपनी तमाम सशस्त्र और अहिंसक शक्तियों से ऐसा करेगी।वह खेतों और कारखानों में तथा अन्यत्र काम करने वाले मजदूरों की भलाई और तरक्की की कोशिश करेगी जिनके हाथों में तमाम सत्ता और अधिकार होने चाहिये।

"अस्थायी सरकार विधान सम्मेलन की योजना बनायेगी, जो भारत सरकार का सब वर्गों को मान्य होने वाला विधान बनायेगा। यह विधान कांग्रेस के दृष्टिकोण के अनुसार संघात्मक होना चाहिये और वह उसमें शामिल होने वाले प्रान्तीय अंगों को अधिक से अधिक स्वतंत्रता देगा और अवशिष्ट अधिकार भी उन्हीं हाथों में रहेंगे। मित्रराष्ट्रों और भारत के भावी संबंध इन स्वतंत्र अंगों के प्रतिनिधि पारस्परिक लाभ और आक्रमण का प्रतिरोध करने के अपने समान कार्य की दृष्टि से तय करेंगे। आजादी भारत को आक्रमण का सफल प्रतिरोध करने के योग्य बनायेगी क्योंकि जनता की संयुक्त इच्छा और शक्ति उसके पीछे होगी।

भारत की आजादी विदेशी गुलामी में पड़े हुये तमाम एशियाई राष्ट्रों की आजादी का चिह्न और पूर्व भूमिका होगी। बर्मा, मलाया, इंडोचीन डच ईस्ट इन्डीज, ईरान और इराक देशों को भी उनकी

पूर्ण आजादी मिलनी चाहिये। यह साफ समझ लिया जाना चाहिये कि इनमें से जो देश इस समय जापान के अधीन हैं, उन्हें बाद में किसी दूसरी औपनिवेशिक ताकत के शासन या नियंत्रण में नहीं रखा जायेगा।

"इस खतरे की घड़ी में यद्यपि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी मुख्यतः भारत की स्वाधीनता और रक्षा से सरोकार रखती है, कमेटी की राय है कि भावी शान्ति, सुरक्षा और संसार की व्यवस्थित उन्नति के लिये आजाद राष्ट्रों का विश्व संघ कायम होना चाहिये। और किसी प्रकार से आधुनिक संसार की अवश्यकताओं को हल नहीं किया जा सकता। इस प्रकार का विश्वसंघ उनके अंगभूत राष्ट्रों की आजादी को सुरक्षित कर देगा, एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र के शोषण और आक्रमण को रोक देगा, राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों को संरक्षण देगा, पिछड़े हुये देशों और लोगों की तरक्की करेगा और सबके समान हित के लिये दुनिया के साधनों का संग्रह संभव बनायेगा।

"इस प्रकार के विश्वसंघ की कल्पना के बाद सब देशों में निरस्त्रीकरण सम्भव हो जायेगा और विश्व-संघ की रक्षासेना विश्व-शान्ति की रक्षा करेगी तथा आक्रमण को रोकेगी। "आजाद भारत ऐसे विश्व-संघ में खुशी से शामिल होगा और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का हल करने में दूसरे देशों के साथ बराबरी के आधार पर सहयोग करेगा। ऐसे संघ के द्वार उन सब देशों के लिए खुले होने चाहिए जो उसके आधारभूत सिद्धान्तों से सहमत हों। किन्तु युद्ध के कारण संघ शुरु में जरूरी तौर पर मित्रराष्ट्रों तक सीमित रहेगा। ऐसा कदम यदि इस समय उठाया गया तो उसका युद्ध पर, धुरी राष्ट्रों की जनता पर और आने वाली शान्ति पर जबरदस्त असर पड़ेगा। किन्तु कमेटी अफसोस के साथ महसूस करती है कि युद्ध के दुःख जनक और भारी परिणामों में और

दुनिया के सिर पर खतरों के मंडराने के बावजूद कुछ देशों की सरकारें अभी विश्व-संघ की दिशा में यह अनिवार्य कदम उठाने को तैयार नहीं हैं। ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रिया और विदेशी अखबारोंकी गुमराह आलोचना से भी यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत की आजादी की सीधी सी मांग का भी विरोध किया जा रहा है, हालां कि मौजूदा खतरे का सामना करने और अपनी रक्षा करने के लिए हिन्दुस्तान को समर्थ बनाने और चीन तथा रूस को उनकी जरूरत की घड़ी में मदद पहुँचाने की दृष्टि से ही मुख्यतः इस मांग को पेश किया गया है। कमेटी चीन अथवा रूस की रक्षा में किसी तरह बाधा न डालने को उत्सुक है, क्योंकि इन देशों की आजादी बहुमूल्य है और उसकी रक्षा की जानी चाहिए। कमेटी मित्रराष्ट्रों की रक्षा शक्ति में भी किसी तरह का विघ्न नहीं डालना चाहती। किन्तु भारत और मित्रराष्ट्रों दोनों को खतरा बढ़ रहा है और इस मौके पर निष्क्रियता और विदेशी शासन तन्त्र की आधीनता न केवल भारत को गिरा रही है तथा उसकी रक्षा करने की और आक्रमण का मुकाबला करने की शक्ति को घटा रही है, बल्कि वह बढ़ते हुए खतरे का कोई जवाब ही नहीं है। ब्रिटेन और मित्रराष्ट्रों के नाम कार्य समिति की हार्दिक अपील का अभी तक कोई अनुकूल उत्तर नहीं मिला है और अनेक विदेशी हल्कों में जो आलोचना हुई है वह भारत की और दुनिया की जरूरत से अनभिज्ञता सूचित करती हैं। उससे कभी कभी भारत की आजादी के विरोध की भी ध्वनि निकलती है जो प्रभुत्व और जातीय श्रेष्ठता की मनोवृत्ति प्रकट करती है जिसको एक स्वाभिमानी कौम, जिसे अपनी शक्ति और अपने उद्देश्य के औचित्य का ध्यान है, सहन नहीं कर सकती।

"अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी इस अन्तिम समय में विश्व स्वतन्त्रता के हितार्थ एक बार फिर ब्रिटेन व मित्रराष्ट्रों के सामने

यह अपील रखती है। लेकिन कमेटी महसूस करती है कि अब राष्ट्र को एक ऐसी साम्राज्यवादी सरकार के खिलाफ अपनी आवाज उठाने से अधिक रोकना न्यायसंगत नहीं है, जो उस पर प्रभुत्व जमाये हुए है और मानवता के हित के काम करने से रोके हुए है। कमेटी इस लिये भारत की स्वतन्त्रता व स्वाधीनता के अधिकार को स्वीकार कराने के निमित्त एक बड़े पैमाने पर अहिन्सात्मक सामूहिक आन्दोलन आरम्भ करने को इजाजत देती है, ताकि देश उस समस्त अहिंसात्मक शक्ति का प्रयोग कर सके जो कि उसने विगत २२ वर्षों के शांतिपूर्ण संग्राम में संचय की है। इस प्रकार का आन्दोलन महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलना चाहिए. अतः कमेटी गांधी जी से प्रार्थना करती है कि वह देश का पथ प्रदर्शन करें।

"कमेटी भारतीय जनता से अपील करती है कि वह उन ख़तरों व मुसीबतों का उत्साह व सहिष्णुता के साथ सामना करें जो कि उनके भाग्य में लिखें है और महात्मा गांधी के नेतृत्व के अधीन संगठित होकर भारतीय स्वतन्त्रता के अनुशासित सैनिकों की तरह उनकी हिदायतों पर चलें। उन्हें यह स्मरण रहे कि इस आन्दोलन का आधार अहिंसा है। एक समय ऐसा भी आ सकता है, जब कि हिदायतों का जारी करना या उनका हमारे लोगों के पास पहुँचना सम्भव न हो और कांग्रेस कमेटियां काम न कर सकें। जब ऐसा हो जाय तो इस आन्दोलन में भाग लेने वाले प्रत्येक स्त्री व पुरुष को स्वयं आम हिदायतों के अन्दर काम करना चाहिए। प्रत्येक भारतीय को, स्वयं अपना पथ-प्रदर्शक होना चाहिये और कठोर मार्ग पर जहां कोई विश्राम करने की जगह नहीं है और जो अन्त में भारत की स्वतंत्रता व मुक्ति पर ले जाता है, आगे बढ़ते रहना चाहिये।

"अन्त में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी यह स्पष्ट कर देना

चाहती है कि कमेटी एक सामूहिक संघर्ष आरंभ करके अकेली कांग्रेस के लिए सत्ता प्राप्त करने का इरादा नहीं रखती। शासन-सत्ता, जब मिलेगी भारत के समस्त राष्ट्र के लिए होगी।"

महात्मा गांधी का अन्तिम सन्देश

प्रस्ताव पास हो जाने पर महात्मा गांधी ने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में फिर भाषण दिया। आपने कहा कि आन्दोलन शुरू करने के पहले वायसराय से मिलने का प्रत्येक प्रयत्न करूँगा। समस्त भारतीयों को लक्ष्य करते हुये आपने कहा कि वे अपने को स्वतंत्र व्यक्ति समझना शुरू कर दें। भारतीय नरेशों के कहा कि वे अपनी प्रजा के संरक्षक बनें, स्वेच्छा चारी न बनें। सरकारी कर्मचारियों के संबंध में महात्मा जी ने कहा कि उन्हें फौरन इस्तीफा दे देने की जरूरत नहीं है, लेकिन उन्हें सरकार को यह लिख देना चाहिये कि वे कांग्रेस के साथ हैं। अध्यापकों और विद्यार्थियों से आपने कहा कि वें मैदान में निकल आने के लिये तैयार रहें।

सरकार को गहरी चिंता

उधर बम्बई में अ० भा० कांग्रेस कमेटी की बैठक हो रही थी, इधर दिल्ली में वायसराय की कौंसिल की बैठकें हो रहीं थीं। कौंसिल की बैठकें घंटों तक होती रहतीं और कभी कभी तो रात के १२, १ बचे तक होती रहतीं। बम्बई की राजनीतिक घटनाओं तथा वहां होने वाले भाषणों के प्रति सरकार बड़ी सतर्क थी। बड़े पैमाने पर अहिंसात्मक सामूहिक आन्दोलन से जो गांधी जी की देख देख में होने वाला था, सरकार काफी भयभीत हो चुकी थी।

एकाएक ८ अगस्त १९४२ को भारत सरकार ने एक आज्ञा जारी करके यह रोक लगाई कि कोई भी मुद्रक समाचार पत्रों को प्रकाशक अथवा संपादक ऐसी घटना के समाचार, जिसमें इस कमेटी में सर्व साधारण द्वारा दिये गये भाषणों की रिपोर्ट अथवा वक्तव्य भी आते हैं, को मुद्रित अथवा प्रकाशित न करें जो अ० भा० कांग्रेस कमेटी द्वारा स्वीकार किये गये जन आन्दोलन अथवा सरकार द्वारा उसको रोकने के लिये किये गये उपायों से सम्बन्ध रखते हैं।

सूचना

कांग्रेस की ओर से वार वार ब्रिटेन से सहयोग करने का आश्वासन दिया गया था किन्तु ब्रिटेन को कांग्रेस की न्यूनतम मांग भी स्वीकार करने की क्षमता नहीं थी। अ० भा० कांग्रेस कमेटी में अहिंसात्मक व्यापक आन्दोलन का प्रस्ताव पास हो जाने पर भी महात्मा जी ने तत्काल आन्दोलन आरंभ करने की आज्ञा नहीं दी वल्कि कहा कि वायसराय को अंतिम पत्र लिखेंगे और उसके उत्तर की एक पखवारे तक प्रतीक्षा करेंगे। किन्तु सरकार को धीरज बिलकुल नहीं था। भारत सरकार तो परेशान थी ही, ब्रिटिश सरकार भी आंतकित हो उठी।

कांग्रेस पर कुठाराघात

९ अगस्त को सवेरे ६ वजे से भी पहले महात्मागांधी, मौ० आजाद, सरदार पलेट, पं० जवाहरलाल नेहरू तथा श्रीमती सरोजनी नायडू आदि कांग्रेस के कर्णधार वंबई में गिरफ्तार कर लिये गये। वंबई के लगभग २० स्थानीय कार्यकर्ता जिनमें वंबई प्रान्तीय कमेटी के उच्च पदाधिकारी तथा वंबई एसेंवली के स्पीकर श्री मालवंकर भी थे गिरफ्तार कर लिये गये। नगर में पुलिस का पहरा कड़ा कर दिया। ९ अगस्त को ही क्रिमिनल ला एमेंडमेंट ऐक्ट के अनुसार कांग्रेस वर्किंग कमेटी और अखिल

भारतीय कांग्रेस कमेटी गैर कानूनी घोषित कर दी गई। युक्त प्रान्त, मध्यप्रान्त और उड़ीसा के गवर्नरों और दिल्ली के चीफ़ कमिश्नर ने अलग अलग आज्ञा निकाल कर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, कांग्रेस वर्किंग कमेटी तथा प्रान्तीय, जिला. कस्बा हल्का और मंडल कांग्रेस कमेटियों को अनियमित घोषित किया। दूसरे, तीसरे दिन तक भारतवर्ष की समस्त कांग्रेस कमेटियां अवैध करार दी गईं। उनके दफ़्तरों पर ताले लगा दिये गये। कांग्रेस के नेताओं के नाम वारंट जारी किये गये और वे पकड़ पकड़ कर जेलों में बंद किये जाने लगे।

अध्याय १

क्रान्ति का विकास

नेताओं की गिरफ्तारी पर असंतोष

महात्मा गांधी, मौलाना अबुल कलाम आजाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल, पं० जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती सरोजनी नायडू तथा कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी के अन्य सदस्य वंबई में ९ अगस्त १९४२ को लगभग ६ वजे सवेरे गिरफ्तार कर लिये गये। यह समाचार वलिया में उसी दिन संध्या समय रेडियो पर सुना गया। १० अगस्त को सवेरे दैनिक पत्रों के देखने से पता चला कि ९ को ही वंबई के लगभग २० कांग्रेस कार्यकर्ता विला वजह गिरफ्तार किये गये हैं। वर्किङ्ग कमेटी के सदस्य कतिपय अन्य प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ स्पेशल ट्रेन में विठा कर ले जाये गये हैं जो संभवतः पूना को गई है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के पंडाल के सामने जो कांग्रेस स्वयं सेवक और देश सेविकायें झंडाभिवादन करने के लिये आईं उन्हें डंडों से मार मार कर भगा दिया गया। पुलिस ने झंडा उतार लिया और लगभग १ दर्जन स्वयं सेवकों को गिरफ्तार भी किया। नगर में जहां तहां पुलिस को उत्तेजित भीड़ से मुठभेड़ हुई जिसमें पुलिस के ३४ सिपाहियों और ११ अफसरों को चोट आई। नगर में ७॥ वजे संध्या से ६ वजे सवेरे तक करफ्यू आर्डर लगा दिया गया। सभाओं और जुलूसों पर रोक लगा दी गई।
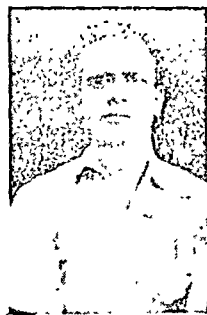
श्री सूरजप्रसाद [वलिया] पृष्ठ १६२

बलिया चौक जहाँ ७ नवयुवक नंगा करके पीटे गये थे

सूर्यनारायण मिश्र [रेवती]

श्री रामधारी सिंह [झरकटहा]

समाचार पत्रों के पढ़ने से यह भी पता चला कि कांग्रेस के सभी अग्रगण्य नेताओं की गिरफ्तारी की आज्ञा जारी कर दी गई है। बंबई तथा अहमदाबाद आदि नगरों के कारबार एकदम ठप हो गये। यद्यपि नेताओं की गिरफ्तारी की आशंका सब को थी किन्तु कोई यह नहीं सोच सकता था कि सरकार एकाएक इतना खतरनाक कदम उठायेगी। पुलिस ने ८ अगस्त को ही अहमदाबाद कांग्रेस भवन पर अधिकार कर लिया था। युक्त प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के लखनऊ वाले दफ्तर की तलाशी हुई और उस पर ताला पड़ गया। धीरे धीरे स्थान स्थान से कांग्रेसी नेताओं की गिरफ्तारी के समाचार आने लगे।

हड़ताल करने मे विद्यार्थी आगे ही रहते हैं। देश भर में स्कूलों और कालेजों में हड़ताल हुई। लड़कों ने जुलूस निकाले। कहीं कहीं उनकी पुलिस से मुठभेड़ हुई और कुछ ईंट पत्थर चले।

क्रान्ति का आरंभ

बलिया जिले के अन्दर कांग्रेस के कर्णधारों की गिरफ्तारी का समाचार बिजली की तरह फैला। १० अगस्त तक कानों कान सब लोगों तक यह दुखद समाचार पहुँच गया। जिले के अन्दर जितने भी अंग्रेजी स्कूल थे, सबके सब प्रायः बंद हो गये। अधिकतर विद्यार्थियों ने हड़ताल कर दी, जुलूस निकाले और नारे लगाये। 'भारत छोड़ो', 'स्कूल छोड़ो'. 'कालेज छोड़ो' और 'कांग्रेसी नेताओं को छोड़ो' के नारे प्रायः दिन भर शहर की सड़कों पर सुने जाने लगे।*

---

* नकल कानफिडेन्शल डायरी बलिया कोतवाली :—

तारीख २९ नवंबर १९४२ ई०

अरज है कि मुख्तसरन इन वाकयात की कैफियत यह है कि इस जिले में कांग्रेसी सरगरमी अव्वलन १०. अगस्त १९४२ ई० से लड़कों के जुलूसों से शुरू हुई।

कांग्रेस के कर्णधारों अथवा स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं का कोई आदेश विद्यार्थियों अथवा कांग्रेस के उन कार्यकर्ताओं को जो जेल के बाहर थे नहीं मिला। ऐसी परिस्थिति में नेताओं की गिरफ्तारी पर असंतोष प्रदर्शित करने के अतिरिक्त जनता के सामने कोई चारा न था। असंतोष प्रकट करने का सब से सरल तथा अहिंसात्मक मार्ग हड़ताल है। विद्यार्थियों ने १० अगस्त को एक जुलूस निकाला और नगर में हड़ताल की घोषणा की। दुकानें बात की बात में बंद हो गईं। ऐसा लगता था मानो दुकानदार स्वयं हड़ताल करने को तैयार हों।

जुलूस स्कूलों में गया। कुछ विद्यार्थी स्कूल छोड़ कर निकल आये और कुछ पढ़ते रहे। स्कूल में आये हुये बच्चों पर प्रिंसिपल, हेडमास्टर तथा अध्यापकों का नियंत्रण कड़ा था। कस्बे के स्कूलों के अध्यापकों को स्थानीय अधिकारियों द्वारा धमकी दी गई थी। वे अपनी ओर से बड़े मुस्तैद रहने लगे।

डी० ए० वी० स्कूल बिलथरा रोड १० अगस्त को स्कूल के अधिकारियों की ओर से बंद कर दिया गया। उसके बाद बाहर से तरह तरह की सनसनी पूर्ण खबरों के प्राप्त होने पर उक्त स्कूल के विद्यार्थियों ने हड़ताल कर दी। खूबी यह है कि वे घर से स्कूल प्रतिदिन आते थे। स्कूल के मैदान में सभा करते, बाजार में जुलूस निकालते और घूम फिर कर घर चले जाते थे।

११ अगस्त को लगभग ९ बजे से बलिया शहर के स्कूलों के विद्यार्थियों तथा नागरिकों का एक वृहत् जुलूस शहर की परिक्रमा करता हुआ चौक में आया। करीब २० हजार जनता के सामने जिला कांग्रेस कमेटी के प्रधान मंत्री पं० राम अनन्त पांडे ने लगभग १॥ घंटे तक भाषण दिया। उन्होंने बतलाया कि नेताओं की यह गिरफ्तारी हमारे लिये चुनौती है। अंगरेजी सरकार ने

हमसे लड़ाई ठान ली है, हमें लड़ना ही होगा। हम तब तक चैन लें जब तक अंगरेजी हुकूमत को नष्ट न कर दें।

जन समूह ने इस आह्वान को ध्यान से सुना और हृदय से स्वीकार किया। सभा भंग होने पर जुलूस सरकारी कचहरियों को बंद कराने के लिये बढ़ा। बात की बात में कचहरियों पर ताले पड़ गये। १९२० से लेकर अब तक बलिया की कचहरियों में ऐसी हड़ताल नहीं हुई थी। उसी दिन पं० राम अनन्त पांडे गिरफ्तार कर लिये गये। १२ अगस्त को फिर विद्यार्थियों का एक बहुत बड़ा जुलूस दिन को लगभग १० बजे शहर में घूमता हुआ कचहरियों की ओर बढ़ ही रहा था कि रेलवे गुमटी के पास जहां कच्ची सड़क रेलवे लाइन को काटती है, १०० हथियार बंद पुलिस ने उसे रोका। पुलिस के साथ बलिया के परगना हाकिम मि० ओवेस थे। जुलूस ने रुकने से इनकार किया। फिर क्या था ? पुलिस ने लाठी चार्ज शुरू कर दिया। विद्यार्थी भी मानने वाले न थे। रेलवे लाइन पर पड़े हुये कंकड़ों को उठा कर उन्होंने फेंकना शुरू किया। दोनों ओर के कई आदमी घायल हुये। इसके बाद भगदड़ मची। अधिकतर विद्यार्थी तो आगे बढ़ आये और कचहरी को बन्द कराया किन्तु जो थोड़े के विद्यार्थी पुलिस के घेरे में पड़ गये उनकी बड़ी दुर्गति हुई। एक एक विद्यार्थी को पकड़ पकड़ कर खूब पीटा गया। फिर उसी दिन लगभग आधी रात के समय विद्यार्थी नेताओं की गिरफ्तारी शुरू हुई। सवेरा होते होते लगभग ३० विद्यार्थी पकड़े जा चुके थे। इनमें से कुछ को मारपीट कर कोतवाली से ही छोड़ दिया गया और कुछ को जेल में बंद कर दिया गया। विद्यार्थी जिद पर थे। उन्होंने १३ को भी जुलूस निकाला। शहर की दुकानें तो बंद हो गईं किन्तु कचहरियों में पूरी हड़ताल न हो पाई। ऐसी हड़ताल

कब तक चलेगी और इनका क्या अंत होगा, इन प्रश्नों का उत्तर देना उन दिनों सरल न था।

मि० एमरी का रेडियो भाषण

१२ अगस्त के समाचार पत्रों में कांग्रेसी नेताओं की गिरफ्तारी तथा कांग्रेस के प्रति की गई कार्रवाइयों की सफाई देते हुए भारत सचिव मि० एल० एस० एमरी का निम्न लिखित भाषण जो उन्होंने रेडियो पर दिया प्रकाशित हुआ :—

"भारत सरकार ने दृढ़ता पूर्वक समयोचित कार्रवाई करके भारत और मित्र राष्ट्रों के हितों की भीषण बर्बादी से रक्षा की है। संभव है ऐसा करने में कुछ उपद्रव हो। यद्यपि अभी इस विषय में निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता किन्तु मेरा विश्वास है कि ऐसा उपद्रव न होगा जिसे भारत सरकार पुलिस और अदालत द्वारा दबा न सके।

"यदि कांग्रेस का कार्यक्रम सफल हो जाता तो यह उन सारे भारतीय, ब्रिटिश, अमेरिकन और चीनी बहादुर सिपाहियों के लिये, जो भारतीय भूमि पर भारत की रक्षा में लगे हैं और शत्रु पर आक्रमण करने के लिये भारत को आधार बनाने की तैयारी कर रहे हैं, सब से बढ़ कर अहितकर बात होती।

"ब्रिटेन के प्रस्तावों के (कांग्रेस द्वारा) ठुकराये जाने पर भारतीय जनमत को घोर निराशा हुई है। इससे कांग्रेसी नेताओं पर से एतबार जोरों में उठता जा रहा है। इस स्थिति में महात्मा गांधी ने सरकार के विरुद्ध खुली कार्रवाई करने की ठानी है ताकि उससे व्यापक रूप में रोष उत्पन्न हो और उनके (महात्मा गांधी) तथा उनके सहयोगियों के स्वत्व जो जाते रहे हैं, फिर से प्राप्त हो जायँ। ऐसा करके वे तथाकथित ब्रिटिश दमन के जबरदस्त विरोधी कहला कर अपनी ओर जनता का ध्यान आकर्षित करायेंगे। उनकी अंतिम कार्रवाई का बस यही सार है।

"कांग्रेसी नेता इस बात को अच्छी तरह समझ रहे हैं कि वर्तमान शासन का अन्त विप्लव किये बगैर हो सकता है। अगर उनका यह विश्वास था कि विधान संगत सरकार बनाई जाय, तो सब से अच्छा तरीका यह था कि भारत को पहले से ही बता दिया जाता कि उसका धन धान्य किसे सौंपा जाय।

"वास्तव में इस बात की चिंता नहीं है कि उनकी मांगें पूरी नहीं की जा सकतीं, किन्तु चिन्ता इस बात की है कि कांग्रेस ने कार्रवाई करने की ठानी है और कुछ समय से उसके लिये तैयारी होती आई है।

"ऐसी कार्रवाई के अंतर्गत उद्योग धंधों, वाणिज्य व्यवसाय, शासन, कानूनी अदालत और जनोपयोगी विभागों में हड़ताल कराना, टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार काटना तथा सेनाओं और सेना की भर्ती करने वाले केन्द्रों पर धरना देना है।

"इससे सारे कार्य कलाप रुक जायेंगे। यह चीन और रूस के प्रति धोखा होगा। इससे भारत जापानियों का गुलाम बनेगा।

सरकार ने केवल इतना ही किया है कि उसने महात्मा गांधी और उनके सहयोगियों को (जनता से) अलग कर दिया है। इस प्रकार तोड़ फोड़ के उग्र प्रवर्तकों को उन समस्त आग्नेय और विस्फोटक साधनों से, जिन्हें वे सारे भारत वर्ष में भड़काना चाहते थे, पृथक कर दिया है।"

एमरी के भाषण से मार्ग निर्देश

मि० एमरी का रेडियो भाषण क्या आया एक बड़ी भारी उलझन दूर हुई। अब तक लोग असमंजस में पड़े थे कि क्या करें, क्या न करें। नेताओं ने कोई कार्यक्रम दिया नहीं था, स्थानीय नेता प्रायः सब के सब जेलों में थे। एमरी के भाषण को लोगों ने समाचार पत्रों में बड़ी दिलचस्पी के साथ पढ़ा। कांग्रेस के नाम पर जो आदेश दिये गये थे उन्हें वस्तुतः लोगों ने

कांग्रेस का आदेश समझा। एमरी ने स्वयं अपने भाषण में उपद्रव की आशंका की थी। उपद्रव को शान्त करने के लिये एमरी ने पुलिस और अदालतों का उल्लेख किया था, इसे जनता ने चुनौती समझ कर स्वीकार किया। मित्रराष्ट्रों द्वारा भारत को युद्ध का आधार बनाने का विरोध महात्मा जी के लेखों में हो चुका था। मि० एमरी को आशंका थी कि उद्योग धंधों के केन्द्रों तथा जनोपयोगी संस्थाओं में हड़ताल तथा तोड़ फोड़ के कामों से सरकार के कार्य कलाप रुक जायेंगे, तो क्यों न ऐसा कर दिखाया जाय–यह भावना सर्व साधारण के हृदय में बैठ गई। देश उन दिनों वस्तुतः आग्नेय हो चला था। भारत हर मानी में बारूद खाना बना हुआ था। मि० एमरी ने समझा कांग्रेस के कर्णधारों को जनता के बीच से हटा देने से, विस्फोट न होगा। यदि एमरी ने भाषण न दिया होता तो संभव है विस्फोट न हुआ होता। मि० एमरी द्वारा प्रमाणित कांग्रेस के आदेशों को लोगों ने श्रद्धा और भक्ति के साथ कांग्रेस का आदेश समझा। मि० एमरी ने जहां यह कहा कि कांग्रेस में कुछ समय से तैयारी होती आई है, इस संबंध में इतना अवश्य कहा जा सकता है कि कम से कम बलिया जिले में अहिंसात्मक रूप से संगठन कार्य चल रहा था। सरकारी इमारतों में आग लगाने अथवा टेलीग्राफ़ और टेलीफ़ोन के तार और खंभों को तोड़ने की कल्पना बलिया की जनता के विचार में आन्दोलन के पहले कभी आई तक नहीं थी।

कांग्रेस का संगठन और पुलिस की सतर्कता

१९४१ के व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन के राजनीतिक बन्दी, दो चार को छोड़ कर, सब के सब मार्च, १९४२ तक रिहा हो चुके थे। बलिया शहर और जिले के अन्दर स्थान स्थान पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं का जाल सा बिछा हुआ था। सरकार को उनसे डर था। उनकी गतिविधि की देखरेख सरकार

की ओर से होती रहती थी। ज़िले के अन्दर जितने भी कस्बे अथवा खास खास बाजार थे, वहां खुफिया विभाग के कर्मचारी नियुक्त कर दिये गये थे। उनका काम था मुनाफाखोरी और चोर बाजार पर कड़ी नजर रखना तथा कांग्रेस के कार्यकर्ताओं की गतिविधि का अवलोकन करना। उनकी दैनिक रिपोर्ट पास के थाने और जिले के पुलिस कप्तान के पास जाती थी।

द्वितीय महासमर जोरों पर चल रहा था। सरकार को रुपये की सख्त जरूरत थी। चन्दा वसूली जोरों पर चल रही थी और लोगों से बरबस रुपया वसूल किया जाता था। साथ ही साथ रंगरूटों की भर्ती का आन्दोलन भी चल रहा था। गाँव गाँव में भर्ती कराने वाले दलाल और फौजी आदमी वर्दी पहन कर घूमा करते थे। कांग्रेस जनों को युद्ध कार्य के लिये चन्दा वसूली तथा फौज में भर्ती संबंधी कार्यों से नैतिक विरोध था। भाषण करने की मनाही तो थी ही, कांग्रेस की ओर से भी उक्त योजनाओं का विरोध करने की कोई खुली आज्ञा व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन के बन्द हो जाने के बाद जारी नहीं की गई। १९४२ के मई के महीने में प्रयाग में जो कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी की बैठक हुई उसके बाद से वातावरण और भी क्षुब्ध हो चला था। छोटे से छोटे कांग्रेस कार्यकर्ता के भाषण की रिपोर्ट ली जाती और उस पर उचित कार्रवाई की जाती थी।

बलिया के कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने गाँव गांव घूम कर संगठन का काम करना शुरू किया। खुल कर किसी ने युद्धोद्योग में बाधा पहुँचाने का यत्न तो नहीं किया किन्तु भीतर ही भीतर चंदा वसूली और फ़ौज में भरती की योजनायें किसी को प्रिय न थीं। ज़िला कांग्रेस कमेटी की ओर से आजाद हिंद स्वयंसेवक दल की स्थापना हुई। इन स्वयं सेवकों का कर्तव्य जनता की सेवा करना था। गांव गांव में पहरे का इन्तजाम किया गया। इन दिनों चोरी और

डकैतियां बहुतायत से हो रही थीं, आवश्यकता भी ऐसे पहरेदारों की थी। सर्वश्री चीतू पांडे (प्रेसिडेंट जिला कांग्रेस कमेटी), राजेश्वर तिवारी, शिवपूजन सिंह और जगन्नाथ सिंह स्वयं सेवक दल के प्रमुख प्रवर्तकों में से थे। यद्यपि स्वयं सेवक दलों और ग्राम पंचायतों का उद्देश्य आंतरिक शांति स्थापित करना था फिर भी मई के अंत तक उपर्युक्त कार्यकर्ता किसी न किसी अभियोग में गिरफ्तार कर लिये गये। स्वयं सेवक दल का संगठन अब ठा० राधा मोहन सिंह, राधा गोविन्द सिंह और ठा० परमात्मानन्द सिंह के जिम्मे आया। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने सर्वसाधारण के जान माल की रक्षा के लिये ग्राम पंचायतों और स्वयं सेवक दलों का संगठन कर के जनता से जो घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित किया वह आगे चल कर बड़े काम का साबित हुआ।

इधर कांग्रेस जनों की ओर से प्रचार कार्य चल रहा था उधर सरकार एक एक कार्यकर्ता को जेलों में भरती जाती थी। जिले के शेष कार्यकर्ताओं के सम्बन्ध में अगस्त के प्रथम सप्ताह में सरकार का यह आदेश आया कि वे यथा संभव शीघ्र गिरफ्तार कर लिये जांय। कुल दो लिस्टें थीं। 'ए' लिस्ट में ठा० राधा मोहन सिंह और ठा० राम नरेश सिंह थे। उन्हें पहले गिरफ्तार करना था। 'बी' लिस्ट में ठा० राधा गोविन्द सिंह और ठा० परमात्मानन्द सिंह आदि १२ कार्यकर्ता थे।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के बम्बई वाले अधिवेशन के विषय में तरह तरह की बातें सुनी जाने लगी थीं। आसन्न संकट का सामना करने के लिये बलिया के पुलिस कप्तान ने ७ अगस्त को अपने बँगले पर जिले भर के पुलिस सब इन्सपेक्टरों की बैठक की और अपनी जानकारी के आधार पर कांग्रेस और सरकार की स्थिति का परिचय दिया। ऊपर से आई हुई दोनों लिस्टें पेश की गईं। कहा गया कि चूँकि अधिक ख़तरनाक कांग्रेसियों को पहले से ही

जेल भेजा जा चुका है, नई गिरफ्तारियां करने में कोई जल्दी न की जाय। हां, इनकी गतिविधि पर कड़ी नजर रहे और इनका पता ठिकाना अच्छी तरह लगा कर रखा जाय ताकि अगला आदेश प्राप्त होने पर वे यथा संभव शीघ्र गिरफ़्तार किये जा सकें। पुलिस कप्तान ने यह भी कहा कि मौक़ा आने पर मैं इन आदमियों की गिरफ़्तारी के विषय में आज्ञा भेजूँगा।

आखिर ९ अगस्त को लगभग १ बजे दिन में ठा० राधा-मोहन सिंह गिरफ़्तार कर लिये गये। गिरफ्तारी के समय एक अच्छी खासी भीड़ एकत्र हो गई। ठाकुर साहब को दो चार मिनट तक भाषण देने का अवसर मिला। भाषण में उन्होंने कहा कि इस गिरफ़्तारी को आप मुस्तकिल न समझें। कांग्रेस के आदेशानुसार आप अहिंसात्मक ढंग से यदि आन्दोलन चलायेंगे तो हम लोग एक पखवारे के अन्दर छूटेंगे।

इस बार जेल जाना किसी को अच्छा नहीं लगता था। देश-व्यापी गिरफ्तारी होते देखकर बलिया के जो भी छोटे मोटे कांग्रेसी नेता बच गये थे, या तो दबे पांव शहर से हट गये अथवा भाग कर कहीं दूर चले गये ताकि आसानी से गिरफ़्तार न हों। उन्होंने अपना कार्य-क्रम देहातों में जारी रखा।

बलिया के कोतवाल ने इन घटनाओं का इस प्रकार वर्णन दिया :—

९ अगस्त १९४२ को राधा मोहन सिंह, राधा गोविन्द सिंह, व परमात्मानन्द सिंह इलाका हाज़ा हल्क़ा में दफ़ा १२९ डी० आई० आर० गिरफ्तार हुये। दीगर थानेजात में भी दीगर दीगर लीडरान गिरफ़्तार हुये लेकिन फिर भी मुतहित लीडरान गिरफ़्तारी से अमूमन बच कर देहातों में काम करने और नावाकिफ लड़कों को अपने अगराज़ के लिये अपनी

तहरीक में शामिल करने चले गये और हुक्काम शहर को स्कूली लड़कों के जुलूस निकाल कर मसरूफ रखा। चित्तू पांडे व रामजी पहले ही से जेल में थे। देहातों में पहले ही से तयशुदा स्कीम और तैयार कर्दा प्रोग्राम के मातहत नावाकिफ़ पवलिक को उभार कर लूट मार करने और रेल तार उखाड़ने, डाकखानाजात लूटने फूंकने, गरज़े कि मुकम्मल बग़ावत पर आमादा कर लिया। अव्वलन उन्होंने रेल उखाड़ कर, तार तोड़ कर सड़कों और पुलों को खोद कर जुमला रास्ता मसरूर कर देने और उसके वाद फिर एके वाद दीगरे दिहात के थानाजात व चौकीजात व दीगर सरकारी मुहकमाजात की इमारतों को लूटना शुरू किया। किसी न किसी तरह उनको देहात में खातिरख्वाह कामयावी भी हासिल हो गई थी। उनके साथियों में और इजाफा होता रहा।*

तोड़ फोड़ का प्रारंभ

भारतसचिव मि० एमरी का ब्राडकास्ट कांग्रेस के कार्यक्रम के अनुरूप था अथवा नहीं, इस पर कांग्रेस के कार्यकर्ता एकमत नहीं थे। बाद को जो समाचार प्राप्त हुये उनसे विदित हुआ कि वंबई, अहमदावाद में जनता और पुलिस में जोरों का संघर्ष चल रहा है। लखनऊ, इलाहावाद और वनारस भी इस संघर्ष से अछूते न रहे। कालेज और युनिवर्सिटियां या तो सरकारी तौर पर बंद कर दी गईं अथवा विद्यार्थियों ने पढ़ना ही छोड़ दिया। लखनऊ, इलाहावाद, वनारस और पटना के विश्वविद्यालयों और कालेजों से जो विद्यार्थी वलिया आये उन्होंने यही समाचार दिया कि सरकारी यातायात के साधनों को तोड़ना फोड़ना, टेलीग्राफ और टेलीफोन के तारों को काटना, सरकारी इमारतों को नुकसान पहुँचाना तथा देश व्यापी हड़ताल

---

* कानफिडेन्शल डायरी वलिया कोतवाली तारीख २९ नवम्बर, सन् १९४२।
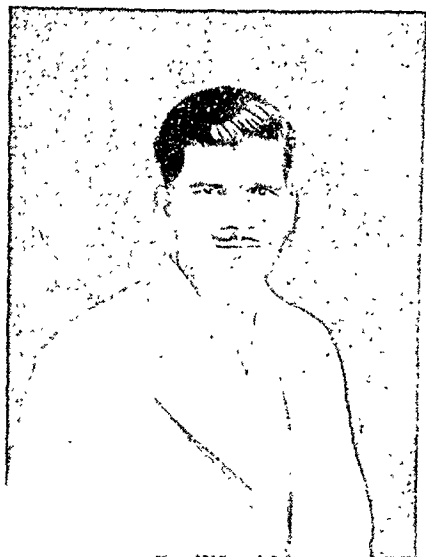
श्री देवनाथ उपाध्याय
[मलेजी]
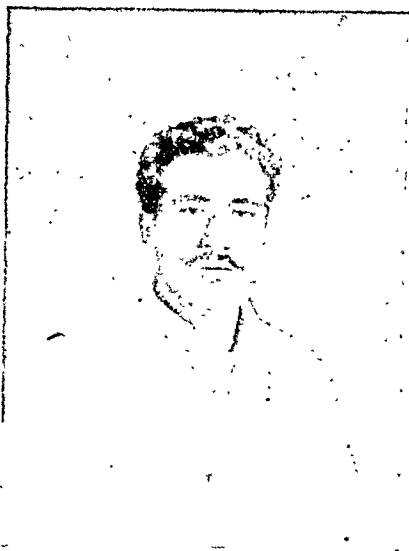
श्री राधाकृष्ण [सवान]

करना कांग्रेस के अधिकृत कार्यक्रम में सम्मिलित हैं। काशी विश्वविद्यालय के छात्र सर्व श्री पारस नाथ मिश्र, उमादत्त सिंह और केदारनाथ सिंह १२ अगस्त तक जिले के अन्दर आ गये। उनका प्रचार कार्य देख कर बाद को आने वाले कई विद्यार्थियों को स्टेशन पर ही गिरफ्तार कर लिया गया।

१३ अगस्त, १९४२ (वृहस्पतिवार) को बिल्थरा रोड स्टेशन के पास डंवर बाबा की परती पर एक मेला लगा था। हजारों की संख्या में ग्रामीण जनता वहां एकत्र थी। मेले में एक सभा हुई जिसमें श्री पारस नाथ मिश्र और श्री रामदेव जी के भाषण हुये। श्री पारस नाथ मिश्र ने जनता को आह्वान दिया कि अगले दिन सुबह सवेरे बिल्थरा रोड स्टेशन पर धावा बोला जाय।

बिल्थरा रोड में कांग्रेसी गाड़ी

१३ अगस्त की आधी रात को जो ट्रेन इलाहाबाद से बनारस होती हुई लगभग १ बजे रात को बिल्थरा रोड पहुँचने वाली थी वह १४ को लगभग ८ बजे सवेरे पहुँची। कौतूहल वश हज़ारों आदमी स्टेशन पर दौड़े गये। ट्रेन में सैकड़ों विद्यार्थी थे। उन्होंने कहा यह आजाद हिंद ट्रेन है। बिला टिकट के जो चाहे चढ़ सकता है और जहाँ चाहे उतर सकता है। एक विद्यार्थी ने उतर कर अपने भाषण में बिल्थरा रोड के निवासियों को कायर प्रमाणित करते हुये कहा कि यहां से दक्षिण के सारे स्टेशन जलाये जा चुके हैं। शरम की बात है कि यह स्टेशन अब भी खड़ा है। इसके बाद एक महिला ने जोश भरे शब्दों में कहा यहां के मर्द मर्द नहीं मालूम होते। वे जाकर चूड़ियां पहनें। वेश भूषा से मालूम होता था कि वह किसी कालेज में पढ़ रही थी। फिर एक लम्बे कद का आदमी उतरा। उसने कहा स्वराज हो चुका है। मैं पुलिस की नौकरी में था। इस्तीफा देकर घर जा रहा हूँ और अब कांग्रेसी राज में नौकरी करूंगा।

सेट फार्म पर एकत्र भीड़ ने समझा वास्तव में स्वराज्य हो चुका है। जब सब जगह के स्टेशन जलाये जा चुके हैं तो इस स्टेशन को भी जला डालना चाहिये। उस वक्त धीरे धीरे सब लोग वापस चले गये। पिछले दिन की सेले की सभा का कोई विशेष फल न निकला। एक तिरंगे झंडे के साथ श्री पारस नाथ मिश्र और श्री कपिल सिंह ७, ८ छोटे छोटे बच्चों के साथ डी० ए० वी० स्कूल में आये। स्कूल के सब लड़कों ने जुलूस बनाया। वह जुलूस मिडिल स्कूल पर गया। वहां के लड़के भी साथ हो लिये फिर जुलूस मुसलिम स्कूल पर आया। कुछ लड़के बाहर आये और जुलूस में शामिल हो गये। बाद को महाजनी स्कूल और प्राइमरी स्कूल के विद्यार्थी भी आ मिले। ज्यों ज्यों जुलूस स्टेशन की ओर बढ़ता गया उसमें अधिकाधिक संख्या में लोग मिलते गये। स्टेशन पर आक्रमण का समाचार पाकर देहात की जनता टूट पड़ी। स्टेशन से बाहर ऊपर ऊपर तार जाता था। स्कूली लड़के और अध्यापक अपने साथ डोरी लेते गये थे। कार्यक्रम पूर्व निश्चित था। डोरी तार पर फेंक दी गई। एक सज्जन डोरी पकड़ कर लटक गये। तार टूट गया और पास का खंभा जमीन से आ लगा। फिर क्या था लड़कों ने तार को टुकड़े टुकड़े काट डाला। भीड़ स्टेशन के अन्दर घुसी।

स्टेशन मास्टर तथा उनके सहयोगियों ने नाम मात्र का विरोध किया। स्टेशन के सारे कागजात एकत्र किये गये। मिट्टी का तेल भी एक कमरे में रखा मिला। तेल छिड़क कर आग लगा दी गई हां, स्टेशन के कर्मचारियों को किसी ने नहीं छेड़ा। वे अपनी चीजें लेकर चलते बने। सेफ़ खोलने पर नोटों का पुलिन्दा मिला। वह भी आग के सुपुर्द कर दिया गया। लगभग आधे घंटे में स्टेशन की इमारत जलकर गिर पड़ी।

पानी के पंप और टंकी तोड़ डाली गई। इसी बीच गोरखपुर की ओर से एक मालगाड़ी आई। स्टेशन के पास मालगाड़ी लूटी गई की लाइन चूंकि उखाड़ डाली गई थी. वह स्टेशन से लगभग १०० गज़ की दूरी पर खड़ी हो गई। भीड़ ने ड्राइवर को पकड़ा और उससे औज़ार ले लिये। फिर इञ्जन पर हथौड़ों का प्रहार होने लगा और वह तोड़ फोड़ डाला गया। इसके वाद गार्ड की खोज हुई। वे अपने कपड़े लत्ते छोड़ कर भाग गये थे। एक चूल्हे पर उनकी रसोई वन रही थी जो प्रायः तैयार थी। पास ही एक भिखमंगा था। उसे गार्ड साहब की रसोई खाने को दे दी गई और उनका कोट पहनने को। लाल हरी झंडियां स्कूल के लड़कों के हाथ लगीं।

मालगाड़ी में हजारों टन चीनी और शीरा लदा था। किसी तरह यह खवर फैली कि यह सरकारी माल है और फ़ौज के काम के लिये जा रहा है। कुछ जानकार लोगों ने ऐलान किया कि माल किसी का हो सरकार को इसे लूटे जाने पर पूरा दाम अदा करना होगा। वस क्या था, वात की वात में डव्वे खाली होने लगे।

पास पड़ोस के रईसों ने देखा कि सारी चीनी लूटी जा रही है. हमारे घर एक वोरा भी नहीं आया। उन्होंने वैल गाड़ियां भेजीं और २०, २५ वोरे इकट्ठे मगवा लीं। ये लोग सरकार के खैर-ख्वाह थे, किन्तु वहती गङ्गा में कौन हाथ न धो लेगा? शाम को ५ वजे तक मालगाड़ी विलकुल खाली हो गई।

स्टेशन मास्टर ने अधिकारियों के पास उक्त घटना की निम्नलिखित रिपोर्ट भेजी:—

कागज़ात, टिकट, नक़द और स्टेशन की इमारत विलकुल जला दी गई, तार तोड़ दिये गये, माल और पारसल लूट लिये गये। ३२९ अप के इंजन और पंप इंजन को बुरी तरह से नुक-

सान पहुँचाया गया है । ३३९ अप के कई डब्बों के सामान १० बज कर ५० मिनट पर लूट लिये गये। इंजन चल नहीं सकता। ३३९ अप यहां रुकी पड़ी है। कृपया पुलिस की सहायता शीघ्र भेजी जाय जिसकी सख्त जरूरत है। माल गाड़ी के डब्बे अब भी लूटे जा रहे हैं।*

लगभग ११ बजे तक स्टेशन की इमारत जल चुकी थी। माल गाड़ी की लूट चल ही रही थी कि जन समूह का एक भाग पोस्ट आफ़िस की ओर गया। पोस्ट मास्टर की ओर से एक आदमी विप्लवकारियों से मिला और कहा कि पोस्ट आफ़िस की इमारत सरकारी नहीं है। उसमें पोस्ट मास्टर के बाल बच्चे हैं, अतएव उस इमारत को जलाया न जाय। विप्लवकारियों ने बात मान ली और कहा कि हमें केवल पोस्ट आफ़िस के कागजात चाहिये।

पुलिस का इन्तजाम

उभाँव थाने के थानेदार शेख मुर्तज़ा हुसेन १४ अगस्त को ही सबेरे वाली ट्रेन से उतरे। उन्होंने रंग कुछ बदला देखा। दो सशस्त्र पुलिस को पोस्ट आफ़िस में रख दिया और मि० शाकिर कान्सटेबिल तथा नूर मुहम्मद चौकीदार को रेलवे स्टेशन पर रख छोड़ा। पोस्ट आफ़िस पर रखे हुये कान्स्टेबिलों के पास एक-एक राइफ़िल और

---

*Hours 11/30, Bilthra Road Dated 14-8-42.

Records, cash and, station building totally burnt, line signals broken, goods and parcels looted also. Engine of 339 Up and pump engine are badly damaged. Goods of several wagons by 339 looted at the 10/50 hrs.

Engine unable to move, 339 Up waiting here. Please arrange police help, urgently required. Wagons still being looted.

Kali Shanker Upadhyaya
Station Master

पर्याप्त संख्या में कारतूसें दे दी गईं। स्टेशन वाली पुलिस को विप्लवकारियों ने क़ाबू में कर लिया। पीछे वे भाग गये।*

नूरमुहम्मद चौकीदार अपने बयान कहता है:—

मैं बर वक्त हमला स्टेशन पर था। मुज़हिर और मुहम्मद शाकिर हुसेन कान्स्टेबिल ने मजमा को स्टेशन के अन्दर दाखिल होने से बहुत रोका लेकिन वह लोग अन्दर गये। मुजहिर को चार आदमियों ने पकड़ लिया और मुसाफ़िर खाने की तरफ लेकर चले गये। भीड़ ने बहुत मारा। बजाहिर कोई निशान नुमायां नहीं हैं। मुज़हिर ने किसी तरह अपनी जान उन लोगों से बचाई। बहुत ज्यादा मजमा आदमियों का पहुँच गया था। पहले रेलवे स्टेशन के बाहर लेक्चर के तौर पर डा० हरचरन लाल, देवनाथ उपाध्याय, हेडमास्टर डी० ए० वी० स्कूल वगैरह ने हम राहियान को मुखातिब करके जोश दिलाया और मुस्तैद किया। कहा कि स्वराज अगर लेना है तो स्टेशन को फूंक दो, तार काट दो और जुमला तार और रेल की पटरी उखाड़ दो, थाना और डाकखाना लूटकर आग लगा दो। मजमा गांधी जी की जै बोल रहा था और इनक़लाब ज़िन्दाबाद के नारे लगा रहा था। लोगों ने इसमें आग लगा कर जला दिया है। पटरी उखाड़ दिया है। खंबा तार के गिरा दिये हैं माल गाड़ी के वैगनों को लूट लिया है। डाकखाना के कागजात जला दिये हैं।*

पोस्ट आफिस वाली पुलिस आखिरी वक्त तक डटी रही। भीड़ जब सामने आई तो पुलिस ने बंदूकों से डराया। फिर वे पोस्ट आफ़िस के अंदर चले गये और वहीं से राइफ़िल का कुन्दा बाहर निकाल कर डरवाया। स्टेशन पर बागियों को जो सफलता मिली थी उससे उनकी हिम्मत बढ़ी हुई थी। पोस्ट आफ़िस के

---

* डायरी थाना उभाँव १५ अगस्त, १९४२।

अधिकारियों और पुलिस को बड़ा खौफ था। उन्हें डर था स्टेशन की तरह पोस्ट आफ़िस भी जला डाला जायेगा और पोस्ट आफ़िस में जल मरेंगे। सामने करकट का बरामदा था। उस पर भीड़ ने पत्थर फेंकना शुरु किया। साथ ही सैकड़ों पत्थरों की चोट खाने से करकट से भीषण आवाज़ निकलती थी। पोस्ट मास्टर से कहा गया कि कागजात तथा टिकट, पोस्ट कार्ड और लिफ़ाफ़े जिस कदर उनके पास हों, सब दे दें। पहले तो उन्होंने आनाकानी की किन्तु बाद को देना ही पड़ा। बूढ़ा पुलिस कान्सेटबिल मि० फ़ारूक पोस्ट आफ़िस के अन्दर बंदूक हाथ में लिये कांप रहा था और डाकखाने के अन्य कर्मचारी जल्दी जल्दी कागजात दे रहे थे।

पुलिस के सामने बयान देते हुए बा० मथुरा प्रसाद पोस्ट मास्टर ने कहा—बलवाइयों में कांग्रेसी और गैर कांग्रेसी हर किस्म के आदमी थे। जो लोग सामने थे उनमें से मुजहिर ने देवनाथ उपाध्याय, हेड मास्टर, डी०ए०वी० स्कूल, सीयर, पारस नाथ मिश्र, मिश्रबली और हर चरन लाल को नाम से जानता है और यह लोग शरीक जुर्म थे। काश मुलाजिमान पुलिस उस वक्त मौजूद न होते तो मुजहिर और मुजहिर के बाल बच्चों की जान और रकम सरकारी जो बहुत ही कसीर तादाद में थी बहुत तलख और नुकसान होते। खतरा अजीम का सामना था। मुजहिर ने उन लोगों को धोखा देकर रकम सरकारी बचाया है। सुना जाता है कि दुबारा हमला करने की फिक्र में हैं।*

उपर्युक्त दोनों कांडों का विवरण देते हुए खुफिया पुलिस के कर्मचारी मि० मुहम्मद हाशिस ने थाने में निम्नलिखित रिपोर्ट दर्ज कराई:—

तारीख १४ अगस्त, १९४२ वक्त १०॥ बजे दिन या ११ बजे

---

* डायरी थाना उभाँव १५ अगस्त, १९४२।

दिन को डी० ए० वी० स्कूल के तमाम लड़के व हेड मास्टर डी० ए० वी० स्कूल व बहुत लोग जिनका नाम मैं नीचे दर्ज करूंगा मय झंडा के स्टेशन की तरफ गये और कुछ देर तक स्टेशन बिल्थरा रोड के बाहर ही से जय का नारा करते स्टेशन की तरफ गये और रकम वगैरह व टिकट वगैरह छीन लिया और फाड़ कर फेंक दिया। स्टेशन में आग लगा दी। इस दौरान में एक मालगाड़ी स्टेशन बिल्थरा रोड आई जिसमें भूरा और चीनी जिस कदर भी था ताला खोलकर लूट लिया। इसके बाद डाकखाना पर हमला किया। स्टेशन अब तक जल रहा है। इत्तलाई रिपोर्ट मारूज है। नाम लीडरान (१) देवनाथ उपाध्याय, हेड मास्टर डी० ए० वी० स्कूल, (२) हरचरन लाल शर्मा, (३) सरजू चमार, (४) सुदेश्वर लाल, (५) पारसनाथ, (६) ऋषि तिवारी, (७) चन्द्र दीप सिंह, (८) चन्द्रमा वल्द रामदेव अहीर (९) जगन्नाथ पांडे तुर्तीपार, (१०) प्यारे मोहन लाल, (११) वासुदेव सिंह, (१२) माधव, (१२) लालजी दुबे, (१३) श्री कांत। मुकुन्द बलवा में शरीक था, अपने पलास वगैरह तार काटने को दिया था और स्टेशन पर भी मौजूद था। तमाम महाजन भी स्टेशन पर मौजूद थे। यह सब सामान लूटकर देहात में गया।*

धीरे धीरे जिले के अन्य कई बीज गोदामों और थानों पर जनता का अधिकार हो गया। बिल्थरा रोड का बीज गोदाम और उभाँव का थाना अभी सुरक्षित था। जिस जनता ने १४ अगस्त को स्टेशन और पोस्ट आफिस पर विजय प्राप्त की थी वह बीज गोदाम और थाने को कब छोड़ सकती थी? रविवार २३ अगस्त को बिल्थरारोड का

उभाँव थाने पर आक्रमण

---

* डायरी थाना उभाँव १४ अगस्त, १९४२।

बाजार लगा था। बाजार में ही बीज गोदाम था। सोचा गया कि बीजगोदाम पर धावा बोल दिया जाय। बाद को विचार बदल गया और यह तय पाया कि कल देहात से अधिकाधिक संख्या में आदमी आवें, पहले उभाँव थाने को फूकें और फिर बीजगोदाम को लूटें। जोरों पर यह खबर उड़ गई थी कि ज्योंही रेलवे लाइन ठीक हो जायेगी बीजगोदाम का सारा गल्ला किसी फौजी स्टेशन पर भेज दिया जायेगा।

बाजार में गांव गांव के आदमियों को ख़बर दे दी गई कि लोग २४ अगस्त को ९ बजे सवेरे उभांव के थाने को फूंकने और बिल्थरा रोड के बीज गोदाम को लूटने आवें। संध्या शमय ४ आदमी थाने की कैफियत का पता लगाने गये। दो सिपाहियों से मुलाकात हुई। उन्हों ने कहा हम लोगों ने हथियार रख दिये हैं। जब जिले के अन्य थाने जला डाले गये तो आश्चर्य है यह अब तक नहीं जल सका। दो और सिपाहियों से मुलाकात हुई जो सिकंदर पुर थाने के भाग कर आये थे। उन्होंने कहा हम लोग यहां आज शाम को दरिया पार करके घर जा रहे हैं। सिकंदर पुर से किसी कदर जान बचा कर यहां तक आये हैं वास्तव में थाने वालों की हिम्मत इन बाहरी सिपाहियों ने और भी कमकर दी थी, थाने दार शेख मुर्तजा हुसेन का निजी सामान दो तीन हिन्दुओं के घर भेजा जा चुका था और वे खुद गांव में एक सज्जन के घर के अन्दर जा छिपे थे।

इधर तुर्तीपार का पुल काट डालने की भी बात चल रही थी, किन्तु चूंकि वहां १० सशस्त्र पुलिस पहरा दे रही कार्य क्रम पूरा न हो सका। पुल का इंतजाम अब फौज के सुपुर्द कर दिया गया था, वहां एक अंगरेज कैप्टन और ५ बिलूची सिपाही भी आगये। एक रेलवे इंजन और एक डब्बा भी उनके पास था जिस पर वे इधर उधर आया जाया करते थे। कैप्टन ने थानेदार को बुलयाया। उसे

हथियार और कारतूसें दीं और हिम्मत बंधाई। इधर जिले के कृषि विभाग के इन्सपेक्टर बीज गोदाम पर आगये थे। उन्हें जब फौजी सिपाहियों के आगमन का समाचार मिला तो जान में जान आई। एक पत्र लिख कर उन्होंने कैप्टन के नाम भेजा और उनसे सहायता मांगी।

२४ को सवेरे ९ बजे तक लगभग १५,००० आदमी बंदूक, लाठी और बल्लम लिये हुये बिल्थरारोड बाजार में आ गये। सारी भीड़ पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार उभांव थाने की ओर बढ़ी। लगभग १ मील आगे जाने के बाद पता चला कि फ़ौज का कैप्टन और ५ अन्य सैनिक बिल्थरा रोड बाज़ार में आ गये हैं। और उन्होंने बा० देवेन्द्रसिंह के मकान में आग लगा दी है। भीड़ लौट आई। पता चला कि फ़ौज के साथ मि० रियाज़ अहमद (इमलिया). मुहम्मद अज़ीम मुखिया (बिल्थरारोड) और खुफ़िया पुलिस भी घूम रही है तथा उन्हीं के संकेत से बाज़ार में आग लगाई जा रही है। देवेन्द्र सिंह के मकान को अधजला छोड़ कर फ़ौज वालों ने बा० द्वारका प्रसाद के मकान में आग लगाई। वे अपने घर के अन्दर थे। अपने बच्चे को लेकर कूद पड़े। किसी तरह जान बची। फ़ौज वाले फिर स्टेशन पर चले गये। इधर मि० रियाज़ अहमद बाजार से निकल कर अपने घर जाने लगे। लोगों ने उनके कारनामे सुन कर उन्हें घेर लिया और वे उन्हीं पर पिल पड़े।

सैनिकों ने गोली चलाई

थाने को फूंकने और बीज गोदाम को लूटने का विचार छोड़ देना पड़ा। नेताओं ने निश्चय किया कि फ़ौजी कैप्टन को ही पकड़ लिया जाय। लगभग ५०० आदमी रेलवे लाइन पर चढ़ गये और पटरी उखाड़ने लगे ताकि फ़ौज वालों की ट्रेन वापस न जा सके और वे इधर ही घिर जांय। कैप्टन ने राइफ़िल उठाई।

और लोग तो लाइन से नीचे उतर आये किन्तु डी० ए० वी० स्कूल के सहायक अध्यापक ठा० चन्द्रदीप सिंह ज्यों के त्यों लाइन पर खड़े रहे। सिपाहियों ने हटने का इशारा किया, फिर भी वे न डिगे। आखिर कैप्टन ने गोली चलाई, जो ठा० चन्द्रदीप सिंह की टांग में लगी। दो सिपाही उन्हें घसीट कर ले गये और रेल के डब्बे में डाल दिया।

भीड़ और भी उत्तेजित हो गई। उसने चारों ओर से जोरों से चिल्ला कर धावा बोल दिया। एक मकान की आड़ से कैप्टन ने फिर गोली चलाई, उसके बाद भीड़ का पीछा किया। चारों ओर मीलों तक गन्ने और बाजरे के खेत लगे थे। उसमें केवल आदमी ही आदमी नज़र आते थे। सैनिकों ने ५, ६ बार फिर फ़ायर किया। टगुनिया निवासी राम अवतार भर के सीने में गोली लगी और पीछे से निकल गई। बिचारा वहीं ढेर हो गया। अंग्रेज कैप्टन जब वापस फिर स्टेशन की ओर जाने लगा तो ठा० सीताराम सिंह ने उस पर गोली चलाई। वह बाल बाल बच गया। जवाब में उसने भी एक बार और फ़ायर किया किन्तु कोई मरा नहीं।

मि० रियाज़ अहमद पर जो आक्रमण हुआ, उसके ऊपर पर जो रिपोर्ट अव्वल दर्ज हुई वह इस प्रकार है:—

उभांव थाने के सीयर (बिल्थरारोड) कस्बे में एक सरकारी बीज गोदाम है। एक भीड़ वहां २४ अगस्त को गई जिसका इरादा बीज गोदाम लूटने का था। रियाज़ अहमद और उनके साथी भीड़ को हटाते रहे। २४ अगस्त १९४२ को दोपहर के करीब हल्दी के सीताराम सिंह एक बहुत बड़ी भीड़ के साथ वहां आये उनके साथ उनके भाई देवेन्द्र सिंह थे। उन्होंने कहा कि इमलिया के रियाज अहसद, सीयर के मुहम्मद अजीम और विठुआ के मुजतबा हुसन बीज गोदाम की हिफ़ाजत कर रहे थे। जब भीड़

में आदमियों की संख्या बढ़ गई और अख्तियार से वाहर होगई तो अस्पताल वाली सड़क से मुद्दई और उसके साथी इमलिया वापस जाने लगे। इस मौक़े पर देवेन्द्र सिंह और उनके भाई सीताराम सिंह, द्वारका कांदू और उनके भाई रामदीन कांदू, मुन्नीलाल हरद्वार प्रसाद फ़र्म के कारिन्दा विश्वनाथ तेली, वाबूराम तेली, राम स्वरूप धोवी, देवनाथ उपाध्याय हेड मास्टर डी० ए० वी० स्कूल सीयर और कई दूसरे आदमी जिनका नाम मुद्दई नहीं जानता था किन्तु ज़रूरत पड़ने पर पहचान सकता है, मुद्दई पर टूट पड़े। मुद्दई जान वचाने की गरज़ से भागना चाहता था किन्तु सीताराम सिंह ने उस पर गोली चलाई। डर के मारे मुद्दई वैठ गया और गोली उसे नहीं लगी। तव ऊपर कहे हुये आदमियों ने उसे लाठी से मारा।

इसी वीच फ़ौजी अफ़सर आये। उन्होंने वीज गोदाम और रेलवे लाइन को वचाया।

अमर शहीद ठा० चन्द्र दीप सिंह (आयु २८ वर्ष) की लाश नहीं मिल सकी। पीछे पता चला कि सैनिकों ने लाश को तुर्ती पार के पुल से घाघरा नदी में डाल दिया।

नगरा का पोस्ट आफ़िस

१५ अगस्त १९४२ को लगभग ९ वजे छितौना, नरही और खरुआंव गावों से अलग अलग जुलूस इन्क़लाव के नारे लगाते हुये, नगरा में आये। पोस्ट आफ़िस के सारे कागजात मय टिकट पोस्ट कार्ड और लिफ़ाफ़ा वड़ी आसानी से हाथ लग गये। उनमें आग लगा दी गई। इमारत गैर सरकारी थी, उसे किसी किस्म का नुकसान नहीं पहुँचाया गया। उसके वाद डाक वंगले पर तिरंगा झंडा फहराया गया। लौटते समय जन समूह ने रास्तों पर के पुल जो ताखा, नरही, और सोनापाली में थे तोड़ डाले। कहीं से एक चौकीदार आता दिखाई दिया। वह अपनी

वर्दी पेटी छिपाये भगा जा रहा था। लोगों ने उसे पकड़ा उसकी वर्दी. पेटी और थैली जला दी। कांग्रेस के तिरंगे झंडे के साथ वह भी घूमा, तब तो उसे छुट्टी मिली।

इन कांडो को लेकर आस पास के प्रमुख कांग्रेस वासियों पर मुकदमे चलाये गये। जुर्म साबित हुआ और निम्न लिखित कांग्रेस जनों को को छ माह से ९ वर्ष तक की सजा दी गई:—

स्वामी चन्द्रिकादास, सर्व श्री बालेश्र सिंह, हंसनाथ सिंह, हर गोविन्द सिंह, सत्य नरायन सिंह, मुसाफिर अहीर, राम बचन गोंड, सहदेव चमार. गौरी कलवार, इंद्रदेव प्रसाद आदि। श्री महेश दास अंतिम समय तक फरार रहे।

बिल्थरा रोड और किरहिदा पुर स्टेशनों के जलाये जाने और लाइन उखाड़ने के बाद तर्तीपार पुल की निगरानी में रखे हुये फौजी सिपाहियों ने लाइन की मरम्मत करा ली। वे अपना इंजन लेकर किरहिदा पुर तक आया जाया करते थे। १९ अगस्त की रात को गोविन्द पुर के पास रेलवे लाइन का पुल तोड़ा गया। और मीलों तक रेलवे लाइन उखाड़ी गई।*

गोविन्द पुर रेलवे लाइन

---

*बयान धरम देव चौकीदार थाना उभांव तारीख १९ अगस्त सन् ४२:— आज ज्यों रात बीत गई करीब ८ बजे रात के ४-५ सौ आदमी कांग्रेसी लोग मोहना, बिगाही, चरौंवा, सरयां गोविन्द पुर बिलवी गांव के रेल के लाइन की पटरी कुदारी हथौड़े से तोड़त रहले। हमके ठांय ढांय के बोली. सुनाईल हम जाय के देखली तो लोग लाइन के पटरी उखाड़-उखाड़ के फेंक दिहले। हम उन लोग में से समर बहादुर सिंह सरयां, सिऊ अहीर, रजकू अहीर, देव अहीर, सती सिंह, बासुदव सिंह के पहचान कराइन। यह लोग खंभा, पटरी उखारत रहले और खंबा का तार

सोहाँव मंडल में संगठन

१५ अगस्त को संध्या समय ४ बजे सोहांव में एक सभा हुई जहां निश्चय हुआ कि अन्य स्थानों की भांति यहां भी आसपास की रेलवे लाइनें उखाड़ी जांय और स्टेशन जलाये जायँ। १६ अगस्त को लगभग १० बजे दिन तक चौरा गांव में हज़ारों ग्रामीण जनता एकत्र हुई। यह भीड़ ४ मील दूर बड़ागांव आई जहां रेलवे स्टेशन है। आते आते रात होगई। सब लोग चीट बड़ागांव के पोखरे वाले धर्मशाले में पड़ रहे। चीट बड़ा गांव के मंडल के कार्य कर्ताओं ने १६ अगस्त को एक मीटिंग की और निश्चय किया कि चौरा से आई भीड़ के साथ इस मंडल की ओर से भी लोग चलें और चीट बड़ागांव के स्टेशन और नरही के थाने पर अधिकार करें।

चीट बड़ा गांव स्टेशन

१६ अगस्त १९४२ को चीट बड़ागांव रेलवे स्टेशन पर आक्रमण हुआ। इस स्टेशन के जलाने में सोहांव और नरही दोनों मंडलों के कार्यकर्त्ताओं का भी हाथ था। लगभग २ बजे दिन को हज़ारों आदमियों की एक भीड़ स्टेशन पर चढ़ आई। स्टेशन मास्टर तथा स्टेशन के अन्य कर्मचारी स्टेशन पर ही थे। किन्तु उन्होंने कुछ भी प्रतिरोध नहीं किया। तार काट डाले गये, सिगनल तोड़ दिये गये और स्टेशन के सारे कागज़ात में तेल

तोड़ के खंबा आधा आधा तोड़ के गिरा दिहले। जब ऊपर पानी पड़े लाग तब लोग तोड़ ताड़ ले के चल गइले। गोविन्द पुर गांव से इत्तला करे अइली। हम ई बयान कइलीं जौन लिखलें।

छिड़क कर आग लगा दी गई। स्टेशन का कैश वक्स किसी ने छुआ तक नहीं। सरकारी रकम ज्यों की त्यों वनी रही।†

चिट बड़ागांव कांड के संबंध में सर्व श्री हीराराम, आत्मा कान्दू, रज्जन, राधाकृष्ण, अच्छेलाल, जनार्दन, जगन्नाथ तिवारी, छेदी, शिवपूजन और जनार्दन आदि पर मुकदमे चलाये गये। इनमें से श्री राधाकृष्ण को छोड़ कर सव मुकदमे से रिहा कर दिये गये।

नरही थाने पर आक्रमण

१६ अगस्त को तीसरे पहर के वाद चीट वड़ागांव स्टेशन के फूंके जाने के वाद वहां से एक वहुत वड़ा जुलूस विजय के नारे लगाता हुआ नरही थाने की ओर वढ़ा। इस जुलूस में वे लोग भी सम्मिलित थे जो एक रोज पहले चौरा से जुलूस वनाकर चीट बड़ागांव में गये थे। जैसे जैसे जुलूस आगे वढ़ता गया आदमियों की संख्या वढ़ती गई। शाम को चार वजे यह विशाल जन समूह नरही के थाने के सामने आया। पुलिस को इस आक्रमण का समाचार मिल चुका था। उसने बड़ी बड़ी तैयारियां की थीं। देहातों से कुछ वंदूकें मगवा रखी थीं। पेन्शनयाफ्ता थानेदार चौधरी वेनी माधव सिंह (अव राय साहव चौधरी वेनी माधव सिंह) उस समय वागियों का सामना करने के लिये अपने साथ दो ढाई सौ लट्ठैतों को लेकर थाने पर मौजूद थे। उमड़ती भीड़ का वढ़ता हुआ जोश देखकर थाने वालों के होश उड़ गये। थानेदार सुन्दर सिंह डर के मारे कांपने लगे। थानेदार ने चौधुरी साहव से

†Station records, tickets, tube burnt and destroyed, telegraph instrument damaged by large number of public. Life in danger arrange safe guard for Ry. cash

Station Master

राय ली। उन्होंने बागियों से पूछा आप क्या चाहते हैं। बागियों ने कहा कि आप कांग्रेसी झंडे की छत्र छाया में आइये और कांग्रेस की अधीनता स्वीकार किजिये। थानेदार ने कुछ आनाकानी की। भीड़ ने अंतिम चुनौती दी और कहा कांग्रेस का राज्य मान जाइये वरना आज हम थाने की एक एक ईंट उठा ले जायेंगे। चौधुरी बेनी माधव सिंह ने रंग बदला देखकर अपना रास्ता लिया। कुँवर सुंदर सिंह थादनोर ने अपने हाथों से कांग्रेसी झंडा फहराया और १०) कांग्रेस कोष में दिया। थाने की हवालात में उस समय कारों का शिवानन्द नामी मुजरिम बंद था। कांग्रेसियों की आज्ञा से वह उसी समय रिहा कर दिया गया।

नरही का डाकखाना जला

भीड़ आगे बढ़ी। उसने नरही के डाकखाने पर आक्रमण किया। लगभग २ हजार आदमियों ने डाकखाने को चारों ओर से घेर लिया। ब्रांच पोस्ट मास्टर मौजूद थे। स्वामी ओंकारानन्द ने चाभियों का गुच्छा उनसे लेलिया। सैकड़ों आदमी अन्दर घुस गये। डाकखाने के सारे कागजात, लकड़ी का संदूक, लेटर बक्स वगैरह जला डाले गये।

पोस्ट मास्टर ने थाने में रिपोर्ट दी :—

करीब ५ बजे मेरे घर में जो डाकखाना है मैं उसमें मौजूद था। करीब २ हजार कांग्रेसी गुंडा व बदमाश शरीक थे, जिनके आगे-आगे ओंकरानन्द, बृजनन्दनराय, बालेश्वरराय, लक्ष्मी तिवारी साकिन नरही व जंग बहादुर साकिन चौरा वगैरह झंडा लिये नारा लगाते हुये कि हमारा राज हो गया, अंगरेजी हुकूमत खतम हो गई आये हमारे मकान और डाकखाने को चारों तरफ़ घेर लिया। ओंकरानन्द ने चाभी का गुच्छा हमसे छीन लिया। और ताला खोल कर कुछ लोग डाकखाना में घुस गये।

जिन लोगों को हमने पहचाना है और उनका नाम ऊपर लिखाया है यह लोग डाकखाने में घुसने और जलाने में थे। बाक़ी लोग को नहीं जानते ; देख कर पहचान सकते हैं। डाकखाना के तमाम कागजात, लकड़ी का संदूक, लेटर बाक्स, व साइन बोर्ड व ताला वगैरह सब लोगों ने मिल कर फूंक दिया है।

वर्दी जलाई गई

१७ अगस्त को जो चौकीदार थाना नरही पर तैनात थे, १८ को सवेरे अपने अपने घर जाने लगे। जब वे सुरही गांव के पास पहुँचे तो उनसे स्वामी ओंकारानन्द और हरद्वार राय आदि २५ आदमी मिले और कहा कि तुम अपनी वर्दी पेटी सब दे दो, हम जलायेंगे। चौकीदार १७ तारीख़ वाली थाने की घटना देख चुके थे। जब उनके थानेदार कांग्रेसियों के सामने झुक गये तो उनके झुकने में कोई बड़ी बात नहीं थी। फिर भी वे आंना कानी करते हुये आगे बढ़े। कांग्रेस जन भी उसके पीछे हो लिये। समझा बुझा कर यदि कोई काम हो जाय तो सख्ती करने की जरूरत नहीं। यह उनका सिद्धान्त था। चौकीदार बढ़ते-बढ़ते सोहांव मिडिल स्कूल पर आये। यहां पहले से ही हज़ारों आदमियों की भीड़ थी। उन्होंने चौकीदारों की वर्दी छीन ली। उन्हीं से उसमें आग लगाने को कहा गया। चौकीदारों ने ऐसा ही किया। उन्होंने कांग्रेस की जय भी मनाई।*

---

*रिपोर्ट अव्वल थाना नरही—

हम कि नगेसर बाप का नाम बिग्गन दुसाध चौकीदार घर कोटवा थाना नरही में था। ता० १८-८-४२ को हम और फकीर चौकीदार उभांव, लोरी चौकीदार नरायनपुर, खेदन चौकीदार नरायनपुर, बदन चौकीदार नरायनपुर अपने अपने घर जा रहे थे। जब सुरही गांव के पास हम लोग पहुँचे तो करीब २५ आदमी

उधर एक भीड़ ने भरवली के पास सड़क का पुल तोड़ डाला। इसके बाद वह कोरंटाडीह डाकखाने पर गई। पोस्ट मास्टर श्री सिद्धनाथ राय को भीड़ के आने का समाचार पहले ही मिल चुका था। वे अपने कागज़ात हटा रहे थे।

कोरंटाडीह का पोस्ट आफिस

भीड़ को देखकर उन्होंने ताला वन्द कर दिया। वागियों ने उनसे डाकखाने के नगद और टिकट फार्म मांगे। पोस्ट मास्टर ने देने से इनकार किया। इस पर लोगों ने धमकियां दीं और पोस्ट मास्टर भाग खड़े हुए। वागियों ने डाकखाने का ताला तोड़ा कागज़ात, २८॥≈) के पोस्टकार्ड लिफाफे, कुनैन का डब्बा मय दीगर सामान के वाहर निकाला और उसमें आग लगा दी कुछ सामान गंगा नदी में भी फेंक दिया।*

जिनमें ओंकारानन्द नरही, हरद्वार राय नरायनपुर, विश्वनाथ पंडित नरायनपुर, भवानी लाल नरायनपुर, शिवमुनी मल्लाह कोटवा, जगदीश राय नरही, अर्जुन राय सुरही, जगतलाल नरही. वाला राय सोहांव, जिनको पहचान किया मिले और हम लोगों से सरकारी वर्दी फूंकने के लिये मांगने लगे।......

नगेसर

* On 18.8.42 At about 11 hours a band of so called Congress workers, about 200 in number, with Congress flags and armed with lathis raided the P.O. The S. P. M. on hearing their slogans of 'Inquatab Zincabad,' 'Bharat Mata ki Jai, etc. locked up the P.O. and came out. The people forcibly took away the bunch of keys from the S.P.M and opened the P. O. and

उंजियार का ताड़ीखाना

बागियों ने इसके बाद उँजियार के ताड़ीखाने पर आक्रमण किया। और जितने ताड़ी रखने के वर्तन वगैरह थे सबको तोड़ फोड़ डाला। गांजे और शराब की दुकान में आग लगा दी। दुकान वालों की ओर से कोई प्रतिरोध न हुआ। एक लड़का एक सेर गांजा लेकर भागा जा रहा था एक कांग्रेसी ने उसे पकड़ा और गांजा छीन कर आग में डाल दिया।

कोटवा नरायन पुर का डाकखाना

बागियों की भीड़ इसके बाद कोटवा में २ बजे दिन को पहुँची। पोस्ट मास्टर राम आधार राय ने डाकखाने का सारा सामान कमरे में बंद कर रखा था। चाभियों का गुच्छा उनके पास था। मांगने पर उन्होंने वहाने वाजी की। श्री जगतलाल ने उनके जेब से गुच्छा निकाल लिया। डाकखाने का एक एक सामान निकाला गया और आग में जला दिया गया।

पोस्ट मास्टर ने नरही थाने में निम्नलिखित रिपोर्ट दी:—जनाव इन्सपेक्टर साहव थाना नरही।

अरज है कि तारीख १८–८–४२ ई० को करीव १ बजे दिन में

---

removed all the records and forms, type box containting al stamps etc.etc.

Loss caused to the P. O. is detailed below:—

Stamps	Rs. 38—10—0
Quinine	Rs. 4—11—0
Total	Rs. 43—5—0

Some articles were thrown by them in the Ganges.

Siddhnath Rai
Sub Post Master
9-9-42

जबकि मैं अपने डाकखाना मौजा कोटवा नरायन पुर में काम सरकारी कर रहा था एक मजमा करीब ४५०० आदमियों के जिसमें लोग लाठी, भाला, झंडा कांग्रेसी लिये हुये थे नारा लगाते हुये कि अंगरेज़ी हुकूमत को हम लोगों ने फतह कर लिया, तमाम थाना, कचहरी, स्टेशन, डाकखाना को फूंक कर लूट लिया है और सरकारी बंदूकें और गोलियां छीन ली गई हैं, और राज हम लोगों का हो गया है. डाकखाना को चारों ओर से घेर लिया। उसमें आगे हाथ में झंडा लिये हुये ओंकारानन्द और जगत लाल सा० नरही मेरे पास मय विश्वनाथ पांडे व चन्द्र राय, ब्रह्मदेव राय, हरद्वार राय, विभूती लाल साकिनान नरायनपुर व शिव मुनी राम सा० कोटवा व १०, १५ आदमी थे, जिनको मैं नहीं जानता था। लोगों से और चौकीदार से पूछने पर मालूम हुआ कि उनमें शिवपूजन राय, वाला राय सा० सोहांव, त्रिभुवन राय सा० सुरही राम दहिन राय सा० लछमनपुर थे। यह सब लोग अंदर घुसने वालों में से थे और तमाम गुँडा और बदमाश लोग थे। जिन आदमियों का नाम हमने ऊपर कहा है और जो डाकखाना में घुस रहे थे हमसे चाभी मांगे। हमने चाभी देने से इनकार किया। उस पर जगत लाल ने हमारी जेब से चाभी छीन लिया और संदूक खोलकर जो कागज सरकारी था उसको बाहर निकाल कर फूंका। मैंने उनको रोका। उस पर सब लोग मुझे जान से मारने की धमकी देने लगे। मैं डर गया। सब कागज सरकारी इस्टाम्प ८ या ६ रु० के, कुनैन ५ रु० का, लेटर बक्स व साइन बोर्ड, मुहर ताला वगैरह जो सामान पोस्ट आफिस का था सब तोड़ फोड़ जला दिये और ले गये।"

कोटवा में एक छोटा सा स्टीमर का स्टेशन था। उपद्रव के

कारण स्टीमरों का आना जाना बन्द था। कोटवा स्टीमर घाट स्टेशन की इमारत कच्ची थी। उसके अंदर थोड़ा सा सामान था। बागियों की भीड़ ने उस पर भी धावा बोल दिया। दो एक कर्मचारी जो भी वहां थे, भाग खड़े हुये। स्टेशन की इमारत मय कागज़ात, टिकट और दीगर सामान के जला डाली गई।

पर धावा

१८ अगस्त को क्रान्तिकारियों को कई जगह मोर्चा लेना पड़ा था। वे काफ़ी थक चुके थे। इधर शाम हो गई। आसपास के रहने वाले तो अपने घरों को चले गये किन्तु अधिकतर लोग उस रात को भरवली गांव में ही रह गये। गांव वालों ने बड़ी ख़ातिर की और कांग्रेसी नेताओं का तो ऐसा स्वागत हुआ मानो वे वास्तव में भारत माता का बंधन काट कर आज़ादी का पैग़ाम लिये आ रहे हों।

१९ अगस्त को सवेरे यह जन समूह प्रसन्नता पूर्वक वापस लौटा। परगने के अन्दर जितनी भी सरकारी संस्थायें थीं उन पर से सरकारी कब्ज़ा जाता रहा। थाने, और डाकख़ाने का काम बन्द कर दिया गया। थानेदार और सिपाहियों को ताक़ीद कर दी गई कि वे ब्रिटिश सरकार का आदेश अब न मानें और जब तक कांग्रेसी सरकार के आदेश उन्हें नहीं दिये जाते वे कोई काम न करें। इस तरह सरकारी काम बिलकुल रुक गया। चौकीदार, सिपाही, थानेदार तथा पुलिस विभाग के उच्च कर्मचारी ढूढ़ने से भी नहीं मिलते थे। पटवारी क़ानूनगो तहसीलदार तथा डिप्टी कलेक्टरों ने भी घर से निकलना छोड़ दिया। चंद रोज पहले जहां सरकारी अफसरों के अत्याचार से चारों ओर आतंक फैला हुआ था, वहां अब लोग कांग्रेस की छत्र छाया में सुख और संतोष का अनुभव करने लगे।

यातायात के साधनों को विनष्ट करना कार्यक्रम में प्रमुख स्थान रखता था। रेलों का चलना बंद था, डाक का चलना बन्द था, और कच्ची सड़कों के भी कई पुल काट डाले गये थे। भरवली से जो लोग घर जाने लगे उन्होंने सड़कों के किनारे के कई पेड़ काट कर गिरा दिये। सुरही, लछमनपुर और वसंतपुर के पास के पुल तोड़ दिये। शाम को बेलरिया मौज़े के पास ३०, ४० पेड़ काटे गये और मंगई का पुल बर्बाद किया गया। २० तारीख को नरही के उत्तर चाँदनारा का पुल और महरइया के पुल तोड़े गये।

यातायात के साधन विनष्ट

सड़कों को विशेष रूप से इसलिये भी बर्बाद किया गया कि जनता को मालूम था कि १८ अगस्त को बलिया के तहसीलदार ठा० रामलगन सिंह इसी रास्ते से होते हुये बनारस की ओर गये थे। यद्यपि ठीक जानकारी तो लोगों को नहीं थी, किन्तु संदेह यह था कि तहसीलदार बनारस से सशस्त्र पुलिस अथवा सेना लाने के लिये जा रहे हैं।

ठा० रामलगन सिंह के विषय में लोग सतर्क थे। १५, २० आदमियों का पहरा नरही में कर दिया गया कि जब वे आवें तो उनको गिरफ्तार कर लें। २१ अगस्त को लगभग ८॥ बजे सवेरे उनकी कार लछमनपुर के पास आती हुई दिखाई दी। वहां से कुछ आदमियों ने बाइसिकिल पर कार का पीछा किया। साइकिल वाले आगे बढ़ते जाते थे और लोगों से कहते जाते थे रामलगन सिंह तहसीलदार वापस जा रहे हैं। इन्होंने बलिया में १६ अगस्त को गोली चलवाई और वे ही मदद लेने के लिये बनारस गये थे। जिसने जहां सुना वहीं से वह आगे बढ़ा। हजारों की संख्या में आदमियों ने ठा० रामलगन सिंह की कार का पीछा किया। नरही के पास ही एक पुल था जो

बलिया का तहसीलदार पकड़ा गया

खोद दिया गया था। ठा० रामलगन सिंह कार को भगाये लिये जा रहे थे। कार उसी खोदे हुये पुल में गिर गई। मोटर से निकल कर वे गांव की ओर भागे। क्रान्तिकारी उनकी इन्तज़ार में थे ही, चटपट सामने आये। किसी ने तहसीलदार को पकड़ा, किसी ने ड्राइवर को और किसी ने चपरासियों को।

तहसीलदार और उनके सहयोगी खद्दर की पोशाकमें थे। मोटर में राष्ट्रीय झंडा लगा था, देखने से कोई नहीं कह सकता था कि इस वेश भूषा में कोई सरकारी अफ़सर सफ़र कर सकता है। बात की बात में हज़ारों आदमियों ने उन्हें घेर लिया। भीड़ में दो चार आदमियों ने एकाध डंडे चल भी दिये। तहसीलदार साहब बुरी तरह रो रहे थे; मिन्नते कर रहे थे; माफ़िया मांग रहे थे किन्तु कोई सुनने वाला न था। मोटर में रखी हुई राइफिल मय कारतूस क्रान्तिकारियों के हाथ लगी। रिवाल्वर भी मोटर में एक तरफ़ पड़ा हुआ मिल गया, उसे भी ले लिया गया। मोटर में कुछ पेट्रोल रखा था उसे छिड़क कर मोटर में आग लगा दी गई। जलती हुई मोटर को तहसीलदार साहब ने सतृष्ण नेत्रों से एक बार देखा और कहा कि मोटर तो राय बहादुर काशीनाथ मिश्र की है, फिर भी किसी को दया न आई।

लोग जब आग लागाने में लगे हुये थे तो तहसीलदार साहब को कुछ फ़ुर्सत मिली। वे फिर भागे किन्तु लोगों ने फिर पकड़ा। खींचते खांचते वे नरही गांव में आगये। एक विधवा बुढ़िया के दरवाजे पर गिर पड़े। बुढ़िया ने उन्हें बचाया और बागियों से कहा कि यह मेरी शरण में आया है, पहले मुझे मारो तब इसे मार सकते हो। बुढ़िया पर हाथ कौन छोड़े। वह ज़िद पर आगई थी। बागियों का भी काम पूरा हो गया था। उन्होंने कहा हम तहसीलदार को छोड़ देंगे मगर याद रहे, ये बलिया न जाने पावें।

चौधरी धर्मदेव राय ने उन्हें अपने मकान में ३ दिनों तक रखा, जब तक फ़ौज के अफ़सर नरही में आ नहीं गये।*

---

*While returning from Benares with the special message of the Commissioner Benares division, I met an accident about a mile south of Narhi P. S.. My car fell in a ditch made by the rioters near the bridge at about noon of 21st August, 1942. I, along with my peons and driver was busy in getting out the car. In the meantime a mob surrounded us and one of them began to point out at me regarding the fire which was opened by me at Ballia on 16th August, 1942. I, finding myself helpless as every thing was in the car, tried to run away but the mob chased me. After running about a furlong the mob cried out from behind to catch me and the persons coming out from the side of the P. S. Narhi blocked my way and tried to stop me. Then I turned towards the village but I met with the same fate. After going a few bighas It was caught hold of by two persons from the front. In the meantime the mob arrived there and a few of them attacked me with *lathis*.

I recognised them all who beat me but I do no know their names except Jagat Lal, the local D. B. Teacher who gave me a *lathi* blow on my head. Ch. Dharmadeo Rais s/o Bachchu Babu arrived thre after. I was given *sharbat* and water for drinking by an old lady in whose house I ran when I was being beaten by the rioters and was saved by Bachchu Babu from further molestation.

After that two constables also came firing and the

फेफना से जो लाइन मऊ जाती है उस पर अगला स्टेशन चिलकहर पड़ता है। पहले तो एकौनी गांव के पास सैकड़ों गज की दूरी तक रेलवे लाइन उखाड़ी गई। यह एक अभ्यास मात्र था। दूसरे दूसरे दिन चिलकहर स्टेशन पर आक्रमण हुआ। आस पास के गांवों से लगभग ८ हजार आदमी आ जुटे। इनकलाब जिन्दाबाद और वंदे मातरम के नारों से आकाश गूंज उठा। यहां के स्टेशन के अधिकारी पहले से ही बलवाइयों के आगमन की राह देख रहे थे। भीड़ को देखते ही स्टेशन के अधिकारी भाग खड़े हुये। स्टेशन खाली मिल सारे कागजात और समान एकत्र किये गये। फिर तेल छिड़क कर आग लगा दी गई। स्टेशन की इमारत का कुछ हिस्सा जल कर गिर पड़ा। लगभग डेढ़ साल के बाद सर्व श्री जगदीश सिंह, मानधाता सिंह, ब्रह्मा-सिंह और चन्द्रमा सिंह पर मुकदमा चला।

चिलकहर स्टेशन फूँका गया

---

mob totally disper-ed them. I was given shelter for 3 days by Ch. Dharmadeo Rai and his family and stayed there till the arrival of the rescue party.

My gun No. 14435 By Enoo james service surprise & co. with about 14 cartridges and service revolver with 36 cartridges were looted by the rioters along with some clothes, one box, a wrist watch and other arlicles.

The mob also burnt the car and its body which was brought by Ch. Dharmadeo Rai to his house under my order which is still there.

Ramlagan Singh
Dy. Collector,
Ballia.

30-9-42

सिंह को ५ वर्ष की सजा हुई, अन्य अभियुक्त सेशन जज द्वारा रिहा कर दिये गये।

औंदी का पोस्ट आफिस

१७ अगस्त को ही औंदी के पोस्ट आफिस पर आक्रमण हुआ। छोटा पोस्ट आफिस था। नकद रुपया नहीं था। लगभग १०० आदमी पोस्ट आफिस पर आये। पोस्ट मास्टर से कागजात मांगे गये। पहले तो उन्होंने आपत्ति की किन्तु बाद को कागजात और टिकट लिफाफे सुपुर्द कर दिये। सारे कागजात जला डाले गये। लेटर बक्स का लड़कों ने ढोल बनाया जिसे वे हफ़्तों तक बजाते रहे। श्री महाराज बहादुर और मोहन राम आदि गिरफ्तार किये गये। ८, ९ महीने तक हवालात में बंद रहे। सेशन अदालत तक मुकदमा चला किन्तु सबूत न मिलने के कारण सब अभियुक्त रिहा हो गये।

चिलकहर के बीजगोदाम पर आक्रमण

बागियों ने १८ अगस्त को चिलकहर बीजगोदाम पर आक्रमण किया। बीजगोदाम पर जब वे पहुँचे तो कुछ दूसरा नकशा नजर आया। देखा गया कि गांव के चन्द इने गिने आदमी, जो सरकार के हिमायती कहे जाते थे, पहरा दे रहे थे। उन्होंने भीड़ को लूटने से रोका। बलवाइयों ने कहा हमें लूटना नहीं है, हम तो केवल अधिकार करना चाहते हैं। रक्षकों की ओर से, जिनमें से श्री अंजिनी कुमार सिंह का नाम उल्लेखनीय है, कहा गया कि अधिकार तो इस वक्त हमारा ही है। सरकारी नौकर भाग चुके हैं। बलवाई ठंडे पढ़ गये। कब्जा चाहे गांव वालों का हो अथवा कांग्रेसी स्वयं सेवकों का हो, बात एक ही है। आखिर गांव वालों से लड़े कौन? भीड़ हट गई।

किसी मन चले ने बीज गोदाम के सुपर वाइजर की बाइसिकिल उठा ली और लेकर चलता बना। इस काण्ड में बा० जग-

दीश, सिंह और ठा० मानधाता सिंह पर मुकदमा चला किन्तु वे लोग निर्दोप प्रमाणित हुये।

१९ अगस्त को चिलकहर के पास पिपरिया का पुल काटा गया और कई पेड़ सड़क पर काट कर बिछा दिये गये।

रसड़ा स्टेशन की फूंक

१७ अगस्त १९४२ को रसड़ा पर कब्जा करने के लिये लभभग २० हजार आदमियों की भीड़ चारों ओर की देहातों से आ गई। पहला आक्रमण स्टेशन पर हुआ। भीड़ को देखते ही स्टेशन के अधिकारियों ने फाटक में ताला लगा दिया। कुछ भीड़ फाटक तोड़कर प्लेट फार्म पर आई। स्टेशन मास्टर का कहीं पता न था। स्टेशन में वहुत सा माल भरा पड़ा था; जिसके जी में जो आया लेकर चलता बना। इसके बाद स्टेशन की सारी चीजें एकत्र की गईं और उन सब में आग लगा दी गई। स्टेशन की इमारत का एक कोना जला, पूरी इमारत में आग न फैल सकी।

बलवाइयों की भीड़ अब शहर की ओर बढ़ी। स्टेशन से कचहरी को जाने वाली सड़क पर आदमियां का हंगामा देखने लायक था। लगभग ३ बजे संध्या समय यह भीड़ पोस्ट आफिस पर आई वहां के कर्मचारी भाग निकले। भीड़ पोस्ट आफिस में घुस गई। टिकट, पोस्टकार्ड तथा अन्य कागजात बाहर निकाले गये और उनमें आग लगा दी गई। पोस्ट आफिस की इमारत किराये की थी, इसलिये उसे नुकसान नहीं पहुँचाया गया।

पोस्ट आफिस के पास ही कचहरी और थाने हैं। भीड़ का उद्देश्य सरकारी इमारतों पर कबजा करना भी था। कचहरी पर भीड़ चढ़ आई। वहां देखा गया ८-१० सशस्त्र पुलिस बंदूकें भर कर तैयार हैं। उपद्रवी भीड़ शान्त हुई। पुलिस सरकारी अफसरों और कांग्रेसी नेताओं में संधि हुई। कांग्रेस की ओर से डा० हरिचरण लाल, ठा० हर गोविन्द सिंह, मुहम्मद अयूब शौकती,

स्वामी चन्द्रिका दास और ठा० गिरधारी सिंह आदि थे। इधर से कहा गया कि हम सरकारी इमारतों पर केवल झंडा फहराना चाहते हैं। तहसीलदार सहमत होगये। स्वंय उन्होंने अपने हाथ से तहसील की इमारत पर झंडा फहराया।

धोखा और गोली कांड

रसड़ा के प्रमुख अवसरवादी श्री गुलाब चन्द के भाई श्री ठाकुर प्रसाद दौड़े आये। उन्होंने नेताओं से प्रार्थना की कि चलिये सब लोग मेरे यहां जल पान कर लें। उन्होंने अपनी गोदाम का फाटक खोल दिया। गोदाम में एक ओर सरकारी बीज गोदाम था, दूसरी ओर इंपीरियल बैंक का कुछ समान और तीसरी ओर उनकी २-४ कपड़े की गांठे थी। नेताओं ने इस विशाल जन समूह के साथ अंदर जाने से इनकार किया, किन्तु ठाकुर प्रसाद के आग्रह में बड़ा जोर था। अन्दर जाते ही उत्तेजित भीड़ ने बीज गोदाम लूटना शुरु कर दिया। इधर बा० गुलाब चन्द दौड़े थाने में आये। उन्होंने थाने से ८ सशस्त्र सिपाही लिये और वहां से थोड़ी ही दूर पर मुसहरों की बस्ती है, जहां से १०-१५ मुसहर बुला लिये। इन लोगों को गोदाम के फाटक पर खड़ा करा दिया।

फाटक पर आकर पुलिस वालों ने गोली चलानी शुरु की और मुसहरों ने अपने खंतो से चोट की। घबरा कर लोग उस पतले फाटक से गिरते पड़ते भागे। फाटक तक आते आते बहुतों को गोली लगी। वास्तव में उस समय गुलाब चन्द का हाता कुछ कुछ जालियां वाले बाग की याद दिला रहा था। सुल्तान पुर निवासी श्री हरी चमार और रसड़ा निवासी श्री विश्वनाथ राम तो वहीं गोली खाकर मर गये। कुल ४१ आदमी बुरी तरह घायल हुये, जिनमें से दो दूसरे दिन अस्पताल में मर गये। सैकड़ों को साधारण चोट आई।

स्टेशन की इमारत पर पहले से ही मुर्दनी छाई हुई थी। स्टेशन मास्टर और उनके सहायक इधर उधर छिपे थे। इनकलाब जिन्दाबाद के नारे के साथ भीड़ एकाएक प्लेटफार्म पर चली आई। स्टेशन की इमारत में आग लगा दी गई। हजारों आदमी इधर स्टेशन की दाह क्रिया कर रहे थे उधर डिस्टेंट सिगनल के पास इंदारा की ओर से आने वाली गाड़ी आ खड़ी हुई। सिगनल डाउन न होने के कारण गाड़ी काफी देर तक रुकी रही। इतने में किसी ने सिगनल भी डाउन कर दिया और गाड़ी प्लेटफार्म पर आ लगी। लोग ब्रेक वाले डब्बे पर टूट पड़े और उसे खोलने लगे। उस डब्बे में काफी माल था। अभी दो रोज पहले ही बिल्थरा रोड रेलवे स्टेशन पर पूरी मालगाड़ी लूटे जाने की खबर बलवाई सुन चुके थे। उस गाड़ी में ५ सशस्त्र पुलिस गाड़ी की हिफाजत के लिये मौजूद थी। मजमे का रुख देखकर पुलिस गारद ने गोली चलाई। एक आदमी के पैर में गोली लगी। बाकी लोग तितर बितर हो गये। गाड़ी थोड़ी देर तक खड़ी रही, फिर आगे बढ़ी।

रतनपुरा स्टेशन जलाया गया

भगवती सिंह हेड कान्सटेबुल ने अपनी रिपोर्ट में कहा:—

जब ट्रेन स्टेशन पर आकर खड़ी हुई तो मजमा में से अन्दाजन ५, ६ सौ आदमी ट्रेन के इंजन की तरफ लपके और इंजन के पास वाले डब्बे को हथौड़ी से तोड़ने लगे। उस डब्बे में काफी माल था जिसकी हिफाजत के लिये तावेदार के साथ गार्ड ट्रेन भी मौजूद था। कार मनसबी समझकर डब्बे से तावेदार अपने गारद को लेकर उतर गया और मजमा खिलाफ कानून से एलान करके कहा कि अगर तुम लोग फौरन हट नहीं जाते हो तो हम गोली चला देंगे। मजमा बजाय फरो होने के ढेला मारते हुए व गाली गुफ्ता देते हुए उसी डब्बे की तरफ आ गया।

एक राउन्ड गोली हमारे सिपाहियों ने और एक राउन्ड गोली तावेदार ने मजमा के ऊपर फायर किया। मजमा गिरता पड़ता भाग चला। चंद आदमी गोली से घायल होकर कुछ फासले पर गिर गये जिनको मजमा उठा भाग गया। मजमा फरी होने के बाद मैंने मुनासिब नहीं समझा कि ट्रेन देर तक खड़ी रहे और ड्राइवर को कहा कि फ़ौरन गाड़ी आगे बढ़ाओ और वहां से पूरब ट्रेन मज़कूर लेकर स्टेशन बलिया आया हूँ।

रतनपुरा का पोस्ट आफिस

रतनपुरा स्टेशन से थोड़ा हट कर एक सरकारी पोस्ट आफिस की इमारत पास ही थी। १६ अगस्त को लगभग १२ बजे दिन में पोस्ट आफिस पर आक्रमण हुआ। पोस्ट मास्टर ने भर सक बचाने की कोशिश की किन्तु उनकी एक न चली। दरवाजा तोड़कर लोग डाखाने के अन्दर दाखिल हो गये। जितने संदूक और थैले थे सब खोल डाले गये। ८५) नगद और १७) का टिकट मिला। डाकखाने के सारे कागजात, मय संदूक, बक्स, नकद और टिकट जला डाले गये।‡

---

‡The Sub-Inspector.
Haldharpur.

Sir

Today on the 16th of August 1642, at about noon, a mob of some 400 hundred persons entered the post office. They looted all the Government money and public papers, brought them out and burnt them, and fled away with the cash. I tried to protect these things to the best of my effort. But they began to ply lathis upon me. About 2-3 persons knocked me pown upon the ground and kept me under their weight. the The amount lost is mentioned below.

पोस्ट आफिस के कागजात जला लेने के बाद बागियों ने बीच गोदाम पर आक्रमण किया। सुपरवाइजर में सामना करने की हिम्मत न रही। सारा बीज गोदाम बात की बात में साफ़ हो गया।* भूखी और कुपित जनता दो ढाई मन के बोरे पीठ पर रखे इधर उधर जाती नजर आई।

बीज गोदाम पर आक्रमण

रतनपुरा हलधरपुर थाने में पड़ता है। रतनपुरा पर जो भीषण आक्रमण हुआ था उसका समाचार जब थाने में पहुँचा तो वहां की पुलिस के कान खड़े हो गये। उक्त घटनाओं का समाचार विदेशी चौकीदार ने थाने पर दिया और यह भी कहा कि स्टेशन जला डालने के बाद बलवाई थाने पर आक्रमण करने वाले हैं। स्टेशन पर जिस दिन आक्रमण हुआ उस दिन सब इन्सपेक्टर कुछ सिपाहियों के साथ हथियार से लैस होकर बलवाइयों का सामना

हलधर पुर थाना

---

(1) Cash Rs. 85/- and some annas.

(2) Stamps worth Rs. 17/-and some annas.

(3) They took all the cash inside the token.

(4) They burnt all the papers-they were old.

(5) They broke the delivery bag of the post master and threw it outside. But nothing was found in it.

Deo Narain singh, Branch post Master
Ratanpura-16/8/42.

*I beg to report that some robbers have looted the Government seed store at Ratanpura Depot.

Kanhia Shukla, Supervisor
16/8/'42,

करने चले किन्तु घटनास्थल तक नहीं पहुँच सके। उन्होंने भय-भीत होकर सिकंदरपुर के थानेदार के नाम सत्यनारायन पांडे के हाथ एक पत्र भेजा और सहायता माँगी।†

२३ अगस्त को लगभग ११ बजे दिन में हलधरपुर थाने पर आक्रमण हुआ। चारों ओर से भगभग ४-५ हजार आदमियों ने एकाएक थाना घेर लिया। थानेदार को इस आक्रमण का समाचार पहले ही मिल चुका था। वे भाग चुके थे। उनके भागने के बाद थाने के अन्य कर्मचारी भी भाग निकले। केवल दो कानेस्टेबिल सादी पोशाक में थाने के बाहर पड़े थे, उनके साथ कुछ चौकीदार भी थे। उन्होंने प्रतिरोध नहीं किया। थाना जला डाला गया, उसकी ईंटें पीट पीट कर तोड़ दी गईं। जो कागजात और दीगर सामान थाने के अन्दर मिले जला डाले गये।

†Bideshi Bhar, Chaukider of Ratanpura of t[illegible] circle lying five miles east of this station came [illegible] the thana and made a report that some 700-800 co[illegible] ressites and public men had come to Ratanpura fro... the northern corner. They were cutting wires, brea king glasses etc., and they were making preparations for burning the station and its papers.......He stated further that the congressites were saying that after burning the station they should raid the thana also and burn it. ...... Formal writings were sent through Pandit Satyanarain Pande to the sub Inspector Sikandarpur asking him to come to the thana with an armed guard,......

Rajnet Singh, Sub Inspector,
Generl Diary of
P. S. Haldharpur on 16. 8. 42.

इसके बाद थानेदार के निजी क्वार्टर पर आक्रमण हुआ। ताला तोड़ने पर पता चला कि वे अपनी सारी चीजें लेते गये थे। फिर भी जो कुछ मिला उसे एकत्र किया गया और उसमें आग लगा दी गई। क्वार्टर में भी आग लगा दी गई।

इस कांड के सम्बन्ध में मुँशी मथुरा लाल, स्वामी चन्द्रिका दास, और श्री बालेश्वर सिंह आदि पर मुकदमा चला। बहुतों की लम्बी सजायें हुईं।

पोस्ट आफिस में लगा लगी

थाने को जला लेने के बाद लोग हलधरपुर डाकखाने की ओर बढ़े। यह डाकखाना गाँव के प्राइमरी स्कूल में था और प्राइमरी स्कूल के हेडमास्टर ही पोस्ट मास्टर का काम करते थे। पोस्ट मास्टर ने आक्रमण का हाल सुनकर नकद और टिकट ...ाफे हटा दिये। भीड़ को डाकखाने पर कोई रोकने वाला नहीं ...सिए स्कूल के अन्दर सैकड़ों आदमी घुस पड़े और जिस कदर ...कागजात, मेज कुर्सियाँ और थैले वगैरह मिले उन्हें बाहर निकाल कर जला डाला। लेटर बक्स को तोड़ कर कुयें में डाल दिया गया।

बच्चों पर घोड़ा दौड़ाया गया

बलिया से २३ मील की दूरी पर सिकंदरपुर एक व्यवसायी कस्बा है। यहाँ थाना, डाक बङ्गला, पुलिस चौकी, मवेशी खाना, सरकारी बीजगोदाम और कई स्कूल हैं। १४ अगस्त को यहाँ के स्कूलों में कुछ कुछ हड़ताल रही।

१५ अगस्त को श्री राम नगीना राय, किसोर के साथ स्कूलों के छोटे छोटे बच्चों का एक जुलूस मिडिल स्कूल सिकंदरपुर पर आया। लड़के राष्ट्रीय गाना गा रहे थे और साथ में तिरङ्गा झंडा लिये हुये थे। मिडिल स्कूल के सामने जो लड़कों ने गाना

स्वतंत्र आश्रम
[खेजुरी]
जलाने के बाद

श्री चन्द्रिका प्रसाद
[खेजुरी]
का कारखाना
जलाने के बाद

श्री राधाकृष्ण
[चरमाइन]
का मकान जलाने
के बाद

गाया उसकी आवाज़ थाने तक गई। थानेदार शेख़ अशफ़ाक अहमद राष्ट्रीय भावनाओं के कट्टर विरोधी थे।

छोटे छोटे सैकड़ों लड़के स्कूल के एक एक कमरे में बारी बारी घुसते थे। हर एक विद्यार्थी को ३, ४ लड़का पकड़ता और बाहर निकालता। विद्यार्थी भी विरोध नहीं करते। आग्रह मान जाते थे। किन्तु अध्यापकों का रंग गाढ़ा था, जब बच्चे दूसरे कमरे में घुसते तो बाहर निकले हुये विद्यार्थी इधर अपने कमरे में दाखिल हो जाते। यह खींचातानी लगभग १ घंटे तक चलती रही। अंत में बहुतेरे विद्यार्थी बाहर निकले और सब के सब जुलूस बना कर जाने लगे। इतने में सब इन्सपेक्टर शेख मु० अशफ़ाक घोड़े पर चढ़े हुये आये और बिना कुछ पूछे ताछे जुलूस में बेतहाशा घोड़ा दौड़ाना शुरू किया। दस पन्दरह चक्कर दौड़े। बीसों लड़के इधर उधर गिर पड़े और जुलूस तितर बितर हो गया। श्री राम नगीना राय राष्ट्रीय झंडा लिये हुये खड़े थे। वे पकड़े गये और थाने की हवालात में बन्द कर दिये गये।

सिकंदरपुर थाने में दो मंडल हैं। एक सिकंदरपुर, दूसरा खेजुरी। खेजुरी मंडल में यद्यपि बाद को कोई उल्लेखनीय घटना नहीं हुई फिर भी शुरू शुरू में सिकंदरपुर के सब इन्सपेक्टर ने खेजुरी मंडल पर ११ अगस्त को ही धावा बोल कर कांग्रेस कार्य कर्ताओं को जिस प्रकार उत्तेजित किया उसका वर्णन लगे हाथ दे देना आवश्यक है। सिकंदरपुर की पुलिस ने ११ अगस्त को मंडल की इमारत की तलाशी ली। जो कागज़ात मिले उन्हें पुलिस उठा ले गई और मंडल की इमारत पर ताला मुहर लगा दी। १३ अगस्त को मंडल के कार्य कर्ता सैकड़ों आदमी लेकर मंडल के दफ़्तर पर चढ़ आये। उन्होंने पुलिस का ताला तोड़ डाला और इमारत पर राष्ट्रीय झंडा फहराया। पुलिस को जब

खेजुरी मंडल में गिरफ्तारियां

इस घटना का समाचार मिला तो उसने फिर खेजुरी पर धावा किया। भीड़ तब तक तितर बितर हो गई थी। रात भर पुलिस गश्त लगाती रही अन्त में बिसहर गाँव में लग भग ३ बजे रात को पं० नन्दलाल शर्मा, श्री केदारनाथ राय और पं० इन्द्रजीत तिवारी आदि ९ कांग्रेस कार्य कर्ताओं को गिरफ़्तार किया। १४ को ये लोग थाने में लाकर बंद किये गये और १५ को मोटर द्वारा बलिया भेज दिये गये।

११ अगस्त को ही सिकंदरपुर की पुलिस ने सिवान निवासी श्री राधा कृष्ण काँदू को भारत रक्षा विधान की ३४ वीं और ३८ वीं धारा के अंतर्गत गिरफ़्तार कर लिया। और बलिया जेल में बन्द कर दिया। १९४१ वाले सत्याग्रह में वे जेल जा चुके थे। पुलिस ने सोचा उन्हें गिरफ़्तार कर लेने से भारी आन्दोलन कमज़ोर पड़ जायेगा, किन्तु असर बिलकुल उल्टा हुआ।

१९ को बलिया जेल के सारे राजनीतिक बंदी रिहा हुये। (वर्णन आगे दिया जावेगा)।

सिकंदरपुर के थाने पर आक्रमण

जिले के विविध थानों और स्टेशनों से समाचार मिला कि या तो वे जला डाले गये अथवा उन पर जनता का अधिकार है। सिकंदरपुर का थाना तथा वहां की अन्य सरकारी संस्थायें क्यों कर बची रहें? २० अगस्त को मंडल के कार्यकर्ता एकत्र हुये, कार्य क्रम यह बना कि २१ को जनता आवे और सिकंदरपुर की सरकारी संस्थाओं पर अधिकार करे। गांव गांव संदेश भेज दिये गये। फिर क्या था, लगभग १५ हजार आदमी २१ को करीब २ बजे तक सिकंदरपुर कस्बे में एकत्र होगये।

कस्बे से भीड़ एक जुलूस बनाकर थाने की ओर बढ़ी। वक्त बदल चुका था। वे ही थानेदार जो १५ अगस्त को बच्चों

पर घोड़ा दौड़ा चुके थे. आज छिपे बैठे थे। बलवाइयों ने जब थाने पर शोर मचाना शुरू किया और फूंकने तापने की तैयारी की तो वे बाहर निकले। पूछा आप लोग क्या चाहते हैं। बहुतों ने कहा हम थाने की इमारत फूंकने आये हैं। सरकारी राज उठ चुका है। मुँशी अशफाक अहमद बात करने में बड़े तेज थे। उन्होंने कहा थाना आपका है। इमारत जल जाने पर फिर आपकी ही सरकार इसे बनवायेगी। थाने की इमारत को न फूंकिये. बाकी जो कहिये मैं मानने को तैयार हूं। बलवाइयों में से कुछ लोगों ने कहा हथियार और वर्दी दे दीजिये। उसे हम जलायेंगे। थानेदार राजी हो गये। दो बंदूकें दीं और कुछ वर्दियां। थाने पर झंडा फहरा कर लोग कस्बे में वापस आये।

कस्बे में पुलिस की चौकी थी। चौकी के अधिकतर सिपाही थाने में जा चुके थे। १० हज़ार आदमियों ने चौकी को घेर घेर लिया। एक टिन मिट्टी का तेल मगवाया गया। छिड़क कर चौकी की इमारत में आग लगा दी गई।

चौकी के पास ही मवेशी खाना था। वह जानवरों का जेल था। बलवाइयों ने उसका ताला तोड़ा. गदहे. घोड़े और बकरियां जो उसमें बंद थीं उन्हें बाहर किया।

लगभग दो फर्लाङ्ग की दूरी पर बीज गोदाम था। लोग वहां तक बढ़ गये। सरकार ही उठ गई तो सरकारी माल अपना माल है। इस भावना से उत्प्रेरित होकर बलवाइयों ने बीज गोदाम पर आक्रमण किया। लगभग २ बजे रात तक बीज गोदाम की लूट होती रही। बीज गोदाम का एक एक दाना तो चुन ही लिया गया उसका दर्वाजा भी लोग उठा ले गये।

मु० अशफाक अहमद ने इस घटना पर निम्न रिपोर्ट दी :—

२१ अगस्त को ४२ को ४॥ बजे दिन मजमा, कांग्रेसी मुसलहा

जिसमें वन्दूक, वल्लम, गड़ासा, कुदाली व लाठियों से जानिव पूरव, कस्वा सिकंदरपुर से नारा इनक़लाव जिन्दावाद वगैरह लगाता हुआ, जिनके आगे आगे एक वड़ा झंडा गौरी शंकर राय उर्फ़ छोटे लाल अपने हाथ में लिये हुये थे, मय अपने भाइयों मुसम्मियान झारखंडे राय, शिवप्यारे, छट्ठू राय, उमा राय, सिंगासन राय, सिवदास राय साकिनान पन्दह, इन्द्रजीत तिवारी रामनगीना तिवारी पकड़ी, नन्दलाल शर्मा अहिरौली, कुलदीप राय साकिन जठवार, चंद्रिका ओझा, राम सच्चन तिवारी, मुजही, सहदेव राय, रामलाल काँदू, फ़तेह वहादुर लाल, वलदेव सोनार, सहदेव सोनार, वालूपूर, विश्वनाथ लाल, चन्द्रिका लाल काँदू साकिन खेजुरी, कन्हैयालाल, जमादार दुवे, कमला दुवे कस्वा सिकंदरपुर, नगीना राय चेतनकिसोर, हीरा राय वल्द सीताराम राय, हीरा राय वल्द मान राय, हजारी राय मय आठ दस हज़ार आदमियों के चहार सिस्त से आकर इमारत थाना को घेर लिया। दो अदद वंदूक जिनकी वटन वहिकमत अमली तब्दील कर दी गई थी लिया और रजिस्टरान दफ़्तर और कुछ मुलाजिमान की वर्दी फूंक कर, झंडा कांग्रेसी गाड़ कर नारा इनक़लाव जिन्दावाद लगाते हुये वापस जानिव कस्वा गये। चुनांचे ७ वजे शाम को इमारत चौकी कस्वा सिकंदरपुर पहुँचे और इमारत चौकी पर तेल छिड़क कर आग लगा दी। मजमा को नज़दीक चौकी खड़ा कर के गौरी शंकर उर्फ़ छोटे लाल जो कांग्रेस का कलैक्टर वना हुआ था, उसने मजमा को सभापत कर के कहा कि भाइयों अव आप लोगों ने दिलोजान से मुकम्मिल सुराज लेने की कोशिश की जिसकी वजह से मुकम्मिल सुराज इस हिस्से का हो गया। अव मेहमत का कुछ सिला आप लोगों के फ़ौरन आगे है। चुनांचे अव आप लोग मेरे हमराह जैसे आये वैसे ही चलो। सरकारी वीज गोदाम जिस पर वहुत ज्यादा गल्ला गेहूँ, चना, मटर

मौजूद है और लोहे का सामान है चलो लूटो और अपने अपने घर ले जाओ।........कुल नुकसान इमारत चौकी और बीज गोदाम मिलकर २० हज़ार रुपये का हुआ।

कुतुबगंज घाट पर आक्रमण

सिकंदरपुर से लगभग २ मील उत्तर कुतुब गंज में घाघरा नदी पर स्टीमर का स्टेशन है। आसपास के यातायात के सारे साधन वंद थे। स्टीमर कभी कभी आया जाया करता था। २० अगस्त को दोपहर के समय वागियों ने स्टीमर घाट पर सहसा धावा वोल दिया। छप्पर के मकान में स्टेशन था। उसमें आग लगा दी गई। स्टेशन के सामान और कागजात सब जल गये। साल भर के वाद लिलकर के श्री प्रमोद राय और श्री हीरा राय पर इस संवंध में मुक़दमा चला किन्तु दोनों सज्जन सेशन अदालत से छोड़ दिये गये।

नवानगर में

सिकंदरपुर से लगभग ४ मील पश्चिम नवानगर है। वहाँ एक पोस्ट आफ़िस है। २२ अगस्त को ९ वजे सवेरे आस पास के गाँव के कार्य कर्ता नवानगर में एकत्र हुये। एक जुलूस वनाया गया जो मिडिल स्कूल और प्राइमरी स्कूल पर गया। दोनों स्कूल वंद हो गये। स्कूलों के विद्यार्थी जुलूस में शामिल हो गये। इसके वाद जुलूस नवानगर के डाकखाने पर आया। हज़ारों आदमियों की भीड़ देख कर पोस्टमास्टर ने दरवाज़ा वंद कर लिया। भीड़ का रुख विगड़ता हुआ देख कर आख़िर पोस्टमास्टर ने दरवाज़ा खोल दिया। डाकखाने के काग़जात, मेज कुर्सियाँ और पोस्टकार्ड लिफाफे जिस क़दर उनके पास थे जुलूस के सुपुर्द कर दिये गये। उन सारी चीजों में आग लगाई गई।

इसके वाद हुसेनपुर का प्राइमरी स्कूल वंद कराया गया। गाँजे की दुकान वाला जुलूस को पहले ही देख चुका था। उसने

अपनी सारी चीजें हटा दीं। दुकान के दरवाजे पर जो बाँस की ठटरी लगी थी उसे लड़कों ने तोड़ टाला।

कोथ पहुंचने पर देखा गया कि मवेशी खाने में कोई जानवर नहीं है। उसकी इमारत वहीं के किसी निवासी की है। कागजात शेख बदरुल सलाम के मकान पर थे। मागने पर उन्होंने सारे कागजात आगे रख दिये। फिर उनसे सरपंची के कागज मागे गये। शेख साहब ने उन्हें भी लाकर आगे रख दिये। सारे कागजात में आग लगा दी गई। थकी माँदी भीड़ आगे बढ़ी। अभी सिकंदरपुर जाना था। शिवप्रसाद की दुकान पर सब ने जल पान किया। कुछ लोग थाना फूंकने के लिये सिकंदरपुर की ओर बढ़ गये और बाक़ी लोग वापस अपने अपने घर लौट आये।

२१ अगस्त को सिंकदरपुर की बहुतेरी सरकारी संस्थाओं का ख़ातमा करके बागियों की भीड़ घर घर लौटी किन्तु सबके दिल में यह खटका रह गया कि थाने को बग़ैर फूँके वापस नहीं आना चाहिये था। थानेदार की बातों में लोग थोड़ी देर के लिये आ गये थे किन्तु यह सब को मालूम था कि उनकी बातों का कोई ठिकाना नहीं। नतीजा यह हुआ कि २२ अगस्त को देहातों से लगभग १०, १२ हजार की संख्या में लोग फिर आये। कस्बे में एक शानदार जुलूस बना। जुलूस में हाथी और घोड़े भी थे।

थाने पर दूसरा आक्रमण

इधर थानेदार और थाने के अन्य कर्मचारियों को भी २२ अगस्त को सवेरा होते होते मालूम हो गया कि बागी फिर आक्रमण करने वाले हैं। रात में ही थानेदार मु० अशफाक अहमद ने अपने बाल बच्चों और सामान को कस्बे में शेख़ अता हुसेन के मकान पर भिजवा दिया। वे स्वयं भाग कर बलिया चले गये। नायब थानेदार ने बलिया का रास्ता लिया। उन्होंने अपनी घोड़ी एक चौकीदार के हाथ आगे आगे भेजी और खुद पैदल लुक छिप

कर चले। थाने के सिपाहियों ने भी अपने अपने घर की राह ली। आक्रमण कारी बागियों ने घोड़ी को जाते देखा। घोड़ी जीन के साथ थी। श्री जलधारी सिंह उस पर सवार हो गये।

भीड़ जब थाने पर आई तो वहाँ पुलिस का कोई भी कर्मचारी नजर नहीं आया। लोग थाने के अन्दर और कर्मचारियों के क्वार्टरों में दाखिल हो गये। थाने में जो कागजात और वर्दियाँ मिलीं सब सब एकत्र की गईं। बाकी चीजों को लोगों ने अपने लिये चुन लीं। किसी ने घड़ी उठाई, कोई चारपाई लेकर चलता बना, किसी के हाथ बर्तन लगे, किसी ने दरी उठा ली और किसी को थानेदार की मुर्गियों से ही संतोष करना पड़ा। कुदालों से काट काट कर लोगों ने सारे जँगले और दरवाजे अलग किये। इसके बाद कागजात और वर्दियों तथा अन्य छोटी मोटी चीजों को एकत्र कर उन पर तेल छिड़क कर आग लगा दी गई। कुदाली और फावड़े से दीवारें काट डाली गईं और फिर उन पर लाठियों की ऐसी मार पड़ी कि दीवारें तो बिलकुल गिर ही गई, सारी ईटें चूर चूर हो गईं।

डाक बँगले पर आक्रमण

थाने का काम तमाम करके लोग डाक बंगले पर आये। डाक बंगले के चौकीदार ने अपनी सारी चीजें समेट लीं। पहले लूट हुई। अच्छी से अच्छी दरियाँ चारपाइयाँ और कुर्सियाँ बागियों के हाथ लगीं। एक पंडित जी को कुछ न मिला तो एक कमोड ही उठा लिया, समझा कि स्टूल है। इसके बाद इमारत में आग लगा दी गई। बिचारा चौकीदार एक कोने में खड़ा हो कर रो रहा था मानो उसका निजी घर जल रहा हो।

सिकंदरपुर थाने के अफसर दोयम अपनी रिपोर्ट में लिखते हैं :—

ता० २२ अगस्त १९४२ को वक्त २ बजे दिन मजमा कांग्रेसी

झंडा लिये हुये व बल्लम, गड़ासा, टांगी, गड़ासी, ईंटा, कनस्टर मय तेल मट्टी हर चहार तरफ के एकबएक दौड़ा हुआ आया और इमारत थाना को अफसरान व मुंशी को दीगर मुलाज़मान को घेर लिया। जो मजमा पूरब से आया, आगे मजमा के मेरी घोड़ी पर जो साईस ले जा रहा था करीब जंगल जमुआँव कांग्रेसी जो खेजुरी की तरफ से आ रहा था, मुलाकात हुई। मेरी घोड़ी को साईस से छीन कर मुसम्मी जलधारी सिंह कांग्रेस लीडर साकिन पुर चढ़ लिया और साईस को मुश्क बाँध कर मुसम्मी राम सरन नोनिया साकिन जगदरा अपने हरासत में लाया।

मजमा कुल तखमीनन ८, १० हजार का था। कार्टरान थाना में तेल छिड़क कर आग लगा दी और इनकलाब जिन्दाबाद का नारा लगाना शुरू किया। बाद फूंकने इमारत थाना व कार्टर अफसरान व मुँशी कार्टर, आलमारी सरकारी अशयाय, दरवाजा व अलमारी. व छड़, जँगला इमारतहाय व आलात व माल असबाब सरकारी व निजी मुलाजिमान को लूट कर व फूंककर जानिब डाक बँगला वापस चले। चुनांचे डाक बँगला पर जाकर उसको भी फूंका और उसके अशयाय लूट कर व सामान इमारत निकाल कर जानिब पंदह व दीगर सिम्त ले गये। नुकसान तखमीनन १५ हज़ार रुपये का हुआ है।

सिकंदरपुर के कांडों के संबंध में सर्व श्री गौरीशंकर राय, मनबोध रँगबा, शिवपूजन राय, हीरा राय, पे० मानराय, हीराराय पे० सीताराम राय, हजारी राय, चन्द्रिका ओझा, राम सबन तिवारी, जलधारी राय, राजकिशोर राय, धर्मदेव पांडे, गनेश राय, हरीराय, परशुराम मिश्र, कवलदेव अहीर, प्रमोदा राय, सूर्य दीप राय, रामधारी शर्मा, विश्वनाथ राय (१), विश्वनाथ (२), विश्वनाथ लाल, शंकर दत्त, कन्हैया लाल, देवनाथ उपाध्याय, सुग्रीव राय और राधाकृष्ण कांदू पर मुकदमे चले। सर्व

श्री कन्हैयालाल
[सिकंदरपुर]
की दुकान जलाने
के बाद
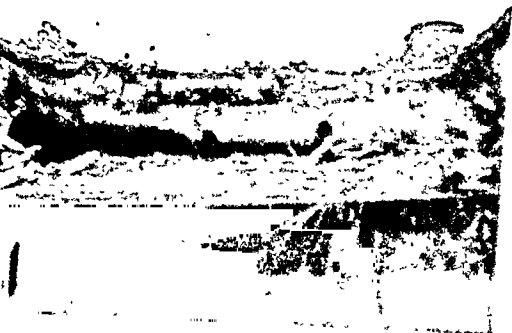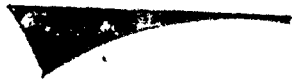
श्री रामनगीना राय
[फिसांग]
के मकान का
भग्नावशेष

श्री राधाकृष्ण कांदू, शंकर दत्त, रामनगीना राय और सुग्रीव राय को सेशन अदालत से जेल की सजा हुई। श्री सुग्रीव राय और राम नगीना राय को पूरी सजा काटनी पड़ी और श्री शंकर दत्त तथा श्री राधाकृष्ण अपील करने पर छोड़ दिये गये।

गड़वार थाने पर आक्रमण

गड़वार थाने के थानेदार बा० वंशगोपाल सिंह का ज़िले में बड़ा नाम था। लगभग १४, १५ वर्ष से बलिया जिले के विभिन्न थानों पर काम कर चुके थे। कुछ दिनों तक खुफिया विभाग की भी सेवा कर चुके थे इससे उन्हें पुलिस के सारे हथकंडे अच्छी तरह मालूम थे। १३ अगस्त तक तरह तरह की अफवाहें सुनाई देने लगी थीं। वे बलिया आये ताकि वास्तविक स्थिति का परिचय मिले। यहां का हाल भी कुछ अच्छा नहीं दिखाई दिया। उनसे कहा गया कि जाकर थाने की हिफाजत करें। उन्हीं के हल्के में १६ को चिलकहर स्टेशन जला और १८ को फेफना में बंदूकधारी सिपाही लूट लिये गये। स्थिति बिगड़ती देख कर उन्होंने १८ अगस्त को जिले के अधिकारियों से सशस्त्र पुलिस की सहायता मांगी। जो सिपाही उनका पत्र लेकर आया था वह पुलिस कप्तान का एक पत्र १९ अगस्त को इस आशय का लेकर वापस आया कि 'हिकमत अमली' से असलहा बचाये जांय, सरकार कोई फोर्स नहीं भेज सकती। यह समाचार पाना था कि कुछ सिपाहियों ने थाना छोड़कर घर की राह ली। ४, ५ सिपाही रह गये। हेड मुहर्रिर मि० अब्दुल रशीद के बाल बच्चे थाने पर मौजूद थे। उन्हें स्थानीय कांग्रेस कार्य कर्ता श्री शिवपूजन सिंह के हवाले कर दिया गया। उन्होंने बच्चों की सुरक्षा का जिम्मा अपने ऊपर लिया। ३ और सिपाहियों ने उनके मकान पर शरण ली।

आस पास के कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने २० अगस्त को सभा

की। निश्चय हुआ कि २१ को ९ बजे सवेरे थाने पर आक्रमण हो। इस निश्चय की घोषणा रातों रात देहात में कर दी गई। नतीजा यह हुआ कि ८॥ बजे तक थाने के सामने कई हजार आदमी एकत्र हो गये।

थानेदार एक दिन पहले ही बलवाइयों के आक्रमण का समाचार पाकर थाने से एक मील दूर बुढ़ऊँ गांव में चले गये थे। वहीं थाने के हथियार और जरूरी कागज़ात थे।

९ बजे थाने में आग लगादी गई। सारी इमारत जल उठी। कार्टर भी जला डाले गये थाने की जो भी चीजें वहाँ मिलीं आग में डाल दी गईं। दिन भर आग जलती रही, कोई बुझाने वाला नहीं था।

कांग्रेस वादियों का एक दल थानेदार की खोज में चला। उनकी जान मारने का विचार किसी को नहीं था। हाँ उनका हथियार लोग अवश्य लेना चाहते थे। लगभग ११ बजे तक लोग बुढ़ऊँ गाँव में पहुँच गये। थानेदार ने सरकारी हुक्मनामा (जिसके अनुसार उनसे 'हिकमत अमली' से असलहा की हिफाजत करने को कहा गया था) खपैरल में छिपा दिया और श्री राजदेव सिंह (जिसके मकान में ठहरे थे) से कहा कि बागी अगर मुझे मार डालें तो इस कागज को सरकार के सामने पेश करना, इसके बिना पर मेरे बच्चों को पेंशन तो मिल जायगी।

थानेदार बाहर आये। श्री विश्वनाथ चौबे और महानन्द मिश्र सामने पड़े। पीछे सैकड़ों की भीड़ थी। लोगों ने हथियार और कागजात मांगे। बंदूक, रिवाल्वर, भाले, हथकड़ी, रस्सी और कागजात बात की बात में मिल गये। बागी हथियार लेकर चलते बने, शेष चीजें जला डाली गईं।

२३ अगस्त को थानेदार ने फिर बलिया के अधिकारियों को

लिखा कि पुलिस फोर्स भेजा जाय ताकि मैं सदर में आऊँ। फौज की एक टुकड़ी आई और उन्हें वलिया ले गई।

सर्व श्री विश्वनाथ चौवे, महानन्द मिश्र, शिवपूजन सिंह आदि २१ आदमियों पर पहले मुकदमा चला। बहुतों को ३-३ साल की सजा होगई। बाद को श्री रामचन्द्र अहीर, रामनाथ बरई, जमुना सिंह, जगदीश सिंह और मानधाता सिंह पर भी स्टेशन फूंकने और हथियार लूटने का मुकदमा चला, किन्तु सेशन जज ने कइयों को छोड़ दिया।

हल्दी पोस्ट आफिस में आग लगी

१७ अगस्त को लगभग ३ बजे संध्या समय बागियों की एक भीड़ हल्दी के पोस्ट आफिस पर पहुँची। यह पोस्ट आफिस बड़ा था और यहाँ कारबार काफी होता था। लगभग १०० आदमियों की भीड़ ने चुपके से आकर पोस्ट आफिस को घेर लिया। पोस्ट मास्टर डाकखाने का ताला बंद करने ही वाले थे कि लोगों ने उन्हें पकड़ लिया। भीड़ डाकखाने के अन्दर दाखिल हो गई। सेफ में ३००) नगद मिला और कुछ गहने भी थे। पोस्ट मास्टर ने कहा कि ये रुपये और गहने हमारी लड़की के हैं। ये चीजें उसे लौटा दी गईं। कैश बक्स में ६) और कुछ आने नगद मिले यह कांग्रेस कोष में श्री रामपति राय कोषाध्यक्ष के यहां जमा हुआ। सेविंग बैंक और नये आये हुए मनी आर्डर फार्म को छोड़कर बाकी हरएक चीज डाकखाने के बाहर लाकर जला डाली गई। डाकखाने की इमारत में कांग्रेस की ओर से ताला पड़ गया।*

---

*The Post Office of Haldi has been looted by a gang of public having Congress flag in the hand of a man who commanded the gang They were armed with

पोस्ट आफिस जला डालने के बाद बलवाइयों का समूह हल्दी जहाज घाट पर आया। भीड़ को स्टीमर स्टेशन जला देखते ही स्टेशन मास्टर भाग चले और ऐसे भागे कि फिर लौट कर वापस आये ही नहीं। रजिस्टर और टिकट तथा मेज कुर्सियां जला डाली गईं। लोहे की बनी जो चीजें थीं, उन्हें एक आदमी के सुपुर्द कर दिया और कहा गया कि जब तक कांग्रेस सरकार इस स्टेशन का चार्ज न ले आप इन चीजों को सुरक्षित रखें।

इसके बाद भीड़ शराब की दुकान पर आई। ठेकेदार ने लाख मिन्नतें कीं. कांग्रेसवादियों के पैरों पड़ा किन्तु उसकी सुनता ही कौन था ? बात की बात में हजारों रुपये की शराब उड़ेल दी

---

spears, lathis etc. Here is nothing left in the office except two chairs, one table and three almirahs. All the records, books, registers and other forms and furniture havs been burnt to ashes. The cash box containing cash, stamps and cash certificates etc. have been taken away by them.

Please enquire and do the needful. The occurrence took place at 3-30 P. M.

However, the following persons have been recognised :—

Subhnarain Kunwar, Dadan Upadhyaya, Raghunath Singh, Deonath Tiwari, Indrajit Singh, Brijraj Kunwar, Gajadhar Kunwar, Bhola Singh, Kalika Tiwari. Bishwanath Singh, Mahadeo Tiwari and Rambrichh Tiwari.

Prayag Nath. Postmaster.

गई और बोतल वगैरह तोड़ दिये गये। यही नकशा गांजे की दुकान का रहा। दुकान में गाँजा नाम को ही था। उसे फूंक दिया गया और दुकान में आग लगा दी गई।

हल्दी का सारा कांड लगभग ५॥ बजे शाम तक समाप्त हो गया। इसके बाद भीड़ भड़सर की ओर बढ़ी।

भड़सर का पोस्ट आफिस

आते आते रात हो गई। गाँव वालों ने समझा कि डाकू हैं, इस लिये वे मुकाबला करने के लिये उठ खड़े हुये। फिर उन्हें मालूम हुआ कि ये कांग्रेसवादी हैं और केवल पोस्ट आफिस के कागजात जलाने आये हैं तो उन्होंने हथियार रख दिया और साथ हो लिये। पोस्ट आफिस के सारे कागजात निकाल कर जला डाले गये। लोगों ने जब आलमारी खोलना चाहा तो पोस्ट मास्टर की स्त्री आकर वहाँ खड़ी हो गई। उसके हाथ में एक कटार थी। उसने कहा कि यदि आलमारी छूओगे तो मैं अपने पेट में कटार मार दूंगी। लाख समझाने पर भी वह हटने वाली न थी। घंटों हुज्जत हुई। आखिर भीड़ को हट जाना पड़ा।

पास ही शराब और गाँजे की दुकानें थीं। शराब उड़ेल दी गई और गाँजे का स्टाक फूंक दिया गया। गाँजे की दुकान पर कुल ३ पैसा नकद हाथ लगा, वह कांग्रेस कोष में जमा हुआ।

भड़सर तक जो भीड़ आई थी वह रातो रात बसरिकापुर तक बढ़ आई। यहां पोस्ट आफिस था जिसे

बसरिकापुर का पोस्ट आफिस

फूंकने का विचार था। रात के लगभग ११ बज चुके थे। गाँव वालों ने उन्हें बुलाकर बैठाया और जलपान कराया फिर उन्होंने विश्वास दिलाया कि आप लोग अब जाइये, कल स्वयं हम लोग पोस्ट आफिस के कागजात जला देंगे। ऐसा ही हुआ। दूसरे दिन

(१८ अगस्त) को वसरिकापुर पोस्ट आफिस के सारे कागजात फूंक दिये गये।

नौरंगा घाट का अग्नि कांड

१६ अगस्त १९४२ को जो स्टीमर बलिया की ओर से नौरंगा घाट पर आया उस पर बलिया से कई कांग्रेस स्वयं सेवक चढ़े हुये आये। पूर्व निश्चित कार्य क्रम के अनुसार एक भीड़ घाट से थोड़ी दूर पर बैठ कर स्टीमर के आने का इंतजार कर रही थी। स्टीमर के खड़ा होते ही भीड़ के लोग उस पर चढ़ गये। स्टीमर पर जो 'वी' (विजय) का निशान बना हुआ था उसे सबसे पहले तोड़ा। फिर एक एक चीज उठाकर गंगा में फेंक दिया। स्टीमर के इंजन को भी नुकसान पहुँचा और उसका लंगर काट कर फेंक दिया। बढ़ी हुई नदी में स्टीमर बह गया।

इसके के बाद स्टेशन की बारी आई। भीड़ ने इस पर भी आक्रमण किया और सारे कागजात, मेज कुर्सियां, टिकट मय स्टेशन की इमारत को जला डाला। जो चीजें जलने से बच गई उन्हें नाव पर चढ़ा कर बीच नदी में ले जाकर पानी में फेंक दिया। स्टीमर घाट के सब एजेंट श्री कालिका प्रसाद ने जो रिपोर्ट ज्वायंट एजेंट को भेजी उसमें सर्व श्री भूपनारायण सिंह, दर्शन सिंह, परशुराम सिंह, रामजन्म पांडे, पूतन मिश्र, नागेश्वर मिश्र और पारस राय का नाम बताया।*

---

*The steamer "Hermas" came here at 10. 30 from Ballia with passengers, The passengers were landing. All of a sudden a mob Congress volunteers nearly 500 or 700 in number entered in the steamer and destroyed the steamer articles and threw in the Ganges the life buoys, the buckets, the

सहतवार मंडल के काँग्रेस कार्यकर्ताओं की बैठक १३ अगस्त को हुई। मंडल कांग्रेस कमेटी के प्रधान मंत्री

सहतवार में बैठक श्री इन्द्रदेव प्रसाद को बड़ी चिन्ता रहती कि हमारा मंडल अन्य मंडलों से पीछे न रहे। किन्तु किया क्या जाय ? कार्य क्रम क्या है ?. इतने में अफवाह आई कि रेलवे स्टेशन, डाकखाने, थाने तथा अन्य सरकारी संस्थायें जलाई जा रही हैं। स्थानीय कार्य कर्ताओं ने भी इसी कार्यक्रम का प्रतिपालन किया। १४ अगस्त को डाकगाड़ी के गार्ड को लोगों ने बहुत परेशान किया। गाड़ी को करीब ३० मिनट तक रोक लिया। एंग्लो

---

furniture and other things. And were ready to burn the steamer. I requested them very much not to make any Golmal but to no effect.

After that the mob of the Congress volunteers ran up to my station and burnt the station, huts furniture, records, beams, scales iron safe, tickets almirah and pigeon hole.

Most of the articles were burnt and some of them were thrown in the river. I requested them very much not to make these Golmal, but they did not hear and set fire in my station. Every thing has been burnt. Please note. The name of the Congress workers and volunteers whom I recognised are given below.

Bhuo Narayn Singh, Sudarshan Singh, Parshuram Singh, Ram Janam Pande, Pitum Misara, Nageshar Misir, Paras Ram

Kamla Prasad Singh. Sub Agent.

इण्डियन गार्ड ने जब अपने मुँह से 'गांधी जी की जै' का नारा लगाया तो लोगों ने उसे छोड़ा।

१७ अगस्त को लगभग ४ बजे संध्या समय बागियों की भीड़ जिसमें लगभग १५ हजार सशस्त्र नौजवान थे सहतवार थाने पर सहतवार के थाने पर जा पहुँची। थाने वालों को आक्रमण पहले से आतंक तो था ही. इतनी बड़ी भीड़ को देख कर उनके होश उड़ गये। भीड़ ने थाने को चारों ओर से घेर लिया और इनकलाब जिन्दाबाद के नारे लगाने शुरू किये। थाने वालों ने पहले तो फाटक बंद कर दिया और भीड़ को समझाने बुझाने की कोशिश की। किन्तु कोई मानने वाला नहीं था। जैसे जैसे समय बीतता गया भीड़ उत्तेजित होती गई। थानेदार ने बाहर आकर पूछा 'आप क्या चाहते हैं'। प्रतिनिधियों ने कहा, हम थाने पर अधिकार करने आये हैं, आप लोग २४ घंटे के अंदर यहां से निकल जाइये। हम झंडा लगायेंगे और अब से हमारा पहरा रहेगा। थानेदार अभी उत्तर देने ही वाले थे कि हजारों आदमी थाने के अन्दर घुस गये। और कागजात इकट्ठा करके जला डाले। थाने की इमारत पर कांग्रेस का झंडा लगा दिया गया। थानेदार ने वादा किया कि कांग्रेस के हुक्म के मुताबिक हम २४ घंटे में मय दीगर मुलाजिमान थाना खाली कर देंगे। तब से कांग्रेस के स्वयं सेवकों ने पहरा देना शुरू किया।

भीड़ ने डाकखाने पर आक्रमण किया। थाने पर बलवाइयों की जो विजय हो चुकी थी उसे देखकर भी पोस्ट डाकखाने पर आक्रमण मास्टर अपने डाकखाने की ममता नहीं छोड़ना चाहते थे। बहुत कहने सुनने पर भी जब वे न माने तो भीड़ ने उनकी परवा न करके डाकखाने का दर्वाजा तोड़ना शुरू किया। पोस्ट मास्टर भाग खड़े हुये।

डाकखानों के कागजात, पोस्ट कार्ड लिफाफे, मुहर, थल-सब जला डाले गये। इमारत पर काँग्रेस का झंडा लगाया गया।

रेलवे स्टेशन का अग्निकांड

भीड़ ने १७ अगस्त को संध्या समय सहतवार के रेलवे स्टेशन पर आक्रमण कर दिया। स्टेशन के कर्मचारी पहले से डरे हुये थे। वहां जो पुलिस रहा करती थी वह भी थाने की रक्षा करने चली गई थी। स्टेशन मास्टर तथा स्टेशन के अन्य कर्मचारी अपना असबाब और अपने बाल बच्चों को ही हटाने में लगे थे। भीड़ ने आते ही ताले तोड़ दिये और सारे कागजात तथ मेज कुर्सियों पर मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगा दी। पार्सल या माल जो कुछ भी स्टेशन की इमारत के अंदर था आग के सुपुर्द कर दिया गया।*

---

* On 17. 8. 42 when the Armed Police was withdrawn from the station to protect the thana, our wives and children were weeping bitterly and we were busy in binding our luggage, a mob came to the station in the afternoon and set fire to the station. We came running and extinguished the fire with the help of the staff. When we came, they fled away. As far as we came to know, they were the following men :—

Mandhir Ahir, Din Dayal Singh, Jamuna Singh Sripat Kunwar, Raghunath Pathak.

Station Master.
Sahatwar.

टाउन एरिया दफ्तर में लूट

१८ अगस्त को लगभग ४ बजे डेढ़ दो सौ आदमियों की भीड़ सहतवार टाउन एरिया पर आई। टाउन एरिया के बख्शी अली मुहम्मद एक दिन पहले ही अपना दफ्तर छोड़ कर भाग गये थे। उन्हें डर था कि जैसे स्टेशन, पोस्ट आफिस और थाने पर बलवाइयों का अधिकार हो चुका है वैसे ही टाउन एरिया के दफ्तर पर भी हो जायेगा। जरूरी कागजात वे अपने साथ लेते गये। क्रान्ति की ज्वाला जब शान्त हुई तो वे वापस आये।

१८ अगस्त को जब आक्रमण हुआ तो टाउन एरिया दफ्तर का ताला बन्द था। लोगों ने उसे तोड़ डाला और कागजात मय दीगर सामान लेकर चलते बने।

टाउन एरिया के बख्शी मि० अली मुहम्मद ने घटना का वर्णन देते हुये लिखा :—

अर्ज है कि १८-८-४२ को ४-५ बजे शाम के करीब हस्ब जैल अश्खास दफ्तर टाउन एरिया और हमारे मकान को जो दफ्तर से मुतहिक है जमुना सिंह लँगड़ा के लीडर शिप में घुस पड़े और दफ्तर टाउन एरिया और मेरे मकान का सामान जिसकी फिहरिस्त हम बाद को देंगे लूट ले गये इस वाकया को हर हंगी मुलाजिम टाउन एरिया व रामपूजन सिंह जमादार टाउन एरिया ने देखा है। लूटने वालों में हस्ब जैल अश्खास शामिल थे :—

शिवगोपाल सिंह, शिवनाथ कुँवर, केदार कुँवर, कामता कुँवर, सदा शिव कोइरी, शिवबालक तुरहा, चंद्रिका राय के भाई रामराज, बलीराम, जमुना राय लंगड़ा, गंगा माली, महंत राय, दमड़ी लाल।*

---

*रिपोर्ट इत्तला अव्वल थाना सहतवार।

थाने के बाहर कांग्रेस वादियों का पहरा था किन्तु भीतर पुलिस वाले पड़े थे। उन्हें २४ घंटे का निकलने के लिये मौका दिया गया और वास्तव में २४ घंटे के अंदर ही वे बाहर चले गये। वर्दी, पेटी तो पहले ही जलाई जा चुकी थी। थाने के सिपाही एक एक कर के सादी पोशाक में रातों रात निकल गये। कुछ ने आसपास के गावों में छिप कर शरण ली और कुछ अपने अपने निवास स्थानों को चले गये।

सहतवार थाने पर दूसरा धावा

जनता को डर हुआ कि कहीं पुलिस फिर जोर न पकड़ ले। निश्चय हुआ कि १९ अगस्त को थाना जलाया जाय। यद्यपि वहां कोई सिपाही नहीं रह गया था और यदि ५ आदमी भी चाहते तो उसे फूंक सकते थे किन्तु सज धज के साथ फूंकने में कुछ और ही शान है। हजारों आदमी निश्चित समय पर आ गये। तेल छिड़क कर थाने की इमारत में आग लगा दी गई। जो सामान थाने में या क्वार्टरों में बच गया था वह भी जला डाला गया। थाने की इमारत को फावड़े और बरमे से खोद खोद गिरा दिया गया। मु० हबीब खां ने रिपोर्ट में लिखा:—

१७ अगस्त सन् १९४२ ई० को बवक्त करीब ५ बजे शाम २०–३० हजार आदमियों का मजमा जो लाठी बल्लम और गड़ासा से मुसलह थे नारा लगाते हुये थाने की इमारत को चारों तरफ से घेर लिया हर चन्द रोक थाम की गई और सबील मुनासिब मजमा के भगाने की की गई। लेकिन मजबूरी थी और मजमा थाना के अन्दर घुस पड़ा। कोठरियों और दफ्तर में घुस कर रेकार्ड फूंकना और मुलाजमीन का माल असबाब लूटना शुरू कर दिया। बवक्त शाम थाना छोड़ने पर २४ घंटा की मुहलत देकर मजबूर किया और सरकारी सामान और मुलजिमान के

लूटे हुये सामान ले कर चले गये। इस मुहलत के दरमियान चारों तरफ से थाना का घेरा डाले हुये थे। वलिया सदर या किसी मुकाम पर जाने का रास्ता न पाकर मुलाजिमान ने १९ अगस्त सन १९४२ ई० कस्वा सहतवार में जाकर पनाह लिया। थाना छोड़ने के वाद मालूम यह हुआ कि फिर इसी मजमा ने इमारत थाना को उजाड़ कर लूट लिया और फूंक दिया जिसको जुमला मुलाजिमान थाना व चौकी सहतवार वचश्म खुद देखा है। इस मजमा का हेड लीडर जमुना राय सा० दतौली था और वह श्रीपत कुंवर, इन्दर देव राम, वालेश्वर ओझा, राम लखन सोनार, रघुनाथ पाठक, राम राज सिंह, रामलखन कलवार, श्री कृष्ण कलवार, विश्वनाथ रौनियार, जमुना सिंह, रापट राय डाकूर कमला के जेर में जुर्म कर रहा था।*

रेवती की पुलिस चौकी

१८ अगस्त को लगभग ४ बजे संध्या समय करीब १०,००० आदमियों की एक भीड़ पुलिस चौकी के फाटक पर आ खड़ी हुई। कांग्रेस जनों का कार्यक्रम चौकी की पुलिस को पहले से ही मालूम हो चुका था। वे लोग १७ अगस्त को ही अपना हथियार लेकर चलते बने और थाना सहतवार में जाकर शरण ली। बलवाई जोर-जोर से नारा लगाते हुये पुलिस चौकी के हाते के अन्दर दाखिल हुये। हाते का फाटक तोड़ डाला गया। भीतरी कमरों का ताला भी तोड़ा गया। जिस कदर सामान मिला एकत्र करके फूंक दिया गया। चौकी की इमारत के आगे एक छप्पर था जिसमें वहां के कर्मचारी उठते-बैठते थे, उसमें भी आग लगा दी गई। चौकी की पक्की इमारत को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया

*चेक नं० ९१ थाना सहतवार जबानी मु० हबीब खाँ, हेडमुहर्रिर।

गया। सारा सामान जब जल कर खाक हो गया तो एक कांग्रेस स्वयंसेवक को वहाँ का इन्चार्ज बना दिया गया और इमारत पर कांग्रेस की ओर से ताला लगा दिया गया।

हेड कान्स्टेबिल ने इस घटना की रिपोर्ट में लिखा:—

१७ अगस्त १९४२ को ववक्त ५ बजे शाम सूरज सिंह साकिन श्रीनगर की लीडरी में एक मजमा जो करीब दस हजार आदमियों का था, चौकी के सामने नारा लगाता हुआ गुजरा। अफसर दोयम साहब उस वक्त मौजूद थे। मजमा का इरादा चौकी लूटने फूंकने और उस पर कब्जा करने का था।............अशियाय सरकारी व मुलाजिमान के निजी सामान जहां तक छिपाया जा सका छिपाया गया। चौकी बंद कर दी गई। हम लोगों के चले जाने के बाद भी मजमा ने फिर वापस आकर चौकी को लूटा और फूंका। मुलाजिमान व चौकीदारान व पब्लिक से फूंकने व लूटने वालों के जिस कदर नाम मालूम हो सके हस्ब जेल हैं:—

हरवंश मिश्र, लछमण केसरवानी, हरवंश ओझा, लाल मोहर, सूरज मिश्र, वरमेश्वर तिवारी, सूरज सिंह, जगा तिवारी, राम निशान पांडे, रामनारायण मिश्र, रामधारी सिंह, अजोध्या प्रसाद, बच्चा तिवारी, विश्वनाथ बरई, बलराम सिंह, अभिमन्यु पांडे, राम पूजन तिवारी, पारस पांडे।

बीज गोदाम पर अधिकार

बलवाइयों ने बीज गोदाम पर धावा किया। वहां के सुपरवाइजर, कामदार और अन्य नौकर तालों का गुच्छा दे कर अलग हट गये। बीज गोदाम पर कांग्रेस का पहरा बैठा दिया गया। एक स्थानीय कांग्रेसजन को उसका इन्चार्ज बनाया गया। निश्चय हुआ कि बीज बोने का मौसम जब आयेगा तो कांग्रेस की देख-रेख में यह गल्ला किसानों में बांटा जायगा।

द्वावा के अंदर सवसे पहला जवरदस्त आक्रमण सुरेमनपुर रेलवे स्टेशन पर १५ अगस्त को लगभग ३ बजे दिन को हुआ। करीव १० हजार आदमियों की एक भीड़ एकाएक स्टेशन पर टूट पड़ी। स्टेशन के अधिकारी भीड़ को देख कर आवाक रह गये। प्लेटफार्म पर. लाइन पर, मुसाफिर खाने में, स्टेशन में जहां देखिये विशाल जन समूह 'इनकलाब जिन्दावाद' के नारे लगा रहा था और विध्वंस कार्य में लगा था। किसी ने पटरी उखाड़ी. किसी ने तार काटा और किसी ने सिगनल तोड़ा।

सुरेमनपुर स्टेशन पर आक्रमण

स्टेशन मास्टर ने स्टेशन के कमरे का ताला वंद कर रखा था। दरवाजा तोड़कर भीड़ अन्दर घुसी। सारे सामान, कायजात, टिकट और औजार निकाले गये। स्टेशन में ही मिट्टी का तेल पड़ा था। तेल छिड़क कर कागजात में आग लगा दी गई। लकड़ी का सारा, पार्सल वगैरह जो स्टेशन में मौजूद था जल गया। इमारत भी जल कर गिर गई। जो सामान लोहे का था और जल न सका उसे उठाकर वागियों ने पास के नाले में गिरा दिया।* सुरेमनपुर की गांजे और शराव की दुकानें भी जला डाली गईं।

---

*A crowd of about 10,000 persons mostly Congress men of neighbouring villages holding Congress flags attacked suddenly. At about 15hrs. of date, they forcibly entered the station office, assaulted and handicapped the staff, broke, the locks doors, glasses, root files, etc. and set the office records, instruments, tickets and the tools and plants on fire for about one hour and threw some damaged articles in water and took away something with them. After that a party of the

इसके वाद क्रान्तिकारियों का दो दल होगया। एक वकुलहा स्टेशन की ओर गया। रास्ते में जितने भी सिगनल पड़े थे गिरा दिये गये। तार के खंवे गिराये और रेल की पटरियाँ उखाड़ी। पानी का पंप तोड़ दिया गया और जहाँ तहाँ पड़ी हुई रेलवे की जायदाद जैसे लकड़ी और कोयले में आग लगा दी गई। रास्ते में जो गोमटियां पड़ीं वे भी तोड़ फोड़ डाली गईं।

इस संबंध में सर्व श्री वंशरोपन राम, शिवपूजन राम, भगवती पांडे, डोमन चमार, शिवपूजन सोनार और सुन्दर नोनिया आदि पर मुकदमे चले। कुछ अभियुक्तों की सजा सेशन अदालत से होगई और कुछ रिहा कर दिये गये।

वकुलहा स्टेशन पर आक्रमण

जैसा पहले कहा जा चुका है वकुलहा स्टेशन की ओर जो भीड़ सुरेमनपुर से गई वह रास्ते में विध्वंस करती गई। वकुलहा स्टेशन पर जाकर इसने वहाँ के प्वाइंट्स, पटरी, स्लीपर उखाड़ दिये और स्टेशन के कागजात और टिकट

---

excited mob turned towards Reoti side and one part towards Bakulaha side, damaged the track, dismantled the rails, lever box, switches, points, indicators, signals, wires, lamps, telegraphs posts and all the engineers tools and S.P.V. trolls, rest house, furniture, and removed engineering stores by breaking the locks and assaulted and handicapped the mate, engineering coolies and pump drivers and Khalasis. All the machinery work is totally damaged and station bulding is burning....

Station Master

जला दिये। स्टेशन की इमारत में भी तोड़ फोड़ करने के बाद आग लगा दी।*

लाइन उखाड़ी गई

सुरेमनपुर और रेवती के बीच दलछपरा के पास रेलवे लाइन की मरम्मत हो रही थी। मरम्मत करने वालों के पास औजार थे। इन्हीं औजारों को लूटने के लिये लगभग २०० आदमियों की भीड़ आई। मरम्मत करने वाले गैंग पर छापा पड़ा। सब के सब पकड़ लिये गये। उनके औजार छीन लिये गये और वहाँ की रेलवे लाइन उखाड़ी गई। यह भीड़ फिर रेवती की ओर बढ़ आई। श्रीठाकुर मिश्र और रामधारी सिंह आदि पर मुकदमा चला जिसमें श्री ठाकुर मिश्र की सजा हुई।

बाँसडीह में संगठन

बाँसडीह और उसके इर्द गिर्द कांग्रेस का संगठन अच्छा था। स्वयं सेवकों और कार्य कर्ताओं में बड़ी लगन थी। १३ अगस्त को बाँसडीह थाने का एक सिपाही घूमते फिरते कोडर गाँव में जा पहुँचा। उसने किसी आदमी से घूस के तौर पर कुछ रकम वसूल की। कोडर उपमंडल के सभापति श्री वृन्दा सिंह को इसका पता चला तो उन्होंने स्वयं सेवकों द्वारा सिपाही को पकड़ मगवाया और उसे २४ घंटे की सजा दी। उसे दिन भर बंद रखा गया। और २॥ आना (जितना सरकार हवालातियों को दिया करती है) खाने को दिया। रिहाई के वक्त उसे गाँव में घुमाया गया और फिर अच्छी तरह खिला कर वापस भेज दिया गया।

---

*......Report is received from Bakulaha wherein Station yard rails, points and slippers have been dismantled and stolen, and the building set on fire....

Police Diary P.S Bairia

१४ अगस्त को लड़कों का एक जुलूस मंडल कांग्रेस कमेटी के दफ्तर पर गया। वहां बाँसडीह थाने के नायब थानेदार मि० जाफर पहले से ही मौजूद थे। उन्होंने मंडल के दफ़्तर की तलाशी ली, बहुत सा उपयोगी सामान जब्त कर लिया और इमारत में सरकारी ताला बंद कर दिया। लड़कों ने मना किया कि ऐसा न कीजिये किन्तु उनकी एक न चली। मि० जाफर बिगड़ खड़े हुये। उन्होंने बहुत से आदमियों को मारा पीटा। फिर कुछ आदमियों को बिला वजह गिरफ्तार करके थाने में बंद कर दिया।

बाँसडीह थाने पर आक्रमण

१८ अगस्त को लगभग २ बजे दिन को आसपास के गावों से लगभग २० हजार आदमियों की भीड़ ने आकर थाने को घेर लिया। राष्ट्रीय नारों से आकाश गूंज उठा। पुलिस के लिये इस उत्तेजित भीड़ का सामना करना असंभव था, उसे यह भी पता चल गया कि हथियार उठाने का नतीजा अंत में अच्छा न होगा। पुलिस ने आत्म समर्पण किया। आध घंटे का मौका दिया गया कि पुलिस अपनी निजी चीजों और बाल बच्चों को लिये दिये थाना और क्वार्टरों को खाली कर दे। पुलिस कान्सटेबिल थानेदार और नायब थानेदार थाने के बाहर निकले और कांग्रेसी झंडे के नीचे स्वराज्य सरकार को मानने की शपथ ली। फिर थाने वालों ने जाकर जहाँ तहाँ कस्बे में अपने बाल बच्चों का बन्दोबस्त किया। थाने की सारी चीजें बलवाइयों ने एकत्र कीं—और उनमें आग लगा दी। कागजात जले, मेज कुर्सियाँ जलीं और फिर थाने की इमारत जली। इमारत की दीवारों को भी जहाँ तहाँ तोड़ डाला गया। थाने के अंदर लोहे की संदूक में स्थानीय डाकखाने के नकद और कीमती कागजात रखे हुये थे। बलवाइयों ने उन्हें

खोल डाला और जो नकद रुपया मिला उसे पुलिस में और गरीबों में वहीं बांट दिया।

थाना फूंक देने के बाद बलवाई तहसील की ओर बढ़े। अबकी बार जुलूस का नेतृत्व थानेदार हाथ में कांग्रेसी झंडा लिये हुये कर रहे थे। तहसील की इमारत पास ही थी लोग वहां चटपट पहुँच गये। इधर थाने की इमारत से धुंवा निकल रहा था, उधर तहसील के भीतर और बाहर जिधर देखिये उधर आदमी ही आदमी नजर आते थे। जोरों का शोर हो रहा था। तहसीलदार की परेशानी की कुछ सीमा न रही। एकाएक इनकलाब के नारे लगा कर कुछ लोगों ने तो खजाने पर पहरा देने वाले सिपाहियों को पकड़ लिया और बाकी लोग तहसील के दफ्तर और खजाने के अंदर घुस गये। सरकारी कर्मचारी चुपचाप बाहर निकल आये और तहसीलदार भाग चले। तहसील के सारे कागजात जो कई कमरों में भरे पड़े थे जला डाले गये। सैकड़ों वर्ष के रखे हुये तहसील के सरकारी कागज बात की बात में जल गये।

तहसील और खजाना

खजाने का सारा रुपया लगभग ३० हजार बलवाइयों के हाथ लगा। उसमें से तहसील, खजाना, थाना और चौकी के सारे कर्मचारियों को ६ महीने की तनख्वाह पेशगी दे दी गई और उन्होंने स्वीकार किया कि अब वे जनता की सरकार के नौकर हैं।*

---

*A typical instance of mass attacks on Government building led by Congressmen occurred at a Tansil in Ballia district in the east of United Provinces (which was one of the main storm centres in the opening

तहसील के कागजों के जलाने का विशेष महत्व था। १८ अगस्त तक बलिया जिले के अन्दर प्रत्येक व्यक्ति को यहाँ तक कि सरकारी कर्मचारियों को भी, यह पक्का विश्वास हो गया था कि ब्रिटिश सरकार का अन्त हो चुका है और स्वराज्य सरकार की स्थापना हो चुकी है। तहसील में रखे हुए चालू कागजों की एक नकल पटवारियों के पास रहती है। जहाँ तहाँ लोगों ने पटवारियों के कागज भी जला दिये। उन्हें भय था कि भावी सरकार में जब भूमि का नये सिरे से बँटवारा होगा तो इन कागजों से जमींदारों को अधिक हक मिलेगा। बहुतेरे पटवारी छिप गये और हफ्तों नजर नहीं आये।

बीजगोदाम और पोस्ट आफिस पर आक्रमण

संध्या समय भीड़ बीजगोदाम की ओर बढ़ी। जब सरकारी खजाना लुट गया तो बीजगोदाम किसी के बचाये कब बच सकता था? भीड़ बेतरह बीजगोदाम पर टूट पड़ी। लगभग आध घन्टे के अन्दर बीजगोदाम से १५०० बोरा गल्ला उठ गया। कहना न होगा कि बलवाइयों के जुलूस में अब तहसील के चपरासी और निम्न श्रेणी के पुलिस कर्मचारी भी

---

phase). At this Tahsil, there was a well constructed office with a strong record room and good quarters. A mob led by a local congressman who installed himself as a Swaraj Tahsildar for a short period, broke down the perimeter wall, destroyed every record in the office, broke into the treasury and looted Rs. 15000.

Congress Responsibility for the Disturbances 1942-43 p. 32, (Published with authority) Govt. of India Press, New Delhi (1943).

शामिल हो चुके थे। कोई रोकने वाला नहीं था, जिससे जितना बन पड़ा गल्ला अपने घर ले गया।

अब केवल पोस्ट आफिस रह गया था। उस पर भी धावा हुआ। नकद तो कुछ नहीं हाथ लगा। सारे कागजात और दीगर सामान जला कर भीड़ को संतोष करना पड़ा।

मुहम्द मुइन हेड कान्सटेबिल अपनी रिपोर्ट में लिखते हैं :—

बनाम १५, २० हजार अशखास जिनका मालूम हो सका पुश्त पर तहरीर हैं बाकी अशखास देख कर पहचाने ज सकते हैं। मसरूफा ३२०६५ रू०।

१८ अगस्त सन १९४२ ई० बवक्त ३ बजे दिन जब कि थाने पर बा० छविनाथ सिंह सब इन्सपेक्टर व मुंशी अहमद याकूब हेड कान्सटेबिल व शहजाद खां कान्सटेबिल व नजीर अहमद कान्सटेबिल चौकी बांसडीह व मुहम्मद मुइन हेड कान्सटेबिल मुहर्रिर व मुंशी मुहम्मद वली व मुहम्मद नजीर खां, हरनरायन सिंह व सूबेदार सिंह व हजारी सिंह व डिप्टी सिंह कान्सटेबिल थाना मौजूद थे, करीब १५,२० हजार के मजमा ने हर चहार तरफ से थाना व तहसील को घेर लिया और मुलाजिमान को पकड़ लिया। थाना व थाना वाला डाकखाना व तहसील को लूट लिया। थाना व तहसील फूंक कर कागजात जला दिया। इमारत तहसील को तोड़ डाला और तहसील का खजाना भी लूट लिया। इस मजमे में हस्बजैल अशखास शरीक जुर्म रहे हैं :—

गजाधर लोहार, राम सेवक तिवारी, सुधाकर पांडे, जमुना सिंह, बासुदेव सिंह, खखनू अहीर, जगन्नाथ सिंह, उदित राय, श्री कृष्ण सिंह, महंथ सिंह, राम बड़ाई सिंह, जमुना सिंह, रामपति अहीर, हरनन्दन सिंह, बिपिन बिहारी, शिव प्रसाद कोहार, जङ्गबहादुर सिंह, रामदेनी लोहार, हरी पांडे जदुनंदन कोइरी, मधुई,

लखन अहीर, सूबेदार सिंह, शिव प्रसाद सिंह, शिव भर, वृन्दा भर, निरंजन सिंह, रंजीत सिंह, नन्द कुमार सिंह, रामेश्वर शर्मा, बनवारी सिंह, मूस अहीर, शिव वचन देवधारी, शिवराज सिंह, शिव जी, कपी सिंह, विश्वनाथ सोनार रामचन्द्र मुख्तार, शिव कुमार लाल, रामप्रीत कोइरी, लक्ष्मण सिंह, काशीनाथ राय, जटाधारी पाठक, शिव पूजन कुंवर, रामलाल कोहार, नगेसर सिंह कुलदीप सिंह, सरजू सिंह, सच्चिदानन्द, सिराजुद्दीन, रामविलास, शिवनाथ राम, गोपाल तिवारी, शंकर दयाल, विहारी राम, जगदीश राम, शिवकुमार पांडे, जमुना सिंह, जमुना सिंह, पृथ्वी सिंह, श्री रंगसिंह, मुनेसर सिंह, वासुदेव सिंह सलिक सिंह, राम अधार कोइरी, धूरा सोनार, सीताराम, दुर्गाराम, राम बहादुर राय, नोका भर, वृन्दा सिंह, नगीना ब्राह्मण, शिवबहादुर सिंह, साधोराम, मुन्नीलाल, शिवदत्त कोइरी, डिगरी, उपाध्याय, रामजनम सिंह, रामजतन अहीर, शिवकुमार लाल, केदार अहीर, रामप्रसाद अहीर, कपिल राम, मनबोध सिंह।

सरकारी कर्मचारियों और पुलिस के चले जाने के बाद अव्यवस्था फैल सकती है, इसका अनुमान कांग्रेस

कांग्रेस का स्थानीय शासन

वादियों को था अतएव अस्थायी तौर पर शासन के लिये स्थानीय कांग्रेसजनों की एक कमेटी बनाई गई जिसमें सर्व श्री मथुरा प्रसाद निरंजन सिंह रामेश्वर शर्मा आदि थे। बाजार में रुपये का ५ सेर गेहूँ बिकवाया गया। और स्वयं सेवकों ने पहरा दिलवाया गया।

चटपट पंचायतें भी स्थापित हुई। कोडर गाँव में भी एक पटान का मुकदमा बहुत दिनों तक चलने के बाद कचहरी में तय न हो पाया था। वह पंचायत के सामने रक्खा गया। पंचायत ने जो फैसला दिया वह आज भी दोनों दलों को मान्य है।

१९ अगस्त १९४२ को लगभग ५०० आदमियों ने एकाएक वाँसडीह थाने पर धावा बोल दिया। भीड़ का देखना था कि स्टेशन के कर्मचारी भाग खड़े हुये। उन्होंने अपना निजी सामान स्टेशन तथा कार्टरों से हटवा कर आस-पास के गावों में रखवा दिया था। स्टेशन की इमारत में ताला वन्द था। आक्रमण कारियों ने ताले की तोड़-फोड़ शुरू कर दी। ताला तोड़ कर स्टेशन के कमरे में दाखिल हुये। सेफ तोड़ा गया मगर उसमें कुछ पैसों और कुछ कागजात के अतिरिक्त कुछ न था। सारे कागजात, मेज, कुर्सियाँ, संदूक वगैरह को एकत्र करके उन पर मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगा दी। वात की वात में आग की लपटों से सारा स्टेशन जलने लगा। समूचा खपरैल का ढाँचा गिर पड़ा।

वाँसडीह रोड रेलवे स्टेशन

वाँसडीह के स्टेशन मास्टर अब्दुल हसन ने ४ फरवरी सन् १९४४ ई० को मि० ओ० पी० गुप्ता की अदालत में अपना वयान देते हुये कहा:—

१९-२० अगस्त की रात में पाँच सौ आदमियों का मजमा वाँसडीह रोड स्टेशन पर आया। आकर शोर किया तो मैं स्टेशन पर अपने कार्टर से आया। मगर अन्दर स्टेशन जाने से मजमा ने रोक दिया। मजमा ने स्टेशन को फूंक दिया। मुलिजमान हाजिर अदालत को शरीक जुर्म देखा था और मैंने विश्वनाथ सिंह, राम ध्यान सिंह, सूरज पाठक, नगीना चौवे और गजाधर लोहार को नाम से पहचाना था। मैं उस वक्त वहाँ स्टेशन मास्टर था।

बैरिया कांड

गोलियों की बौछार के सामने सीना तान कर चलने वाले वैरिया के आस-पास वसते हैं। वैरिया का थाना क्या है, अमर शहीदों की समाधि भूमि है। जिस चूने गारे से उसकी इमारत वनी है उसमें शहीदों

का खून पर्याप्त मात्रा में मिला हुआ है।

११ अगस्त को स्थानीय नेता सर्व श्री काली प्रसाद, राम दयाल सिंह और मदन सिंह दफा ३४-३८ (भारत रक्षा कानून) के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिये गये। गिरफ्तारी के बाद रानीगंज बाजार में भारी जुलूस निकला और बाद में सभा हुई। फिर लाल गञ्ज बाजार में १२ अगस्त को और डोकटी में १३ अगस्त को सभायें हुई। मि० एमरी के मुँह से जो ब्राडकास्ट निकला था उसी के आधार पर इन सभाओं में कार्यक्रम बनाया गया। डोकटी की सभा में किसी ने एक पर्चा दिखाया जिस पर कांग्रेस के कुछ प्रमुख नेताओं के दस्तखत थे। उसमें भी यही आदेश था कि अहिंसा-त्मक उपायों से सरकारी इमारतों पर कब्जा कर लिया जाय, पुलिस का हथियार छीन लिया जाय, तार काट दिये जाँय और यातायात के सारे साधन विनष्ट कर दिये जाँय। बस क्या था, उपर्युक्त आदेशों के अनुरूप कार्यक्रम बनाया गया और निश्चय हुआ कि १२ अगस्त को बैरिया थाने पर कब्जा किया जाय। फिर पास का रेलवे स्टेशन जालाया जाय, लाइन उखाड़ी जाय, गाँजे शराब की दुकानें लूटी जाँय, और स्टीमर का स्टेशन फूंका जाय, इत्यादि इत्यादि।

लगभग ४ महीने पहले से ही बैरिया मंडल में कांग्रेसी स्वयं-सेविकों को शिक्षा की व्यवस्था चल रही थी। विविध क्षेत्रों के लिये नायक नियुक्त किये गये थे। १४ अगस्त को ही बजरंग आश्रम बहुआरा में लगभग ३०० सैनिकों ने शपथ खाई कि कल बैरिया थाने पर अधिकार किये बगैर वापस न लौटेंगे।

१५ अगस्त को लगभग १२ बजे दिन में करीब १५ हजार आदमियों का जत्था बैरिया थाने पर आया।

थानेदार का समर्पण

सर्व श्री डा० अयोध्या सिंह और राम अवतार दो-एक अन्य आदमियों के साथ थाने के फाटक

पर गये। थानेदार को बुलाया और कहा कि आप स्वराज्य सरकार मान जाइये, ब्रिटिश सरकार का राज्य उठ चुका है।'

थानेदार ने बड़े तपाक से कहा 'हम तो तैयार बैठे हैं हम कांग्रेस के तावेदार हैं।'

एक तिरंगा झंडा लाया गया। थानेदार ने उसे खुद फहराया। फिर वह थाने के हाते में गाड़ दिया गया। जनता विजय के नारे लगाती हुई वहाँ से वापस लौटी।

लगभग १००० आदमियों ने रानीगंज गाँजे की दुकान पर आक्रमण किया। जिस कदर गाँजा, भाँग और दूसरी नशीली चीजें वहाँ मिलीं सब जला डाली गईं। इसके बाद बैरिया का गाँजे की दुकान पर आक्रमण हुआ। वहाँ भी सारी नशीली चीजें एकत्र करके जला डाली गईं।

थाने पर तैयारी

तरह-तरह की अफवाह सुनकर बैरिया के थानेदार ने १४ अगस्त को ही बलिया के अधिकारियों को पत्र भेजा जिसमें स्थिति का परिचय देते हुये उसने सशस्त्र पुलिस की माँग की थी। १५ अगस्त को लगभग ३ बजे (जब जन समूह थाने से वापस जा चुका था) ५ सशस्त्र कान्स्टेबिल थाने की रक्षा के लिये आये। उन्हें देख कर थानेदार की जान में जान आई। तुरन्त ही उसने कांग्रेसी झंडे को उखाड़ कर फेंक दिया। गाँवों के चौकीदारों और मुखियों को ताकीद कर दी कि वे बलवाइयों की गतिविधि का समाचार बराबर देते रहें। हरचरन चौबे नामी खुफिया पुलिस सादी पोशाक में गांव-गांव जाता था और सारी खबरें थानेदार को सुनाता था। जनता ने सुन लिया था कि थाने पर अधिक पुलिस और हथियार आ गये हैं और थानेदार अपनी बात का कच्चा निकला तथा उसने

झंडे को उखाड़ कर फेंक दिया है। जनता ने तैयारी की कि १७ अगस्त को थाने पर आक्रमण किया जाय। उस समय थाने में १० सशस्त्र सिपाही थानेदार के साथ बंदूकों से लैस थे। २४० राइफिल की गोलियां ३० राउन्ड भरका और १२. १३ अदद रिवाल्वर की गोलियाँ भी थीं।

इधर खुली छाती उधर बंदूक

१७ अगस्त को लगभग १ बजे दिन में २५००० आदमियों की भीड़ थाने पर आ डटी। भीड़ से दो-तीन आदमियों ने आगे आकर थानेदार को बातचीत करने के लिये बुलाया। वे अपने सिपाहियों के साथ ऊपर छत पर चले गये और इन्होंने नीचे आने से इनकार किया।

फाटक पर से लोगों ने कहा 'आप हमारे भाई हैं, हमारे साथ आइये और थाने पर हमारा कब्जा स्वीकार कीजिये'।

थानेदार ने कहा 'मैं आपका राज मानता हूँ किन्तु नीचे नहीं आ सकता। मैं लोगों से डरता हूँ। आप लोग झंडा फहरा कर चले जाइये, थाना आपका है। मैं अपने बाल बच्चों को लेकर आज अपने घर चले जाता हूं।'

जनता चकमे में नहीं पड़ने वाली थी। झंडा लगा कर चले जाने से कब्जा नहीं हो जाता, इससे राष्ट्रीय झंडे की बेइज्जती होती है—यह बात अब तक साफ हो चुकी थी।

जनता बढ़ती गई। सैकड़ों आदमी फाटक के अन्दर कूद कर भीतर पहुँच गये। इधर ३-४ आदमियों ने थानेदार का घोड़ा खोल लिया और घुड़साल को तोड़-फोड़ डाला। बगल में एक और छप्पर थी जिसमें थाने के कर्मचारी उठने-बैठने थे, उसे गिरा दिया।

थानेदार ने गोली चलाने का हुक्म दिया। लगातार गोलियां

चलने लगीं। लोग जिद पर थे। आगे बढ़ते जाते थे और गिरते जाते थे। सब के दिल में यही लालसा थी कि कांग्रेसी झंडा किसी तरह से थाने की इमारत पर फहराया जाय और थाने वालों को मजबूर कर दिया जाय कि वे भी उसकी प्रतिष्ठा करें।

गोलियाँ तड़ातड़ चलती थीं। जिससे लाशों की ढेर हो गई। लोग गिरते पड़ते थाने तक पहुँच ही तो गये। कौशिला कुमार नामी २० वर्षीय नवयुवक एक तिरंगा झंडा हाथ में लिये पीछे की ओर से थाने पर चढ़ गया और झंडा फहराने लगा। जगदम्बा प्रसाद कांन्स्टेविल ने उसका झंडा छीन लिया। श्री कोशिला कुमार ने उसे पटक कर उसकी बंदूक छीन ली। इतने में एक दूसरे सिपाही ने उसे गोली मार दी और वह वीर नवयुवक झंडा लिये दिये जमीन पर आ गिरा। वह झंडा अब भी सुरक्षित है; उसमें उस चिर स्मरणीय अमर शहीद श्री कोशिला कुमार के पवित्र रक्त के धब्बे लगे हैं।

अहिंसा की भावना हिंसा में बदल गई। ७ बज चुके थे। निश्चय हुआ कि आज रात को थाने पर पहरा दिया जाय ताकि कोई कर्मचारी भाग न जाय। रातोंरात गाँवों में खबर भेजी जाय ताकि लोग हथियार लेकर आवें और हिंसकों का जवाब हिंसा से दें।

हजारों आदमी थाना को तीन तरफ से घेर कर पड़ रहे। पीछे की ओर ४, ५ फीट पानी मीलों तक लगा था; जोरों की वर्षा हो रही थी। लोगों को विश्वास नहीं था कि थाने वाले इतने पानी को पार करके भागेंगे। किन्तु वे अपने बाल बच्चों के साथ पीछे की ओर से निकल कर पानी हेलते हुये चोर की नाईं रातों रात भाग निकले।

दूसरे दिन सवेरे उत्तेजित भीड़ हथियार लिये दिये थाने पर
पर आई। देखा तो किसी कर्मचारी का पता
थाना चूर चूर कर नहीं है। सारा सामान एकत्र किया गया उसमें
दिया गया आग लगा दी गई। थाने की इमारत जला दी
गई। लाठियों से दीवारों को इस कदर पीटा
गया कोई ईंट साबित न बची। कर्मचारियों के क्वार्टरों को भी
फूंक दिया। सब इन्स्पेटर ने अपनी रिपोर्ट में लिखा:—

११-८-४२ को रामदयाल सिंह सा० बहुअरा, काली प्रसाद केसरवानी सा० रानीगञ्ज बाजार, मदनसिंह साकिन सिरसा कांग्रेसी को हस्ब दफा ३४-३८ डा० आई० आर० हरिचरन चौबे, अली मुहम्मद, सूरज नारायण सिंह कान्स्टेबिलान गिरफ्तार करके थाने पर लाये।

२४ अगस्त १९४२ को जानकी दुसाध, लछमन दुसाध चौकीदार बहुआरा ने आकर मुझ सब इन्सपेक्टर से कहा कि गौरी शङ्कर राय सा० बहुअरा ने कहा है कि जाकर दरोगा जी से इत्तला कर दो कि १५ अगस्त को थाना लूटने की तैयारी हो रही है। मुझ सब इन्सपेक्टर से एक रिपोर्ट तलब की गई जो जरिया महमूद खां कान्सटेबिल के पास साहब सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस बहादुर के बलिया भेजी। रिपोर्ट पर १५-८-४२ को करीब ३ बजे दिन को एक गारद मुसल्लह पहुँचा। गारद के इन्चार्ज मुहम्मद हुसेन नायक और जगदंबा प्रसाद व मुस्तफा खाँ मल्लू, अहीर, रामसरन राय व शिवनारायण तिवारी थे। ५-६ हजार का मजमा करीब १ बजे दिन के बाद गांधी जी की जै, गवर्नमेंट का नाश हो, अंगरेज हमारा दुश्मन है, पुलिस हमारे भाई हैं आवाजें लगाते हुये थाना के सामने से सड़क पर पहुँचा। मैं सब इन्स-पेक्टर जुमला मुलाजिमान आर्म्स पुलिस व सिविल पुलिस

थाना के छत पर था। राम अवतार (बहुआरे) अयोध्या सिंह (करन छपरा) थाना के फाटक पर आये। फाटक पर ताला लगा दिया गया था। इन दोनों ने मुंश सब इन्सपेक्टर से आकर कहा कि आप सबसे २ मिनट बातचीत करना है। छत से नीचे चले आइये। मैं छत से उतरा। अन्दर झंडा गाड़ने को कहा। इस पर मैंने इनकार किया। थाना के फाटक के सामने बाहर एक झंडा गाड़ के चले गये। और कहा कि यह झंडा गड़ा रहेगा। थाना हम लोगों का है। उसके बाद मजमा रानीगंज बाजार की तरफ चला गया और फिर मुंश सब इन्सपेक्टर ने झंडा उखाड़ दिया। और कुछ लोग रानीगंज बाजार की तरफ गये। उसके थोड़ी देर बाद मालूम हुआ कि शराब व गाजा की दुकान जो रानीगंज बाजार में थी एक हजार कांग्रेसी बदमाशों ने लूट लिया। जमुना राय की दुकान जो गांजे की दुकान के बगल में थी वह भी लूटा। उसके बाद मौजा बैरिया में शिव बालक कुंवर की गांजे की दुकान पर २, ३ सौ आदमी पहुँचे और उसका गांजा लूटा और छीट दिया। उसके बाद १६ अगस्त को हरचरन चौबे कान्सटेबिल डी० आई० एस० से मालूम हुआ कि मजमा खौफ की वजह से १५ अगस्त १९४२ को हमला न कर सका। किसी रोज धोखा देकर थाना पर आकर हमला करेगा। करीब १ बजे दिन के १५. २० हजार आदमियों का मजमा कस्बा बैरिया की तरफ से गांधी जी की जै वगैरह का नारा लगाते हुये थाना पर पहुँचा। जंग बहादुर सिंह और शिव दर्शन (बहुअरा) मजमा के लीडर थे। उन लोगों ने कहा कि हम लोग आज थाना में झंडा गाड़ेंगे। आप थाना खाली कर दीजिये और थाने के पिस्तौल और बन्दूक हमें दे दीजिये वरना आज जबरदस्त लड़ाई होगी और यह भी कहा कि अब से रेलवे की पटरी उखाड़ दी जायेगी।

इस दर्मियान में तकरीबन ४, ५ सौ का मजमा फाटक चहार दीवारी फाँद कर अन्दर थाना के घुस आये और १०० आदमी क करीब थाना के अंदर घुस आये और १०० से जायदे पार्क में घुस गये और सख्त तकरार करने लगे और ईंट व कंकड़ से मजरूर करने लगे और धरांछन अहीर व सिरी अहीर गोपालपुर और मुखी राम वहुअरा मुफ सब इन्सपेक्टर का घोड़ा अस्तबल से खोलकर मय अगाड़ी पिछाड़ी के चल दिये और कुछ लोग थाना के आफिस का दर्वाजा तोड़ने लगे। हम ने जब देखा कि हम लोगों की जान व माल सरकारी इमारत का नुकसान व सरकारी इमारत का खतरा ज्यादा हो रहा है तो मजमा को आगाह किया गया कि अपनी हरकतों से बाज आओ। वरना गोली ३ मिनट के बाद चलाने का हुक्म । मजमा ने कुछ नहीं सुना बल्कि चौरीचौरा जिन्दाबाद का नारा लगाने लगे। तब मुफ सब इन्सपेक्टर ने फायर गोली चलाने का हुक्म दिया। गोली चलना शुरू हुई। कुल हम लोगों के पास २४० गोली राइफल और ३० राउन्ड भरका और १२, १२ अदद रिवाल्वर की गोलियाँ था। करीब डेढ़ बजे दिन से ६॥ बजे शाम तक हम लोग बराबर गोलियां बारी बारी चलाते रहे। मजमा २-२, ४-४ करके थाने के सामने आता था और ईंटा को लेकर हर चहार तरफ से बरसा रहा था। जङ्ग बहार सिंह कांग्रेसी मजमा मे कहने लगा कि पुलिस के ऊपर एक बारगी टूट पड़ो और पकड़ लो। उससे ज्यादा नहीं मरेंगे। तब इन्तयाज मुहम्मद कान्सटेबिल सूरज नारायन कान्सटेबिल ने दो राउन्ड फायर किया जो करकट छेद कर दो आदमियों को खतम कर दिया। उसके बाद सब लोगों ने टिन फेंक दिया और कहा कि टिन बेकार है। अब दरख्तों की आड़ में छिप छिप कर ईंट और पत्थर बरसाने लगे।

इसी दर्मियान एक कांग्रेसी अफसर दोयम साहब के क्वार्टर की तरफ से छत पर चढ़ आये और जगदंबा प्रसाद आरम पुलिस को पटक बंदूक छीन लिया और फौरन ही जगदंबा प्रसाद कान्सटेबिल ने उस कांग्रेसी को पटक दिया और उसके ऊपर सवार हो गया। इतने में महमूद खाँ कान्सटेबिल ने कांग्रेसी के हाथ से बंदूक छीन कर गोली मारी। कांग्रेसी फौरन छत से नीचे गिर पड़ा। मजमा बढ़ रहा था। मजमा में एक के पास बंदूक थी। निशाना लगा रहा था। मगर कोई आवाज फायर की नहीं आई। मुफ सब इन्सपेक्टर और कान्सटेबिल ने यह कहते हुये सुना कि सवेरे मुकाबला किया जायेगा। उसके बाद करीब ३. ४ सौ आदमी थाने के उत्तर व दक्खिन जानिब सड़क पर दोनों साधुओं की कुटी का रास्ता घेर कर पुलिस की निगरानी करने लगे ताकि भागने न पावें। पश्चिम तरफ फसल लगी हुई थी। तकरीबन २ मील के फासले पर सैलाब का पानी ६. ७ फीट की ऊंचाई पर जमा था। खिड़की की ऊंचाई पर भरा था। बलवाइयों ने यह सोचकर कि इस राह से पुलिस वाले न भाग सकेंगे इसलिये उस तरफ नहीं घेरा और खाली छोड़ दिया। उस वक्त करीब ७ बजे थे। जब बलवाई थाना को छोड़कर चले गये तो हम लोगों को जरा इतमीनान हुआ और मुफ सब इन्सपेक्टर ने जुमला मुलाजिमान को इकट्ठा करके कारतूसों को शुमार किया। सिर्फ १५ कारतूस राइफल और ६ राउन्ड रिवाल्वर बच गये थे। अंदाजन ३०, ४० आदमी मारे गये और १०० करीब घायल हुये होंगे। हम लोगों ने यह तै किया कि अपने बच्चों और असलहा को लेकर सरहदी थाना पर ले चला जावे। बादल घिरा हुआ था और बूंदें भी पड़ रही थीं। दिन भर की जांफिशानी से हम लोग तंग आ गये थे।

रात ११ बजे के करीब हम लोग जुमला सामान को छोड़ कर

मय बाल बच्चों के मय असलहा के थाना के पश्चिम तरफ से रवाना हुये। रास्ते में खेती व सैलाब के पानी में हेलते हुये खुद व बाल बच्चों के १४ मील सफर करने के बाद ६ बजे सहतवार थाना के पास पहुँचे। वहां की हालत भी खराब पाया। सब इन्सपेक्टर साहब बैलगाड़ियों पर अपना सामान लदवा रहे थे। कस्बा सहतवार की तरफ से कांग्रेसियों का बड़ा भारी मजमा थाने की जानिब बढ़ता हुआ व जै बोलता हुआ नजर आया ताहम हम लोग अपनी बीबी और बच्चों को सब इन्सपेक्टर साहब सहतवार के सुपुर्द करके और अपना असलहा अलावा रिवाल्वर के सहतवार थाना के कुआं में यह खयाल करते हुये कि कांग्रेसियों के हाथ न पड़ जावे डाल कर और खतरा महसूस कर के वहां से मुन्तशिर होकर चल दिये। मुझ सब इन्सपेक्टर मय कान्सटेबिल. कुतुबद्दीन, अली हसन. इम्तयाज अहमद. सूरज नरायन सिंह. शकुल्लाह, महमूद खां मौजा हुसेननाबाद थाना बांसडीह जो सहतवार से ४ मील के फासले पर अस्करी के मकान पर पहुँचे। वहां मालूम हुआ कि लोगों ने १७ अगस्त १९४२ को थाना व तहसील लूट लिया गया और पुलिस वालों की तलाश में घूम रहे हैं और बन्दूकें भी उनके हाथ में हैं। अब तक हम लोगों ने कुछ नहीं खाया था। उस गांव में दो रुपया का सत्तू लेकर थोड़ा थोड़ा खाया और फिर हम आगे बढ़े। पता चला कि जेल से तमाम कैदी व कांग्रेसी छोड़ दिये गये हैं और फिर यह कि पुलिस जिसने गोली चलाई है उसकी तलाश में लोग घूम रहे हैं। लोग यह भी कह रहे थे कि बैरिया की पुलिस ने नौ सवा नौ आदमियों को गोली का निशाना बना दिया। इस लिये अगर दरोगा जी मिल जावें तो उनकी बोटी बोटी काट दी जावेगी। हम लोग वहां देहातियों के लिबास में थे। इस असना में कोई पहचान

नहीं सका। सुबह को हम लोग एक कश्ती पर सवार होकर बरहज की तरफ रवाना हुये।

दो रोज सफर के बाद तुर्तीपार के आगे जिला आजमगढ़ पहुँचे और पैदल २० मील का सफर करके २३ अगस्त १९४२ को थक कर चूर चूर होगये थे। पैरों में छाले पड़ गये थे। सबके जिस्म में दर्द हो रहा था। भूक से हालत तबाह थी। न पैरों में जूते थे न बदन पर सिवाय धोती व कमीज के कोई कपड़ा था।

३० अगस्त ४२ को हम लोग आजमगढ़ होते हुए २ सितंबर ४२ को बलिया पहुँचे। हम लोगों का जुमला सामान बलवाई लूट ले गये थे। कागजात सरकारी, रसूमात सरकारी. माल कुर्क शुदा मौजा बलवाइयों ने लूट लिया और कागजात सरकारी फूंक दिया और थाना को पस्ट कर दिया और बगीचा व फुलवारी को काट कर फेंक दिया। कुआं में ईंट भर दिये।

मुल्जिमान में शिवदास राय सीताराम तेली, हर दत्त, मनोहर लाल, शिवपूजन कुंवर, देवनरारायन हरवंस नरायन सिंह बड़ाई, अजोध्या प्रसाद सिंह, मथुरा सोनार, कुंज विहारी मिश्र, खूबचंद तेली, रामचन्द्र ठाकुर, राम ऋषि, जमुना, भिक्खी, राम बरन, हरदेव राय, राधाकृष्ण सिंह, राम जतन राय वैरिया चालान अदालत गिरफ्तार हो चुके हैं। उनमें से ९ नफर मुल्जिमान गोली व छर्रे से मजरूब थे।

थाने पर जो मुकाबला हुआ उसमें लगभग ५० आदमी वीर गति को प्राप्त हुये और लगभग १०० घायल हुये

हताहतों की संख्या मृतकों को लोग उठा लेगये और धूमधाम से उनकी अंतिम क्रिया की। घायलों को सोनबरसा अस्पताल में लाया गया। फिर वहां से १८ अगस्त को नाव द्वारा वे बलिया लाये गये। इनमें श्री कोशिला कुमार भी था। उदई

घाट के सामने उसे होश और पूछा—थाने का क्या हुआ ?

किसी ने कहा कांग्रेस का कब्जा हो गया। उस पर राष्ट्रीय झंडा लहरा रहा है।

वीर युवक का चेहरा खिल उठा; फिर उसने अपनी आंखे सदा के लिये बंद कर लीं।

गोपालपुर के नवयुवकों ने उसका वीरोचित दाह संस्कार किया।

पचासों नवयुवकों की आहुति देने पर जो अधिकार प्राप्त हुआ उसे कांग्रेस ने अच्छी तरह सँभाला। सर्व वैरिया का बीज श्री बाबा लक्ष्मण दास, जगदीश नारायण तिवारी गोदाम और काली प्रसाद की एक कमेटी बनाई गई जिसके जिम्मे शान्ति और व्यवस्था का भार था। स्वयं सेवकों का संगठन पहले ही से था। उनके ऊपर गांव गांव पहरा देने का भार भी सौंप दिया गया। वैरिया बीज-गोदाम पर कांग्रेस का अधिकार हो चुका था। सारा गल्ला आस पास के गाँवों में बाँट दिया गया।

सोन बरसा के डा० बैजनाथ प्रसाद आन्दोलन से डरकर भाग रहे थे। उनका सामान कुछ लोगों ने छीन लिया। कांग्रेस वादी स्वयं सेवकों को जब पता चला तो उन्होंने बदमाशों को पकड़ा और सारा सामान दिलवा दिया।

अध्याय २

क्रान्ति का उग्र रूप

बंदूकें छीनी गईं

१८ अगस्त १९४२ तक क्रान्तिकारियों ने पूर्ण रूप से अहिंसात्मक आन्दोलन चलाया। उन्हें पर्याप्त सफलता भी मिली। पुलिस यद्यपि जहां तहां सख्ती से पेश आई किन्तु क्रान्तिकारियों ने बड़े संयम से काम लिया। सामूहिक रूप से उन्होंने पुलिस पर अथवा अन्य किसी सरकारी कर्मचारी पर हाथ नहीं उठाया। १६ अगस्त को बलिया में बाजार के अन्दर निरपराध जन समूह पर पुलिस ने जब गोली चलाई (विवरण आगे दिया जायेगा) तो लोगों का धीरज जाता रहा। रसड़ा में जनता को पहले तो धोखा दिया गया और फिर गोलियां चलाई गईं, इससे जनता उत्तेजित हो उठी। बैरिया में निहत्थी जनता पर गोलियों की जो बौछार हुई, उससे तो नवयुवकों का खून उबल पड़ा और उनमें पुलिस से बदला लेने की भावना जाग उठी। यह अच्छी तरह प्रमाणित हो चुका था कि लाठी, बल्लम और कुदाल, फावड़े पुलिस की बंदूक का मुकाबला नहीं कर सकते। बंदूक का मुकाबला बंदूक से ही हो सकता है। जिन लोगों के पास बंदूकें थीं, वे बहुधा सरकार के भक्त थे। जिले में दो चार ही आदमी

ऐसे थे जिन्होंने अपनी बंदूकें क्रान्तिकारियों को दी थीं। अधिक बंदूक प्राप्त करने के तीन ही साधन रह गये थे—(१) पुलिस से छीनी जांय. (२) पब्लिक से छीनी जांय. (३) सरकारी अफसरों से छीनी जांय। क्रान्तिकारियों ने तीनों मार्गों का अनुसरण किया। दो. चार बंदूकें तो देहात के कई थानों पर आक्रमण करने के समय मिल चुकी थीं किन्तु वे पर्याप्त न थीं। आवश्यकता थी अधिक बंदूकों की। क्रान्तिकारियों ने धीरे धीरे अपनी आवश्यकता की पूर्ती कर ही ली।

फेफना में

पुलिस के ८ बंदूकधारी सिपाही १३ या १४ अगस्त को जेल से कुछ कैदियों को लेकर गाजीपुर गये थे। उधर से वापस आते समय गाड़ियां बंद थीं। अतएव उन्हें पैदल चलना पड़ा। १८ अगस्त को जब वे चीट बड़ा गाँव में पहुँचे तो श्री शिवपूजन पांडे के नेतृत्व में बागियों ने उनका पीछा किया। सिपाहियों ने अपनी बंदूकें भर लीं और आक्रमण कारियों को रोका। पुलिस आगे बढ़ती जाती थी और बलवाई उनके पीछे पीछे थे। बलवाइयों का दल बढ़ता गया। जब सरजू के पुल के पास आये तो वे सिपाहियों पर टूट पड़े। खूब हाथा पाई हुई। सड़क के नीचे खंदक में पानी था। सिपाहियों ने फायर किया. लोग डर कर भागे और कई तो खंदक में कूद पड़े। सिपाही सशंक थे किन्तु आगे बढ़ते जाते थे. फेफना के पास उन्हें आगे एक भीड़ का सामना करना पड़ा। यह भीड़ पहले से ही रेल की पटरी उखाड़ रही थी। उधर पीछे से चीट बड़ा गांव वाली भीड़ के सैकड़ों आदमी पहुंच गये। सिपाही दोनों ओर से घिर गये। उनकी [illegible] न थी। इस बार वे बंदूकें नहीं चला सके। उनकी ८ बंदूकें, ८० कारतूस और पेटी छीन ली गई। दोनों दलों में जो झड़प हुई उसके परिणाम स्वरूप [illegible]

पक्ष के कुछ लोगों को चोट आई। सिपाहियों का इलाज तो पुलिस अस्पताल में हुआ, किन्तु क्रान्तिकारियों को इलाज की जरूरत न थी।

सिपाही जब बलिया पहुँचे तो अधिकारियों को बड़ा तैश आया। श्री मथुरा सिंह लाइन इन्सपेक्टर दो लारी सशस्त्र पुलिस लेकर बागियों का सामना करने चले। फेफना गाँव में उन्होंने अंधाधुँध गोली चलाई जिससे श्री सागर राम की तत्काल मृत्यु हुई। सिंहपुर के श्री वासुदेव सिंह को खूब पीटा गया और नरही के श्री रामजतन तेली की मूछें उखाड़ी गईं। इसके बाद उन्होंने बन्धैता गांव पर छापा मारा। उन्होंने सुन रखा था कि बा० शिवनारायण सिंह अपने दल बल के साथ फेफना में लाइन उखाड़ रहे थे और उन्होंने ही सिपाहियों की बंदूकें छीनी हैं। उनके घर की तलाशी ली गई किन्तु न कोई बंदूक मिली और न कारतूस। उनके मकान के पास ही राम भरोसा सिंह और नौरंग सिंह आदि ८ आदमी गिरफ्तार किये गये। बा० शिव नारायण सिंह उस समय घर पर उपस्थित न थे।

बंदूक लूटने और पुलिस को चोट पहुँचाने के संबंध में सर्व श्री शिवनारायण सिंह, शिवमुनी सिंह, मानधाता सिंह, और जगदीश सिंह, आदि पर मुकदमे चले किन्तु सबके सब रिहा कर दिये गये।

तुर्तीपार (थाना उभांव) के पुलपर सिपाहियों का पहरा था।

भरखरा में

१९ अगस्त १९४२ को यहां से एक हेड कान्सटेबिल और ४ कान्सटेबिल बलिया के लिये रवाना हुये। रेल का आना जाना बंद था अतएव वे सिकंदरपुर-बलिया वाली सड़क से पैदल चले। २० अगस्त को लगभग ८ बजे सवेरे ये लोग भरखरा (बलिया से १० मील

उत्तर) पहुंचे। वर्षा होने लगी अतएव उन लोगों ने जाकर भरखरा गांव में एक आदमी के मकान पर शरण ली। बंदूक के साथ ५ सिपाहियों का आना उन दिनों अस्वाभाविक था। लोगों ने उन्हें देखकर बन्दूक छीनने की तैयारी करदी। अभी पुलिस वाले आराम कर ही रहे थे कि लगभग ढाई तीन सौ आदमियों की भीड़ उन पर टूट पड़ी। पहले तो पुलिस वालों ने घुड़की सुनाई और बंदूकें भर लीं किन्तु कुछ समझ कर उन्होंने फायर नहीं किया। सारी बंदूकें जनता ने ले लीं।* पुलिस वालों से कहा गया कि वर्दी भी निकाल दो। उन्होंने वर्दी भी निकाली फिर एक जुलूस निकला जिसमें आगे आगे पुलिस वाले ही रहे। जुलूस के साथ उन्होंने उत्साह पूर्वक नारे लगाये। एक मील तक आने के बाद पुलिस वालों को छोड़ दिया गया। वे सीधे बलिया आये, तब कहीं जान में जान आई।

इस मुकदमे के संबंध में कई आदमी गिरफ्तार किये गये। बाद को सर्व श्री बैजनाथ पांडे, बैजनाथ कांदू, मुसाफिर अहीर और नागेश्वर सिंह पर मुकदमा चला। प्रथम तीन अभियुक्तों के विरुद्ध सेशन जज की अदालत में बयान देते हुये केदार सिंह कान्सटेबिल नं० १०८० मिलिटरी पुलिस गारद

---

*आज से १८. १९ दिन पहले पुलीस गारद थाना उभांव से बंदूक लेकर जात रहल। जब गांव सुल्तानपुर गारद पहुँचल ३. ४ सौ आदमी चारों ओर घेर कर पुलिस गारद के बंदूक ५ ठो छीन लेलन ह।

ए घड़ी थाना नहीं रहल। [illegible] नहीं [illegible]। [illegible] सुन लीं ठीक रहल हा।

थाना [illegible] रिपोर्ट [illegible]
[illegible] मौजा सुल्तानपुर, तारीख ९ सितम्बर १९४२:—

सातापुर ने ११ जुलाई १९४४ को सेशन जज की अदालत में बयान देते हुये कहा कि—अगस्त १९४२ में आर्म गारद उभाँव से बलिया पुलिस लाइन गया था। मैं उनमें से एक था। जब यह भरखरा गांव के पास आया तो बारिश होने लगी। तब हम लोगों ने भरखरा में एक ब्राह्मण के मकान पर शरण ली। ७ बजे सवेरे का वक्त था। करीब २५० आदमियों का एक मजमा आ पहुँचा। उसने हमारी बंदूकें छीन लीं।

छात: में

१८ अगस्त को जब वैरिया थाने में निहत्थी जनता पर गोली चली तभी से लोगों की प्रवृत्ति कुछ हिंसा की ओर जा चुकी थी। पुलिस वाले अगर सीधे से कहना मान जांय तो ठीक है किन्तु वे जब बार-बार धोखा दें और गोलियां चलावें तो इसका जवाब क्या है? अब तक फफना में ८ बंदूकें १६ अगस्त को लूटी जा चुकी थीं. भरखरा में ५ बंदूकें २० अगस्त को हाथ लगी थी. एक जालिम गंज चौकी पर १९ अगस्त को, १ पं० काशीनाथ मिश्र के मकान पर और १ बंदूक १९ अगस्त को गड़वार में मिली थी। नरही में १ बंदूक और १ रिवाल्वर २१ अगस्त को मिले थे। इसके अतिरिक्त २ रिवाल्वर (१ गड़वार में और १ बलिया में) भी मिल चुके थे। यद्यपि आवश्यकता पड़ने पर इनका सामूहिक रूप से उपयोग हो सकता था किन्तु केवल इतना ही हथियार काफी नहीं था। जिले के अन्दर प्रायः प्रत्येक रईस के पास बंदूक थी किन्तु दो-चार को छोड़ कर (जिन्होंने जरूरत पड़ने पर अपनी बंदूकें दीं) शेष सब के सब बुरी तरह डरते थे और बंदूक मांगने पर कांप उठते थे।

२३ को सवेरे बलिया में जब से फौज आई इधर-उधर गोलियां फिर बरसने लगीं। आया हुआ अधिकार हाथ से जाता

दिखाई देने लगा। नवयुवकों के सामने जीवन मरण का प्रश्न था पहले छीने हुये हथियार एकत्र किये गये और फिर वे नये हथियार की तलाश में चले।

बलिया से लगभग ८ मील उत्तर पूरब छाता गांव में मि० अब्दुल सत्तार के पास दो बंदूकें थीं। इकट्ठे दो बंदूकों के लिये उनके मकान पर २३-२४ अगस्त वाली रात को लगभग २०० नवयुवकों ने धावा किया। मि० सत्तार को लोगों ने पकड़ा और कहा कि हम आपकी बंदूक और कारतूस लेने आये हैं, दे दीजिये। उन्होंने आना कानी की, इस पर लोगों ने उन्हें रस्सी में बांधा। बाद को वे बंदूक देने पर राजी हो गये। उन्हें पकड़ कर लोग उनके मकान के भीतर ले गये। वहां जाकर उन्होंने दोनों बंदूकें बलवाइयों के सुपुर्द कर दीं।

मि० अब्दुल सत्तार ने १ फरवरी १९४४ को अदालत में बयान देते हुये कहा:—

आज से १८ महीना का वाकिया हुआ, ९ बजे रात का वक्त था। मेरे यहां करीब ३०० आदमी आये। मैं अपने मकान के बाहर सोया हुआ था। उन लोगों ने मुझे बांध दिया। मजमा के लोगों ने कहा कि बंदूक व ताला चाभी दे दो। तब मुझे खोल कर मकान के अन्दर घसीट कर लोग ले गये। एक मेरी बंदूक थी और एक रफीउद्दीन की थी। सूरज पाठक, महेश सिंह अन्दर मकान के थे और लोगों में परशुराम सिंह, मंगल सिंह, मानी सिंह, किसुन देव कमकर, मथुरा भर वगैरह थे।

२५-२६ अगस्त वाली रात में भरसौता गांव में शिव बालक सिंह के मकान पर छापा पड़ा। उनके घर में

भरसौता में

एक बंदूक थी। वे स्वयं फौज के पेंशनयाफ्ता सूबेदार थे। उसी गांव में [illegible]

प्रसाद के पास भी एक बंदूक थी। लगभग ३० नवयुवक आधी रात को यहां आये। शिवबालक सिंह को जगा कर उनसे बंदूक मांगी किन्तु वे थे फौज के आदमी। उन्होंने कहा बंदूक लाये देता हूँ। इतना कह के वे बंदूक लेकर खड़े हो गये। धड़ाधड़ ४ फायर दाग दिया। सौभाग्य से कोई मरा नहीं। नवयुवकों ने उन्हें पकड़ा और बंदूक छीन ली। राय साहब माधो प्रसाद की बंदूक आसानी से हाथ लग गई। ये बंदूकें लेकर नवयुवक आगे बढ़े और सिंहाकुंड गांव पर आये।‡

सिंहाकुंड में डकैती

२५-२६ अगस्त की रात को लगभग २ बजे बंदूक लूटने की गरज से लगभग ३० नवयुवकों ने सिंहाकुंड में पं० राम नगीना तिवारी के मकान पर आक्रमण किया। उनके भाई श्री बैज नन्दन तिवारी गांव के मुखिया थे जो अपने को पुलिस विभाग का अवैतनिक कर्मचारी समझते थे। श्री राम नगीना तिवारी और बैजनन्दन तिवारी के पास एक-एक बंदूक थी।

---

‡ I am a pensioner military Subedar. I was sleeping at my door in the night of 25/26 August 1912. At 2 a. m., 20-25 dacoits armed with lathis spears and guns raided my house. They raided the house of Rai Saheb Madho Prasad also. I fired several shots. Four or five dacoits caught hold of me from behinde and twisting my hand they snatched my gun by force. I and the servants of Rai Saheb raised an alarm. People of the village assembled there. All the dacoits ran away taking my gun and the gun of Rai Saheb with them.

Sheobalak Singh.
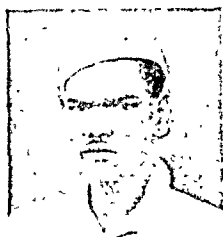
श्री रामनाथ [बलिया]
पृ० १५२

श्री गयाप्रसाद सिंह [देवढ़ी] का जला हुआ मकान
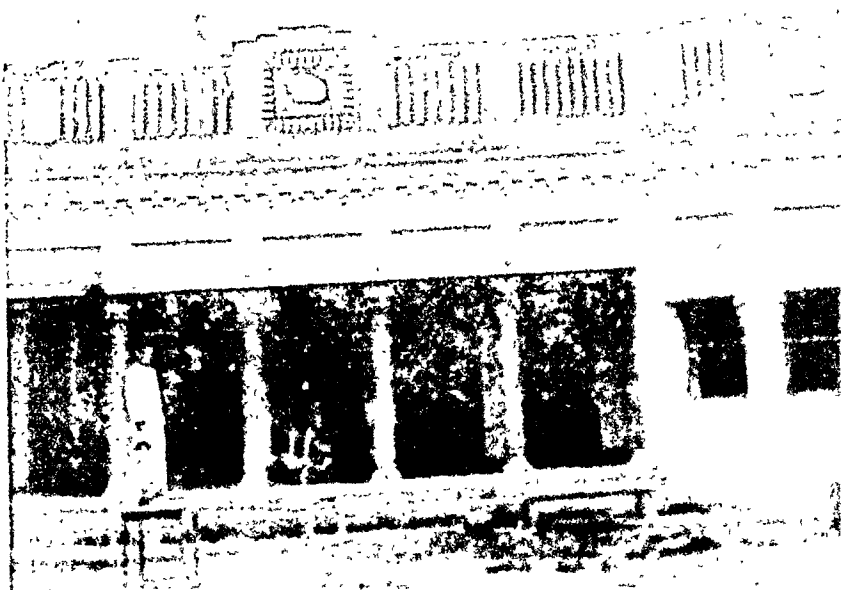
श्री रामनाथ का जला हुआ मकान

राम नगीना तिवारी के मकान के पास मक्के का खेत था जिसमें करीब ५-६ फीट ऊँची फसल लगी थी। इसी रास्ते से नवयुवक 'इनकलाब जिन्दाबाद' का नारा लगाते हुये एकाएक उनके दर्वाजे पर आये। आते ही ४.५ बार बंदूक की खाली आवाजें की।

आक्रमण कारियों को पता था कि बाहर बरामदे में जो संदूक रखी हुई है, उसी में बंदूकें बन्द हैं। उन्होंने संदूक को तोड़ दिया। उसमें एक बंदूक मिली। संदूक के अन्दर और कौन-कौन सी चीजें हैं, उन्हें देखने की भी किसी ने चिंता नहीं की। वे वहां से हट ही रहे थे कि गांव के सैकड़ों आदमियों ने उन्हें आ घेरा। उनके हाथ में लाठियां थीं। आते ही उन लोगों ने डाकू समझ कर लाठियां चलानी शुरू कीं। नवयुवकों ने कहा हम कांग्रेसी हैं, केवल बंदूक लूटने आये हैं। हमारे हाथ पचीसों बंदूकें आ चुकी हैं, कुछ और मिल जाने पर हम बलिया में आई हुई फौज से मोर्चा लेंगे। गांव वालों ने एक न सुनी। उन्होंने हुल्लर राय और रामनाथ बरई को पकड़ लिया। उनके साथ एक बंदूक भी पकड़ी गई। बाकी नवयुवकों में से कुछ तो पास वाले मक्के के खेत में छिप रहे और कुछ वहां से चले गये। मक्के के खेत में जो छिपे थे उनके पास ३ बंदूकें थीं और ३१ कारतूसें। एक ने गांव वालों को संबोधित करके कहा कि हट जाओ नहीं तो हम फायर करते हैं। हुल्लर राय और रामनाथ ने ऐसा करने से मना किया। उन्होंने कहा अपने भाइयों पर हथियार उठाना कायरता है। मामले को बिगड़ते देख कर थोड़ी देर बाद खेत से फिर आवाज आई कि हम अब जरूर गोली छोड़ेंगे, वरना बंदियों को छोड़ दो, किन्तु बंदियों ने शपथ दिलाई और कहा कि किसी की भी जान जायेगी तो वह कांग्रेस और देश के नाम पर कलंक होगा। गांव वालों

की हिम्मत बढ़ गई। उन्होंने पकड़े हुये नवयुवकों को वरामदे के खंभे में बांधा फिर लगभग ३०० आदमियों ने मक्के के खेत को चारों ओर से घेर लिया। दूसरे दिन सवेरे उस खेत में ६ अन्य नवयुवक पकड़े गये। उनके साथ-साथ ३ बंदूकें और ३१ कारतूसें भी मिलीं। सब लोगों को पकड़ कर खंभे से बांध दिया गया।

छट्टू मिश्र ने २६ अगस्त १९४२ को कोतवाली बलिया में निम्नलिखित रिपोर्ट लिखवाई:—

कल रात को राम नगीना तिवारी सा० सिंहा कुंड थाना सहतवार के घर पर ३०-४० आदमी बंदूक, लाठी, बल्लम लेकर २ बजे रात को डाका डालने आये। ३-४ फायर बंदूक का किया। हम लोगों ने और गांव के आदमियों ने डाकुओं का मुकाबला किया और चार डाकू और एक बंदूक मकान के दर्वाजे पर पकड़ लिया। बाकी डाकू भाग कर जनेरा के खेत में चले गये थे। रात भर खेत घेरे रहे। सवेरं ६ डाकू उस खेत में पकड़े और ३ बंदूकें टोपीदार उसी खेत में और कारतूस व एक पानी का बोतल उन्हीं डाकुओं के पास मिला और एक बंदूक का बक्स उसी जनेरा के खेत में मिला और एक अंगरेजी टोपी जो डाकू पहने थे मिल गई। डाकुओं में हुल्लर राय भरसोंता, शंकराचार्य अगरौली, परमेश्वर सिंह दौनी, श्रीनाथ सिंह दौनी, शिव टहल राम, सुदामा सिंह दौनी, रामचन्द्र कुँवर, शिवनाथ ओझा हल्दी, राम भजन पांडे बांसडीह, रामनाथ बरई बलिया ने पता नाम बतलाया है। जो भाग गये हैं उनमें से केदार, परमा, देवनाथ साकिन सिंहाकुंड और चन्द्र दीप राय बादिलपुर को हम लोगों ने पहचाना और देखे हुये हैं। डाकुओं को अपने दरवाजे पर गांव वालों की सुपुर्दगी में छोड़ कर आपके पास आये हैं। बगरी सिंह साकिन भरसोता

हमारे दरवाजे पर सबेरे आये। वे कहते थे कि बंदूक हमारी है, दे दो। हमने नहीं दिया।†

२६ अगस्त को देहात में शोर मच गया कि रामनगीना तिवारी के दरवाजे पर कांग्रेसी गिरफ्तार किये गये हैं। बस क्या था लगभग ४०० आदमी देहात से आये और इन बंदियों को छुड़ा ले गये। गांव वालों ने लाख विरोध किया किन्तु उनकी एक न चली।

बलिया के कोतवाल मि० नादिर अली खां ने अपनी रिपोर्ट में लिखाः—

यह तहरीर मुझको २६ अगस्त ४२ ई० ५ बजे शाम को राम नगीना तिवारी सा० सिंहाकुंड व छट्ठू मिसिर सा० मुहम्मद पुर ने दी है। लाइन से कुछ गारद लेकर सिंहा कुंड गया। वहां पहुंच कर मालूम हुआ कि मुलजिमान मुंदर्जा तहरीर को ४-५ बजे शाम को मुलजिमान के मददगारान १००-१५० की तादाद में आकर छुड़ा ले गये हैं। मैं ४ अदद बंदूक व एक बक्स बन्दूक व कारतूस का और फौजी बोतल पानी की जो मिली रवाना करता हूँ। ३१ अदद सरकारी राइफिल के कारतूस थे, वह लाइन में दे दी हैं।

यदि नवयुवक चाहते तो ४ बंदूकों और अपनी कारतूसों से रात ही रात सारे गांव वालों को भून देते और गिरफ्तार न होते। ४ आदमियों के गिरफ्तार हो जाने पर भी मदरसे के खेत में पड़े हुये नवयुवक यदि चाहते तो वे भी १०, २० लाशें गिरा कर अपने साथियों को छीन ले जाते। किन्तु ऐसा करना सिद्धान्त के प्रतिकूल था। देहात के लोग सिंहाकुंड वालों की लाठी

*डायरी कोतवाली बलिया २६ अगस्त १९४२।

का जवाब जब लाठी से देने आये तो उनकी आँख खुली। लाचार होकर सारे बंदियों को छोड़ना ही पड़ा।

शाम को करीब ७ बजे जब नादिर अली खां सशस्त्र सिपाहियों को लेकर मारे हुये शिकार को फिर से मारने आये तो उन्हें पता चला कि वे उनकी पहुँच के बाहर हैं।

घटनाओं के पूर्वापर क्रम का विचार थोड़ी देर तक छोड़ कर हमने परिस्थितियों के अनुकूल क्रान्तिकारियों की परिवर्तित मनोवृत्ति का परिचय दिया है। यों तो प्रायः १६ अगस्त तक सारे जिले पर से सरकारी राज उठ चुका था किन्तु जिले के सदर मुकाम पर सरकार की कुछ-कुछ सत्ता बची हुई थी। कांग्रेसी वन्दी जेल में थे, खजाने पर ताला लगा था और मैगजीन पर सरकारी कब्जा था। बलिया कस्बे में किस प्रकार क्रान्ति का क्रमिक विकास हुआ तथा वहां से नौकरशाही के अवशेष चिह्न को कैसे मिटाया गया, इसका विवरण आगे के कुछ पृष्ठों में दिया जायगा।

बलिया शहर— अंतिम मोर्चा

खास बलिया शहर में १५ अगस्त तक कोई विध्वंसकारी घटना नहीं हुई। १४ अगस्त को शहर से थोड़ा हट कर श्री प्रद्युम्न मिश्र के निवास स्थान पर शहर के कार्य कर्ताओं की बैठक हुई। किन्तु उसमें घंटों की बक झक के बाद भी कुछ तय न हुआ।

१५ अगस्त को जो ट्रेन बनारस से आई उस पर कालेजों के कई विद्यार्थी थे। उनमें से लगभग ७. ८ विद्यार्थी बलिया पुलिस द्वारा स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिये गये। गाड़ी क्या थी, बिलकुल अपनी सवारी थी, जो जहां चाहता चढ़ता और जहां चाहता उतरता था। बलिया स्टेशन पर श्री गङ्गाप्रसाद गुप्त ने उस पर एक तिरंगा झंडा लगा दिया।

लगभग १॥, २ सौ आदमियों ने १५ अगस्त को एकाएक वलिया जहाजघाटके स्टेशन पर आक्रमण किया।

जहाजघाट

वहां जो कुछ भी जहाज कंपनी का सामान था इकट्ठा करके फूंक दिया गया।

१५ अगस्त को ही वलिया के शहर वाले डाकखाने पर आक्रमण हुआ। एक जुलूस जिसमें बहुत से

सिटी पोस्ट आफिस

विद्यार्थी और लड़कियां थीं, तिरंगा झंडा लिए हुये पोस्ट आफिस पर चढ़ आया। डाकखाने वालों ने जुलूस के नेताओं से पूछा—आप क्या चाहते हैं? उत्तर मिला—हम पोस्ट आफिस पर तिरंगा झंडा फहरायेंगे। अब यह पोस्ट आफिस कांग्रेस का है। झंडा फहरा दिया गया। इसके बाद पोस्ट मास्टर से कागजात मांगे गये। कागजात मिल गये। जुलूस ने उनमें आग लगा दी और फिर कर्मचारियों से कहा जब तक हमारा हुक्म न होगा कोई डाक न आयेगी न जायेगी।

जुलूस दो भागों में बँट गया। कुछ लोग तो मालगोदाम की ओर बढ़े और कुछ लोग जिला कांग्रेस कमेटी

मालगोदाम

के दफ्तर पर आये। जुलूस ने मालगोदाम को रौंद डाला। रेलवे कर्मचारियों ने जुलूस को देखते ही अपना रास्ता पकड़ा। रेलवे के कुली और पल्लेदार जुलूस में शामिल हो गये। मालगोदाम पर खुल कर लूट हुई, और लूटी जाने वाली चीजों में विशेष प्रिय थे जूते। हजारों जोड़े जूते रक्खे पड़े थे, उन्हें लोग ले ले कर भागे।

९ अगस्त को कांग्रेस दफ्तर पर पुलिस ने ताला भर दिया था। लगभग ५०० आदमियों का जुलूस

कांग्रेस दफ्तर

जिला कांग्रेस कमेटी के दफ्तर पर आया। तिरंगा झंडा पुलिस ने जला डाला था और वहां

४.५ पुलिस के सिपाहियों का पहरा रहा करता था। जुलूस को पहले तो पुलिस वालों ने बहुत रोका, किन्तु जब उसने देखा कि जुलूस का रुख धीरे धीरे उग्र होता जा रहा है तो सब के सब वहां से हट गये। ताला तोड़ दिया गया और इमारत पर फिर राष्ट्रीय झंडा फहराया गया।

पहली बार गोली चली

हफ्तों तक बाजारें बंद रहीं। इससे जनता को कष्ट होता था। १५ अगस्त को जनता की ओर से घोषणा हुई कि १६ अगस्त (रविवार) से बाजार लगा करेगा। उधर जिले के अधिकारियों की ओर से दफा १४४ लागू कर दी गई, जिसके अनुसार सभाओं और जुलूसों की मनाही कर दी गई। बाजार बड़े जोरों में लगा। सरकारी आज्ञा को तोड़ने के लिये मालगोदाम रोड से लड़कियों का जुलूस निकला जिसमें जानकी देवी, मानकी देवी, शान्ती देवी, कान्ती देवी, धूपा देवी, लखरानी देवी, श्यामा सुन्दरी देवी और गायत्री देवी आदि थीं। जुलूस चौक होता हुआ लोहार हट्टी की ओर बढ़ा। इतने में एक पुलिस की मोटर आई जिस पर ठा० रामलगन सिंह तहसीलदार थे। वह मोटर बाजार के बीच से बड़े जोरों में भागी। बहुतेरे रेलपेल में गिर पड़े, बहुतों को चोटें आईं। पुलिस लारी पर से ८, १० बार फायरिंग की भी आवाज आई। कुल ९ आदमी मरे और पचीसों को चोट आई। लड़कियों के जुलूस को पुलिस ने रोका, राष्ट्रीय झंडा छीन कर जला दिया और उनसे जुलूस भंग करने को कहा। लड़कियों ने जुलूस भंग करने से इनकार किया। बल्कि उल्टे उन्होंने राष्ट्रीय नारे लगाये। वे पकड़कर मोटर में बंद की गईं और उन्हें कोतवाली भेज दिया गया। उनसे कहा गया कि तुम लोग माफी मांग कर चली

जाओ किन्तु उन्होंने कोरा जवाब दिया। फिर वे जेल भेज दी गईं। उस रात को न उन्हें खाना दिया गया और न ओढ़ने बिछाने के कपड़े दिये गये। रात भर पानी पड़ता रहा और बैरक के अन्दर टपकता रहा। १७ अगस्त को लड़कियों से फिर माफी मांगने के लिये कहा गया किन्तु वे बिलकुल दृढ़ रहीं। जिले और कस्बे की हालत बिगड़ती गई। गोली कांड और लड़कियों की गिरफ्तारी से स्थानीय अधिकारियों के प्रति घोर असंतोष फैला। १७ अगस्त को संध्या समय जिला मजिस्ट्रेट ने लड़कियों को रिहा कर दिया।

स्टेशन जला

१९ अगस्त को बलिया के कार्यकर्त्ताओं ने रेलवे स्टेशन पर आक्रमण किया। स्टेशन के अंदर सैकड़ों आदमी दाखिल हो गये। स्टेशन के कागजात और टिकट फार्म निकाल कर बरामदे में रखा। कई रोज से गाड़ियों का आना जाना बंद था, अतएव पार्सल वगैरह कम था। फिर भी जो कुछ सामान रेलवे का मिला एकत्र किया गया और आग लगा दी गई। कागजात जले और उनके साथ स्टेशन की इमारत का कुछ हिस्सा भी जला; कोई बागियों को रोकने वाला न था और न जलते हुए स्टेशन पर कोई एक लोटा पानी डालने वाला था।

अधिकारियों पर प्रभाव

१४ अगस्त के बाद से प्रतिदिन जिला अधिकारियों के पास बागियों की विजय का कोई न कोई समाचार अवश्य आता। स्टेशनों, डाकखानों और थानों के पतन के समाचार से जिले के अधिकारियों के होश ठिकाने हो गये। कलेक्टर ने बनारस के अधिकारियों को सशस्त्र सिपाही भेजने के लिये लिखा था किन्तु वे आ न सके। यातायात के मार्गों के नष्ट हो जाने [illegible]

सिपाहियों अथवा सैनिकों का आना संभव भी नहीं प्रतीत होता था।

१६ अगस्त को सवेरे जिला मजिस्ट्रेट श्री जे० निगम और पुलिस कप्तान मि० रियाजुद्दीन अहमद ने नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बुलाया। कलेक्टर के बंगले पर सभा हुई। निश्चय हुआ कि नागरिकों का एक प्रतिनिधि मंडल जेल में बंद प्रमुख नेताओं से विचार विनिमय करें और पता लगावे कि आन्दोलन के प्रति उनके क्या विचार हैं। जिला बोर्ड के सेक्रेटरी पं० श्यामसुन्दर उपाध्याय को यह उत्तरदायित्व दिया गया। आपने जेल में आकर पं० चीनू पांडे, राधा मोहन सिंह और बा० जानकी प्रसाद आदि से भेंट की। बंदियों की ओर से अंतिम उत्तर दिया गया कि यहाँ बैठे बैठे हम बाहर के घटना चक्र का कोई उत्तरदायित्व नहीं लेते।

पं० श्याम सुन्दर उपाध्याय ने, आन्दोलन की जो परिक्रिया बंदियों पर हुई थी, उससे अधिकारियों को अवगत कराया। अधिकारियों की आशंका और भी बढ़ गई और वे अधिक सतर्क हो गये। स्थान-स्थान से पकड़ कर अधिकाधिक बंदी जेल में भरे जाने लगे। उनसे जनता की विद्रोह भावना तथा क्रान्ति की क्रमिक सफलता का समाचार बराबर मिलता रहा। आजादी के दीवाने अनेक नवयुवक भारत माता को मुक्त करने के लिये जेल की सीकचों के बाहर आने को लालायित थे। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के बचे खुचे निशानों को मिटाने का श्रेय सब लेना चाहते थे। कटी हुई पतंग को भला कौन लूटना न चाहेगा! कुछ ऐसे भी लोग थे जो रेलवे स्टेशनों, डाकखानों और थानों पर लगी हुई आग से एक बार हाथ सेंक लेना चाहते थे और जुल्म व सितम के पुतले पुलिस कर्मचारियों का निहत्थी जनता से डर कर बेतहाशा भागने का दृश्य भर आंख देख लेना चाहते थे।

सरकारी कर्मचारियों का बुरा हाल था। वे अपने बँगलों में जा बैठे। जो सरकारी अथवा अर्द्ध सरकारी अफ़सर शहर में रहते थे, डर के मारे अपने बाल-बच्चों के साथ प्रायः १८ अगस्त को पुलिस लाइन में आ बसे।

समझौते की वार्ता

नागरिकों के प्रतिनिधि-मंडल के बाद अफ़सरों ने बारी-बारी जेल में बन्द नेताओं से भेंट की। १६ अगस्त को हाकिम परगना बलिया मि० ओवेंस ने ठा० राधा मोहन सिंह से बातें कीं। इसी तारीख को शहर कोतवाल मि० नादिर अली ने जेल में जाकर ठा० राधा मोहन सिंह से बातें कीं और उनसे आन्दोलन के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करनी चाही। ठाकुर साहब ने बताया कि हमारा यह प्रोग्राम है कि हम पंचायती राज कायम करें और पुलिस तथा सरकारी कर्मचारियों से कहें कि वे पंचायती हुकूमत मान जांय। यह आन्दोलन व्यापक होगा। धीरे धीरे सारे हिन्दुस्तान में पंचायती हुकूमत कायम होगी। अगर सरकारी नौकर पंचायती हुकूमत नहीं मान लें तो पंचायती सरकार उन्हें गिरफ़्तार करेगी।

बलिया के कोतवाल ने इस भेंट की चर्चा करते हुये लिखा:—

मुझसे १६ अगस्त १९४२ ई० को राधा मोहन सिंह से बात चीत जेल में हुई थी और उस वक्त उन्होंने मुझसे कहा था कि कांग्रेस का प्रोग्राम उनके पास ४ अगस्त को आ गया था। उसमें Power capture (शक्ति की प्राप्ति) करना भी शामिल है। यह हमारा प्रोग्राम है कि हम पुलिस और मुलाजिमान सरकारी के पास जाकर पूछें कि वे सरकार के नौकर हैं या पब्लिक के। अगर वे कहें कि गवर्नमेंट के नौकर हैं तो उनको कैद कर लें। अगर वे कहें कि पब्लिक के मुलाजिम हैं तो उनको पंचायती हुकूमत के

अह्काम मनवाये। इस तरह एक एक जिला ले लें और पंचायती हुकूमत कायम करते जावें।‡

१७ अगस्त को जिला मजिस्ट्रेट और पुलिस कप्तान ठा० राधा मोहन सिंह से मिले। ठाकुर साहब ने उनसे भी कहा कि कांग्रेसी पंचायती सरकार बनायेंगी और आप को पंचायती सरकार से आदेश मिलेंगे। जिला मजिस्ट्रेट ने कहा कि ऐसा होने पर आप की फांसी होगी और मेरा सत्यानाश हो जायगा।*

'क्रान्ति में यही सब होता है' ठाकुर साहब ने कहा।

जिला मजिस्ट्रेट चलते समय कह गये, २ दिन के बाद में फिर मिलूंगा।

१८ अगस्त को जिला मजिस्ट्रेट ने सरकारी अफसरों और बलिया के प्रमुख नागरिकों की फिर सभा थी। सारी स्थिति का अवलोकन करते हुये जिला मजिस्ट्रेट को राय दी गई कि वे नेताओं को छोड़ दें। उनसे यह शर्त रखें कि वे जा कर शान्ति स्थापित करें और जनता को उपद्रव करने से रोकें।

किन्तु जिला मजिस्ट्रेट हिम्मत हारने वाले न थे। १८ अगस्त को उन्होंने ठा० रामलगन सिंह तहसीलदार को एक संदेश के साथ बनारसके कमिश्नर के पास भेजा। स्थिति का परिचय देते हुये कमिश्नर से अतिरिक्त पुलिस तथा फौज थी मांग की कई।

तहसीलदार बनारस भेजा गया

उन्हें रायबहादुर पं० काशीनाथ मिश्र की कार दी गई और हिफ़ाजत के लिये १ रिवालवर, १ बंदूक, १४ कारतूस और २ चपरासी दिये गये।

---

‡ डायरी कोतवाली।

* "In so doing you will be hanged and I will be sacked"

ठा० राम लगन सिंह ने २६ नवम्बर १९४३ को मि० ओ० पी० गुप्ता डिप्टी कलेक्टर के सामने बयान दिया :—

मैं तहसीलदार बलिया १७ अगस्त सन ४२ तक था। बतारीख १८ अगस्त सन १९४२ व उसके बाद मैं डिप्टी कलेक्टर बलिया मुकर्रर हुआ। १८ अगस्त सन ४२ को जनाब निगम साहब बहादुर कलेक्टर ने मुझे message S. O. S. (रक्षा के लिये अंतिम संदेश—लेखक) दिया जिसे लेकर कमिश्नर साहब बहादुर को दिया। मैं १८ अगस्त सन ४२ को बलिया सुबह जरिये कार पं० काशीनाथ साहब मिश्र रायबहादुर रवाना हुआ। एक रिवाल्वर मय ३६ कारतूस के मुझे दिया गया कि मैं अपनी हिफाजत कर सकूँ। इसके अलावा मेरे पास मेरी अपनी बन्दूक और १४ कारतूस रही।

क्रान्ति उत्तरोत्तर सफल होती जा रही थी। जिले भर से सरकारी अमलदारी उठ चुकी थी। १८ को बैरिया में पचासों नौजवान राष्ट्रीय झंडे की शान के लिये शहीद हो चुके थे। बांसडीह का खजाना लूटा जा चुका था। जिले के सारे स्टेशन जल चुके थे। थाने या तो जला डाले गये थे अथवा वे पंचायती सरकार मान चुके थे।

१९ अगस्त को उत्तेजित जनता ने जिले के अन्य स्थानों पर कब्जा करके बलिया शहर से ब्रिटिश सत्ता के बचे खुचे चिन्ह को मिटा देने के लिये चारों ओर से आक्रमण किया। कुल चार सड़कें नगर की ओर आती हैं उन सब पर भीड़ उमड़ी आ रही थी। जिले के अधिकारियों के होश ठिकाने न रह गये। उन्होंने प्रमुख नागरिकों को फिर बुलाया। इस बार केवल पं० मदन सुन्दर उपाध्याय और खां बहादुर नजीरुद्दीन (अब सरकारी वकील) जिला मजिस्ट्रेट के बंगले पर गये। जिला मजिस्ट्रेट

तथा पुलिस कप्तान से बात चीत होने लगी। क्रान्ति अधिक जोर पकड़ती जा रही थी। मुकाबला करने के लिये अब तक सैन्यबल प्राप्त करने की जो आशा थी धीरे धीरे जाती रही। जिला मजिस्ट्रेट ने स्थिति को काबू में लाने के लिये एक अनोखी चाल चली। उपाध्याय जी तथा खां बहादुर साहब के परामर्श से निश्चय हुआ कि पं० चीतू पांडे और बाबू राधा मोहन सिंह तत्काल रिहा कर दिये जाय। बा० जानकी प्रसाद की धर्म पत्नी सख्त बीमार थीं, उनकी हालत खराब हो चली थी। उनकी ओर से पेरोल की दरख्वास्त पड़ी थी, उसे भी जिला मजिस्ट्रेट ने मंजूर कर लिया। रिहाई का यह फरमान अभी सुनाया भी नहीं गया था कि एक पुलिस कांन्टेबिल वहां दौड़ा हुआ आया और बतलाया कि बांसडीह वाली सड़क से लगभग ३० हजार आदमी अस्त्र शस्त्र लिये आ रहे हैं। १० मिनट के बाद एक दूसरा सिपाही दौड़ा हुआ आया, उसने बताया कि सिंकदर पुर वाली सड़क से २० हजार आदमी कस्बे की ओर बढ़े आ रहे हैं। उनका पहला आक्रमण जेल पर होगा। उसके बाद खजाने और कचहरी पर धावा करेंगे। जिला मजिस्ट्रेंट और पुलिस कप्तान का रुख उस वक्त देखने लायक था। जिला मजिस्ट्रेंट ने लड़खड़ाती हुई जबान में किन्तु गंभीर मुद्रा से कहा अब हम प्रत्येक राजनीतिक बंदी को रिहा कर देंगे। एक एक मिनट पर संकट निकट आ रहा था। वे स्वयं पुलिस कप्तान के साथ जेल पर आये और जेलर को अपना आदेश दिया। उन्होंने पं० चीतू पांडे तथा बा० राधा मोहन सिंह आदि से भेंट की और कहा कि मैं आपको इस शर्त पर छोड़ रहा हूँ कि आप उमड़ते हुए जन समूह को समझा बुझा कर वापस लौटा दें। बंदियों की ओर से कहा गया कि हम इसका वादा नहीं कर सकते। जिला मजिस्ट्रेट ने कहा कि कम

से कम आप जेल, खजाना और जान माल की जिम्मेदारी तो ले सकते हैं। बंदियों ने कहा कि आपके जान माल की हिफाजत तो हम कर लेंगे, किन्तु अन्य बातों का वादा हम नहीं करते. हमें नहीं मालूम गाँधी जी के आदेश क्या हैं। लाचार होकर जिला मजिस्ट्रेट ने कहा, भीड़ बढ़ती आ रही है, स्थिति आप लोग चाहें तो संभाल सकते हैं। आप बाहर जाँय, भीड़ को रोकें, और शान्ति स्थापित करें। सारा उत्तरदायित्व अब आपका है, मुझसे कुछ मतलब नहीं रहा। पं० चीतू पांडे ने जिला मजिस्ट्रेट को आश्वासन दिया कि हम शान्ति स्थापित करने की कोशिश करेंगे। आप अपने बँगले में जाकर आराम कीजिये। जेल का फाटक खुला और मिनटों में सारे राजबंदी बाहर निकल आये। आते ही उन्होंने इनकलाब के नारे लगाये। चारों ओर से आने वाली भीड़ के युद्ध घोष और बीच में जेल से मुक्त बंदियों के विजय घोष से वायुमंडल प्रतिध्वनित हो उठा।

बलिया के कोतवाल ने रिपोर्ट में लिखा:—१८ अगस्त १९४२ को बाँसडीह पर थाना तहसील व खजाना लूट जाने की खबर ने कांग्रेसी बागियों के मनसूबे में चार चाँद लगा दिये। उन्होंने मुन्तजिम होकर सदर के ऊपर हमला करने की पूरी तैयारी कर दी। १९ अगस्त १९४२ ई० को दोपहर में हुक्काम को खबर मिली कि सिकंदर पुर रोड पर और दोस्तपुर रोड पर आदमियों का हमला हो रहा है और आज जेल, कोतवाली और खजाना सदर पर हमला होगा। जुमला लीडरान कांग्रेसी याने चीतू पांडे, राधामोहन सिंह, राधा गोविन्द सिंह, राम अनन्त मुख्तार, महानन्द मिश्र मय जुमला दीगर मुलजिमान के जो इन तारीफ के सिलसिले में इस वक्त तक गिरफ्तार होकर जेल में [illegible] कर दिये गये और यह नह

बशकल जुलूस शहर चले गये। पुलिस को अफसरान वाला ने हिदायत दी कि ये मुलिजमान वगरज मुसालहत छोड़े गये हैं। उनके मामलात और हरकात में दखल न दिया जावे। बाद एक मजमा में अनकरीब तखमीनन २-२॥ हजार आदमी लाठियाँ लिये थे। बाँसडीह सड़क की जानिब से कोतवाली की पूरब वाली सड़क पर आगया। कोतवाली के पुश्त पर बढ़ कर उस मजमा को आगे बढ़ने से रोक दिया और अफसरान वाला को जो लाइन में मौजूद थे खबर दी। मजमा जोश पर था और बाकायदा काँधों पर लाठियां रखे तीन तीन की कतार में था।‡

जेल से निकलने पर नेताओं ने दूसरी ही दुनिया देखी। लगभग ६० हजार अदमियों की भीड़ बलिया जैसे छोटे कस्बे के अन्दर दाखिल हो चुकी थी। टाउन हाल में सभा हुई। पं० राम अनन्त पांडे, राधा मोहन सिंह, राधा गोविन्द सिंह और विश्व नाथ चौबे आदि के भाषण हुये। वक्ताओं ने बागियों का रुख देखकर समझ लिया कि उबलते हुये जोश को दबाना असंभव है। इसी बीच जिला मजिस्ट्रेट मि० निगम पं० चीतू पांडे को टाउन हाल के फाटक के पास लाकर छोड़ गये। पं० चीतू पांडे ने लोगों को मना किया और कहा कि विध्वंस कारी कार्यक्रम छोड़ दीजिये। थोड़े से लोगों ने उनका कहना माना और वे घर चले गये, किन्तु अधिकतर लोगों ने केवल हँसी उड़ाई।

सभा से उठकर नेता लोग परामर्श के लिये बा० शिव प्रसाद की कोठी में एकत्र हुए। उधर से ४-५ नवयुवक वापस आये। उन्होंने एकत्र जनता में जोश भरा और फिर कहा कि नेताओं से

---

‡पुलिस डायरी कोतवाली बलिया।